जहन्नम का बयान

मो० इक़बाल कीलानी

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.
مکتبہ الفہیم
مئوناتھ بھنجن یوپی

Www.IslamicBooks.Website

जहन्नम का ब्यान

मो० इकबाल कीलानी

مکتبۃ الفہیم
مئوناتھ بھنجن یوپی
MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email : maktabaalfaheemmau@gmail.com
WWW.faheembooks.com

Www.IslamicBooks.Website

जुमला हक़ूक महफ़ूज़ हैं

पुस्तक का नाम	:	**जहन्नम का ब्यान**
लेखक	:	मो० इकबाल कीलानी
अनुवाद	:	फहद खुरशीद
प्रकाशन वर्ष	:	October 2012
कम्पोज़	:	अलफहीम कम्प्यूटर
पेज	:	264
प्रकाशक	:	मकतबा अलफहीम मऊ

مکتبہ الفہیم
مئوناتھ بھنجن یوپی

MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email : maktabaalfaheemmau@gmail.com
WWW.faheembooks.com

Www.IslamicBooks.Website

विषय-सूची

☆ यह है वह आग जिसे तुम झुठलाया करते थे ६
☆ बिस्मिल्लाहहिर्रहमानिर्रहीम ६
☆ जहन्नम के वजूद का सबूत ६२
☆ जहन्नम के दरवाज़े ६४
☆ जहन्नम के दरजात ६५
☆ जहन्नम की व्यापकता ७०
☆ जहन्नम के अज़ाब की हौलनाकी ७४
☆ जहन्नम की आग की सख्ती ८०
☆ जहन्नम का सबसे हल्का अज़ाब ८७
☆ जहन्नमियों का हाल ८६
☆ जहन्नम वालों का खाना पीना ६४
☆ सख्त प्यास का अज़ाब १०५
☆ खौलता हुआ पानी सर पर उंडेलने का अज़ाब १०६
☆ जहन्नमियों का लिबास १०८
☆ जहन्नमियों के बिस्तर ११०
☆ जहन्नमियों की छतरियां और कनातें ११२
☆ आग के तौक, आग की हथकड़ियां और आग की बेड़ियों का अज़ाब ११३
☆ आग की तंग व अंधेरी कोठरियों में ठूंसने का अज़ाब ११५

Www.IslamicBooks.Website

☆ चेहरों को आग पर तपाने का अज़ाब ११७
☆ सख्त ज़हरीली गर्म हवा और सख्त काले ज़हरीले धुएं का अज़ाब १२०
☆ सख्त सर्दी का अज़ाब १२१
☆ जहन्नम में ज़िल्लत और रूसवाई का अज़ाब १२३
☆ जहन्नम में सख्त अंधेरे और तारीकी का अज़ाब १२६
☆ मुंह के बल चलाए जाने और घसीटे जाने का अज़ाब १२८
☆ आग के पहाड़ पर चढ़ाने का अज़ाब १३१
☆ आग के खम्बों से बांधने का अज़ाब १३२
☆ जहन्नम में लोहे के हाथैड़ों और गुरूज़ों से मारे जाने का अज़ाब १३३
☆ जहन्नम में सांपों और बिच्छुओं का अज़ाब १३५
☆ जिस्मों को बड़ा करने का अज़ाब १३७
☆ कुछ नामालूम अज़ाब १४१
☆ जहन्नम में कुछ गुनाहों के खास अज़ाब १४३
☆ जहन्नमियों पर कुरआन मजीद की आलोचना १५३
☆ जहन्नम में गुमराह आलिमों, पीरों और उनके मानने वालों के झगड़े १५६
☆ शिक्षाप्रद संवाद १६०
☆ नाकाम हसरतें १७०
☆ जहन्नमियों का एक और मौका मिलने की ख्वाहिश? १७६
☆ इबलीस जहन्नम में १८६
☆ अतीत की याद १८८
☆ जहन्नम में ले जाने वाले आमाल दिल फरेब हैं १८६
☆ मानव जाति में से जहन्नमियों और जन्नतियों की निसबत १६२

Www.IslamicBooks.Website

☆ जहन्नम में औरतों की कसरत १६५
☆ आग की खुशखबरी पाने वाले १६६
☆ हमेशा-हमेशा के लिए जहन्नम में जाने वाले लोग २०२
☆ कुछ मुद्दत के लिए जहन्नन में जाने वाले लोग २०४
☆ जहन्नम की बातचीत २२२
☆ अपने आपको और अपने घरवालों को जहन्नम की आग से बचाओ २२४
☆ जहन्नम और फरिश्ते २३२
☆ जहन्नम और अम्बिया किराम (अलैहिस्सलाम) २३४
☆ जहन्नम और सहाबा किराम रज़ि० २३८
☆ जहन्नम और पूर्वज २४५
☆ चिंता का विषय २५२
☆ आग के अज़ाब से पनाह मांगने की दुआ २५५
☆ विभिन्न मसाइल २६०
☆ हमारी दावत यह है कि २६४

Www.IslamicBooks.Website

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِی کُنتُم بِهَا تُکَذِّبُونَ

यह है वह आग जिसे तुम झुठलाया करते थे

ऐ दुनिया भर के लोगो!

मेरी बात ज़रा गौर से सुनो,

यह चौदह सौ साल पहले की बात है :

गैब की खबरें लाने और बताने वालों में से एक, जो अपने शहर के लोगों में सादिक और अमीन के लकब से मशहूर था, यह खबर लाया कि!

"मैंने आग देखी है।"

जहन्नम की आग, दहकती हुई, भड़कती हुई,

शोले उगलती हुई और जिस्म व जान से चिमट जाने वाली आग!

दुनिया की आग से ६९ दर्जे ज़्यादा गर्म!

और उसमें दाखिल होने वालों के लिए

आग के लिबास हैं, आग के बिस्तर हैं, आग के सायबान हैं, आग की छतरियां हैं, आग की भारी बेड़ियां और आग की बोझाल ज़ंजीरें हैं, आग में तपाए और दहकाए हुए लोहे के करोड़ों टन वज़नी हथौड़े और गुरूज़ हैं, आग में तपाई हुई तख्तियां हैं।

आग में पैदा होने वाले ज़हरीले सांप, ऊंट के बराबर।

आग में पैदा होने वाले ज़हरीले बिच्छू, खच्चरों के बराबर।

आग में पैदा होने वाला ज़हरीला कांटेदार थूहर का पेड़ खाने के लिए

Www.IslamicBooks.Website

और खैलता हुआ पानी, बदबूदार ज़हरीला पीप और खून पीने के लिए।

लोगो! गैब की खबरें लाने वाला और अपनी आंखों से आग को देखने वाला बार बार पुकात रहा है ज़रा कान लगाकर सुनो।

انذر تكم النار، انذرتكم النار (دارمی)

लोगो! मैंने तुम्हें आग से डरा दिया है, लोगो! मैंने तुम्हें आग से डरा दिया है। (दारमी)

اتقواالنار و لو بشق تمرة (بخاری و مسلم)

लोगो! आग से बचो, चाहे खजूर का एक टुकड़ा ही देकर।

(बुखारी व मुस्लिम)

ऐ दाना व बीना लोगो!

ऐ होश व गोश रखने वालो।

एक-एक, दो-दो और तीन-तीन सर जोड़ कर बैठो और सोचो.....!

या तो खबर लाने वाले की खबर झूठी है या सच्ची,

अगर झूठी है तो झूठ का वबाल खबर लाने वाले पर होगा और तुम्हारा कुछ भी नुक्सान नहीं होगा।

लेकिन.....!

अगर यह खबर सच्ची हुई तो फिर.....?

ऐ आग को झुठलाने वालो!

ऐ आग का मज़ाक और उपहास उड़ाने वालो!

ऐ आग के बारे में भ्रम में पड़ने वालो!

ऐ आग पर ईमान रखने के बावजूद गफलत में पड़ने वालो!

जब वह आग सामने भड़क रही होगी और खबर लाने वाला कह रहा

Www.IslamicBooks.Website

होगाः

هَذِهِ النَّارُ الَّتِى كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ (14:52)

"देखो! यह है वह आग जिसे तुम लोग झुठलाया करते थे।"

(सूरह तूरः १४)

तो फिर.........!

तुम्हारे पास क्या जवाब होगा इसका?

कहीं भाग जाओगे?

कहीं पनाह पाओगे?

किसी "मुश्किल कुशा" को बुलाओगे?

किसी "हाजत रवा को ले आओगे?

उस दहकती और शोले उगलती आग में जलना कबूल कर लोगे?

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ (15:77)

"तबाही होगी उस रोज़ झुठलाने वालों के लिए।" (सूरह मुरसलात)

Www.IslamicBooks.Website

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمدلله رب العالمين والصلاة والسلام على رسوله الكريم والعاقبة للمتقين
امابعد!

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमी-न वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिहिल करीम, वल आकि-ब तु लिल मुत्तकीन० अम्मा बाद!

जहन्नम- बहुत ही बुरी कयामगाह, बहुत ही बुरा मस्कन और बहुत ही बुरा ठिकाना है जिसे अल्लाह तआला ने काफिरों, मुश्रिकों और फासिकों व फाजिरों के लिए तैयार कर रखा है।

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में जन्नत और जहन्नम दोनों का बार-बार बड़ी तफ्सील से ज़िक्र फरमाया है और इन दोनों में से आग और जहन्नम का ज़िक्र निस्बतन ज़्यादा मर्तबा किया गया है शायद इसकी वजह यह हो कि इंसानों की अक्सरियत तर्गीब से ज़्यादा तर्हीब का असर कबूल करती है।

कुरआन मजीद में जहन्नम के बारे में दी गई कुछ तफ्सीलात ये हैं-

१. जहन्नम को देखते ही काफिरों के चेहरे काले सियाह हो जाएंगे।
(सूरह यूनुसः २७)

२. जहन्नमी अज़ाब से तंग आकर मौत तलब करेंगे लेकिन उन्हें मौत नहीं आएगी। (सूरह फुरकानः १३)

३. जहन्नम की आग जहन्नमियों के चेहरे का गोश्त जला डालेगी और उनके जबड़े बाहर निकल आएंगे। (सूरह मोमिनः १-४)

४. जहन्नम की आग न ज़िंदा छोड़ेगी न मरने देगी।
(सूरह आलाः १३)

Www.IslamicBooks.Website

५. जहन्नम की आग लोगों को चकना चूर कर देगी।

(सूरह हु-म-ज़ाः ४)

६. जहन्नम में काफिरों को बन्द करके ऊपर से दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा। (सूरह सूरह हु-म-ज़ाः ८-९)

७. जहन्नम में काफिर फुंकारें मारेंगे (और शोर इस कदर होगा कि) कानों पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देगी। (सूरह अंबियाः १००)

८. जहन्नमियों को थूहर का ज़हरीला कांटेदार और बदबूदार पेड़ खाने के लिए दिया जाएगा। ▯ (सूरह दुखानः ४३)

९. जहन्नमियों के ज़ख्मों से बहने वाला खून, पीप और खौलता हुआ पानी जहन्नमियें को पीने के लिए दिया जाएगा।

(सूरह इब्राहीमः १६-१७)

१०. जहन्नमियों को आग का लिबस पहनाया जाएगा।

(सूरह हजः २०)

११. जहन्नमियों के हाथ और पांव ज़ंजीरों से बांध दिए जाएंगे और आग के शोले उनके चेहरों पर बरसाए जाएंगे।

(सूरह इब्राहीमः ४९-५०)

१२. जहन्नमियों के लिए आग का औढ़ना और आग का बिछौना होगा। (सूरह आराफः ४१)

१३. जहन्नमियों के लिए आग की छतरियां और आग के फर्श होंगे। (सूरह जुमरः १६)

१४. जहन्नमियों के लिए आग की कनातें होंगी।

(सूरह कहफः २९)

Www.IslamicBooks.Website

१५. जहन्नमियों के गर्दनों में (आग के) भारी तौक डाले जाएंगे।

(सूरह हाक्क्हः ३०)

१६. जहन्नमियों के पांव में आग की बेड़ियां डाली जाएंगी।

(सूरह मुज़्ज़म्मिलः १२)

१७. जहन्नमियों को सख्त ज़हरीले गर्म हवा और सख्त ज़हरीले गर्म धुएं का अज़ाब भी दिया जाएगा। (सूरह वाकियाः ४१-४४)

१८. जहन्नम में जहन्नमियों को मुंह के बल घसीटा जाएगा।

(सूरह कमरः ४८)

१९. जहन्नमियों को आग के पहाड़ "सऊद" पर चढ़ने का अज़ाब दिया जाएगा। (सूरह मुद्दसिरः १७)

२०. जहन्नमियों को लोहे के गुरूज़ों और हथौड़ों से मारा जाएगा।

(सूरह हजः १९)

२१. याद रहे कि मज़्कूरा आयतों के हवाले से कुरआनी आयतों का तर्जुमा नहीं बल्कि मफहूम दिया गया है।

कुरआनी आयतों के बाद अब हदीसों में दी गई कुछ तफसीलात देखें..

१. जहन्नम में गिराया गया पत्थर सत्तर साल बाद जहन्नम की तह में पहुंचता है। (मुस्लिम)

२. जहन्नम के एक अहाते की दो दीवारों के बीच चालीस साल की मुसाफत का फासला है। (अबू याला)

३. जहन्नम को मैदाने हश्र में लाने के लिए चार अरब नव्वे करोड़ फरिश्ते मुकर्रर होंगे। (मुस्लिम)

Www.IslamicBooks.Website

४. जहन्नम का सबसे हल्का अज़ाब आग के दो जूते पहनने का होगा। (मुस्लिम)

५. जहन्नमी का एक दाढ़ (बड़ा दांत) उहुद पहाड़ से भी बड़ी होगी। (मुस्लिम)

६. जहन्नमी के दोनों कंधों के बीच तेज़ रो सवार की तीन दिन की मुसाफत का फासला होगा। (मुस्लिम)

७. जहन्नमी के जिस्म की खाल बयालीस (४२) हाथ (६३ फिट) मोटी होगी। (तिर्मिज़ी)

८. दुनिया में तकब्बुर करने वलों को चींटियों के बराबर जिस्म दिया जाएगा। (तिर्मिज़ी)

९. जहन्नमी इस कद्र आंसू बहाएंगे कि उनमें कश्तियां चलाई जा सकेंगी। (मुस्तदरक हाकिम)

१०. जहन्नमियों को दिए जाने वाले खाने (थूहर) का एक टुकड़ा दुनिया में गिरा दिया जाए तो सारी दुनिया के जान्दारों के खाने पीने के सामान बरबाद कर दे। (अहमद, नसई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

११. जहन्नमियों को पिलाए जाने वाले पेय का एक डोल (चन्द लीटर) दुनिया में डाल दिया जाए तो सारी दुनिया की मख्लूक को बदबू में मुब्तला कर दे। (अबू याला)

१२. जहन्नमियों के सर पर इस कद्र खौलता हुआ पानी डाला जाएगा कि वह सर में छेद करके पेट में पहूंचेगा और पेट में जो कुछ होगा उसे काट डालेगा और यह सब कुछ (पेट से निकल कर) कदमों में आ गिरेगा। (अहमद)

१३. काफिरों को जहन्नम में इस कद्र सख्ती से ठूंसा जाएगा जिस तरह नेज़े की अन्नी दस्ते में सख्ती से गाड़ी जाती है।

Www.IslamicBooks.Website

(शरहुस्सुन्नह)

१४. जहन्नम की आग सख्त सियाह रंग की है

(जिसमें हाथ को हाथ सुझाई नहीं देगा।)

१५. जहन्नमियों को आग के पहाड "सऊद" पर चढ़ने में सत्तर साल लगेंगे उतरेगा तो फिर उसे चढ़ने का हुक्म दिया जाएगा।

(अब याला)

१६. जहन्नमियों को मारने के लिए लोहे के गुरूज़ इतने वज़नी होंगे कि इंसान और जिन्न मिलकर उसे उठाना चाहें तो नहीं उठा सकते।

(अबू याला)

१७. जहन्नम के सांप कद में ऊंट के बराबर होंगे और उनके एक बार डसने से काफिर चालीस साल तक उसके ज़हर की जलन महसूस कतरा रहेगा। (अहमद)

१८. जहन्नम के बिच्छू कद में खच्चर के बराबर होंगे उनके डसने का असर काफिर चालीस साल तक महसूस करता रहेगा। (अहमद)

१९. जहन्नमियों को जहन्नम में मुंह के बल चलाया जाएगा।

(मुस्लिम)

२०. जहन्नम के दरवाज़े पर अज़ाब देने वाले चार लाख फरिश्ते मौजूद होंगे जिनके चेहरे बड़े हैबतनाक और सियाह होंगे केचलियां बाहर निकली हुई होंगी सख्त बे-रहम होंगे और इस कदर लम्बे चौड़े कि दोनों कांधों के बीच परिन्दे की दो माह की मुसाफत का फासला होगा।

(इब्ने कसीर)

यह है वह हौलनाक और दुखद अकूबतखाना आखिर जिसका कुरआन मजीद और अहादीसे मुबारक में बार बार जहन्नम के नाम से

Www.IslamicBooks.Website

ज़िक्र किया गया है। अल्लाह तआला हममें से हर मुसलमान को अपने फ़ज़्ल व करम और एहसाने अज़ीम के सदके उससे महफ़ूज़ और मामून फरमाए, बेशक वह बड़ा बख्शने वाला और रहम फरमाने वाला है और जो चाहे वह करने पर कादिर है।

जहन्नम की आग : जहन्नम में सबसे बड़ा अज़ाब आग का ही होगा जिसके बारे में रसूल अकरम सल्ल० ने इर्शाद फरमाया है कि यह दुनिया की आग से ६९ दर्जे ज़्यादा गर्म है। (मुस्लिम)

कुरआन मजीद में कहीं इस आग को "नारल कुबरा" (बहुत बड़ी आग, सूरह आला : १२) कहा गया है कहीं "नारूल्लाहिल मूकदतः" (अल्लाह की आग खूब भड़काई हुई, सूरह हु-म-ज़ह : ५) कहा गया है कहीं "नारन तलज़्ज़ा" (आग की लपट, सूरह लैल : १४) कहा गया है और कहीं "नारून हामिया" (भड़कती हुई आग, सूरह गाशियह : ४) कहा गया है।

अगर इंसान को सिर्फ जला डालना मतलूब हो तो उसके लिए दुनिया की आग ही काफी है। जिसमें इंसान चन्द लम्हों के अन्दर अन्दर जलकर खत्म हो जाता है, लेकिन जहन्नम की आग तो सिर्फ काफिरों और मुश्रिकों को अज़ाब देने के लिए भड़काई गई है। लिहाज़ा दुनाया की आग से कई दर्जे ज़्यादा गर्म होने के बावजूद यह आग जहन्नमियों का किस्सा तमाम नहीं करेगी बल्कि उन्हें मुसलसल अज़ाब और इकाब में मुब्तला रखेगी। इर्शादे बारी तआला हैः "ला तबकी वला तज़र" (न जान लेगी न जान छोड़ेगी, सुरह मुदस्सिरः २८) दूसरी जगह इर्शादे मुबारक हैः "ला यमूतु फिहा वला यहया" (उस आग में काफिर न मरेगा न ज़िन्दा रहेगा, सूरह ता०हा०: ७४)

रसूले अकरम सल्ल०. को ख्वाब में एक इन्तिहाई बदसूरत और मकरूह शक्ल का आदमी दिखाया गया जो मुसल्सल आग जला रहा था और उसके गिर्द दौड़ दौड़ कर भड़ का रहा था रसूले अकरम सल्ल० ने

Www.IslamicBooks.Website

जनाब जिब्रील अलैहि० से पूछा, "यह कौन है?" जनाब जिब्रील अलैहि० ने बतायाः "इन्न हू मालिकुन खाज़िनु जहन्नम" इसका नाम मालिक है और यह ज़हन्नम का दारोगा है। (बुखारी) गोया दारोगा जहन्नम आज भी जहन्नम की आग भड़का रहा है और क़यामत तक मुसल्सल भड़काता रहेगा। जहन्नमियों के जहन्नम में चले जाने के बाद भी जहन्नम की आग को भड़काने का यह अमल मुसल्सल जारी रहेगा। इर्शादे बारी तआला हैः "कुल्लमा खबत जिदना हुम सईरा०" जहन्नम की आग जैसे ही धीमी होने लगेगी हम इसे और भड़का देंगे। (सूरह बनी इसराईलः९७)

जहन्नम की आग कितनी गर्म होगी उसका ठीक-ठीक अन्दाज़ा लगाना तो मुश्किल है लेकिन रसूले अकरम सल्ल० के इस इर्शादे मुबारक की रोशनी में कि जहन्नम की आग दुनिया की आग से ६९ दर्जे ज़्यादा गर्म है, सादा सा अन्दाज़ा यूं लगाया जा सकता है कि दुनिया की आग का अगर कम से कम दर्जा हरारत २००० डिग्री सेन्टी ग्रेड शुमार किया जाए-१ तो जहन्नम की आग का दर्जा हरारत एक लाख ३८ हज़ार डिग्री सेन्टी ग्रेड होगा।

इस सख्त गर्म आग से जहन्नमियों के लिबास बनाए जाएंगे, इसी आग से उनके बिस्तर तैयार किये जाएंगे। इसी आग से उनके लिए छतरियां और कनातें बनाई जाएंगी और इसी आग से उनके लिए फर्श बनाए जाएंगे। अज़ाबे अलीम की ऐसी बदतरीन जगह पर उस इंसान की ज़िन्दगी कैसी होगी जो अपनी हथेली पर छोटा सा आबला भी बर्दाश्त करने की ताकत नहीं रखता?

इंसान की कुव्वते बर्दाश्त का आलम तो यह है कि जून-जुलाई के

१. याद रहे कि आग के दर्जा हरारत का इंहिसार उस ईधन पर होता है जो उसे जलाने के लिए इस्तेमाल होता है कुछ सूरतों में यह दर्जा हरारत २००० सेंटी ग्रेड से कहीं ज़्यादा हो जाता है। शायद इसी वजह से अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में जहन्नम के ईधन का ज़िक्र भी किया है कि इसका ईधन पत्थर और इंसान होंगे। (सूरह बकराः २४) मुम्किन है कि इंसानों को ईधन इसलिए कहा गया है कि वे भी इस आग में जलकर खत्म नहीं होंगे बल्कि पत्थरों की तरह उनका वजूद भी बाकी रहेगा।

Www.IslamicBooks.Website

मौसम में दोपहर बारह बजे की गर्मी और लू बर्दाश्त करना किसी के बस की बात नहीं होती। कमज़ोर, बीमार और बुढ़े लोगों की अमवात तक वाकेअ होने लगती हैं। हांलाकि इर्शादे नबी सल्ल० के मुताबिक दुनिया की यह सख्त गर्मी जहन्नम के सांस (या भाप) की वजह से है। जो इंसान जहन्नम की भाप बर्दाश्त नहीं कर सकता वह जहन्नम की आग कैसे बर्दाश्त करेगा?

जहन्नम की इसी आग को देखकर कयामत के दिन तमाम अम्बिया-ए-किराम इस कद्र खौफज़दा होंगे कि "रब्बे सलीम! रब्बे सलीम!" (ऐ मेरे रब मुझे बचा ले, ऐ मेरे रब मुझे बचा ले।) कह कर अल्लाह तआला से अपनी जान की अमान तलब करेंगे।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० इसी आग को याद करके दुनिया में रोती रहीं अशरह मुबश्शरह में से एक यानी हज़रत उमर रज़ि० कुरआन मजीद की तिलावत के दौरान आग के अज़ाब की आयत पर पहुंचे तो बेहोश हो गए। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा रज़ि० और हज़रत ओबादा बिन सामित रज़ि० जैसे जलीलुल कद्र सहाबा रज़ि० जहन्नम की आग को याद करके इस कद्र रोते कि हिचकी बध जाती।

हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रज़ि० का लोहार की दुकान से गुज़र हुआ, आग से दहकती भठटी देखी तो जहन्नम की आग याद करके रोने लगे।

हज़रत अता सलीमी रज़ि० के हमसाए ने रोटियां लगाने के लिए तन्दूर जलाया, हज़रत अता रज़ि० ने देखा तो बेहोश हो गए।

हज़रत सुफियान सूरी रह० के सामने जब भी जहन्नम का ज़िक्र होता तो उन्हें खून का पेशाब आने लगता।

हज़रत रबीअ रह० सारी सारी रात बिस्तर पर पहलू बदलते रहते।

Www.IslamicBooks.Website

बेटी ने पूछा "अब्बा जान! सारी दुनिया आराम से सोती है आप क्यों जागते रहते हैं?" फरमाने लगे "बेटा! जहन्नम की आग तेरे बाप को सोने नहीं देती।"

सच फरमाया अल्लाह पाक ने "इन न अज़ा ब रब्बि क का न महजूरा" बेशक तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के लायक (सूरह बनी इसराईलः ५७) अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों को अपने फ़ज़्ल व करम से जहन्नम की आग से पनाह दे। आमीन।

जहन्नम के कुछ दूसरे अज़ाबः जिस तरह जेल की असल शनाख्त तो कैद व बन्द ही होती है लेकिन मुज्रिमो के जुर्मों के मुताबिक जेल में उन्हें कुछ दूसरी सज़ाएं भी दी जाती हैं इसी तरह जहन्नम की असल शनाख्त तो आग ही है लेकिन काफिरों के और मुश्रिकों के गुनाहों के मुताबिक उन्हें बहुत से दूसरे अज़ाब भी दिए जाएंगे। उन तमाम अज़ाबों की तफसील आप को आइन्दा अध्यायों में मिलेगी। उनमें से कुछ का तज़किरा यहां भी किया जा रहा है।

१. ज़हरीले बदबूदार खाने और खौलते गर्म पेय का अज़ाबः खाने पीने के मामले में इंसान किस कदर नाज़ुक मिज़ाज हुआ है इसका अन्दाज़ा हर इंसान अपनी ज़ात से लगा सकता है जो चीज़ गली सड़ी हो या बासी हो या इंसान के मिज़ाज के मुताबिक न हो उसे इंसान छूना तक गवारा नहीं करता। कुछ लोग खाने में नमक मिर्च की मामूली सी कमी बेशी तक गवारा नहीं करते। मुंह के स्वाद के अलावा खाने पीने की चीज़ों का सीधा इंसान की सेहत के साथ बड़ा गहरा ताल्लुक है इस लिए प्रगतिशील देशों में खाने पीने की चीज़ों के बारे में बहुत एहतियात बरती जाती है। मुह के स्वाद की खातिर इंसान ने कैसे-कैसे अजीब व गरीब और पेय तैयार कर लिए हैं निःसन्देह उन सारी किस्मों का शुमार भी मुम्किन नहीं। दुनिया में इसकदर ज़बान के चटख़ारे से खाने से खुश होने वाला इंसान जब अगली दुनिया में अपने आमाल का इम्तिहान देने के

Www.IslamicBooks.Website

लिए उठेगा तो सबसे पहले उसे जिस चीज़ से वास्ता पड़ेगा प्यास की शिद्दत होगी। सय्यदुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद सल्ल० अपने हौज़े मुबारक पर (जन्नत में दाखिल होने से पहले मैदाने हश्र में) मौजूद होंगे जहां अपने दस्ते मुबारक से अहले ईमान की प्यास बुझाएंगे काफिर और मुश्रिक भी अपनी प्यास बुझाने के लिए हौज़ की तरफ आएंगे लेकिन अल्लाह के रसूल सल्ल० उन्हें दूर हटा देंगे। (इब्ने माजा) अहले बिदअत भी पानी पीने के लिए हौज़ की तरफ आने की कोशिश करेंगे लेकिन उन्हें भी दूर कर दिया जाएगा (बुखारी) काफिर, मुश्रिक और बिदअती लोग हश्र का लम्बा समय प्यास की शिद्दत में ही गुज़ारेंगे और फिर इसी हालत में जहन्नम में दाखिल कर दिए जाएंगे। (सूरः मरयमः ८६) जहन्नम में जाने के बाद जब ये लोग खाना तलब करेंगे तो उन्हें थूहर का पेड़ और कांटेदार झाड़ दिया जाएगा जहन्नमी न चाहते हुए भी एक-एक लुकमा करके हलक में उतारेंगे जिससे उनकी भूख तो न मिटेगी अल्बत्ता उनके अज़ाब में मज़ीद इज़ाफा हो जाएगा। याद रहे थूहर का पेड़ और कांटेदार झाड़ जहन्नम में ही पैदा होंगे इसका मतलब यह है कि दोनों खाने कम से कम इतने गर्म तो ज़रूर होंगे जितनी गर्म जहन्नम की आग होगी। दूसरे शब्दों में यह खाने, आग के अंगारे होंगे जिन्हें जहन्नमी अपनी भूख मिटाने के लिए निगलेगा। जहन्नम का खाना असल में हजन्नम के दर्दनाक अज़ाब की एक बदतरीन शक्ल होगी। अल्ल्लाह की पनाह!

खाने के बाद जहन्नमी पानी तलब करेंगे तो दारोगा उन्हें जहन्नम के अकूबत खाने से निकालकर जहन्नम के चशमों पर ले आएंगे जहां खौलते हुए सख्त गर्म पानी से उनकी आवभगत की जाएगी। वह पानी कैसा होगा जो जहन्नम की दहकती हुई आग में भी भाप बनने के बजाए पहली हालत में बरकरार रहेगा? मुम्किन है कोई सख्त धात या कोई सख्त पत्थर हो जो जहन्नम की आग में पिघल कर पेय हालत में तबदील हो गया है और वही जहन्नमियों का पानी हो जहन्नमी उसे पीने की कोशिश

Www.IslamicBooks.Website

करेगा तो पहले घूंट के साथ ही उसके मुंह का सारा गोश्त पोस्त गल-सड़कर नीचे गिर पड़ेगा। (मुस्तदरक हाकिम) और जो हिस्सा पेट में जाएगा उससे उसकी सारी आतें कटकर पीठ के रास्ते कदमों में आ गिरेंगी। (तिर्मीज़ी) गोया पीना भी वास्तव में अज़ाबे अलीम ही की एक और शक्ल होगी इस आवभगत के बाद दारोगा फिर उसे उसके अकूबतखाने में पहुंचा देंगे।

जहन्नम के खानों व पेय से तंग आकर जहन्नमी, जन्नतियों से विनती करेंगे कि कुछ पानी या कोई दूसरी चीज़ें हमें भी खाने के लिए दे दो। जन्नती जवाब देंगे जन्नत के खाने और पीने अल्लाह तआला ने काफिरों के लिए हराम कर दी हैं। (सूरह आराफः ५०)

जहन्नम की दहकती और भड़कती हुई आग के सख्त अज़ाब के साथ जहरीले बदबूदार और कांटेदार खानों और खौलते पानी, गन्दे खून और पीप के पेय की शक्ल में बदतरीन अज़ाब बदबख्त लोगों को दिया जाएगा।

अलीम व खबीर ज़ात तो अल्लाह की है लेकिन कुरआन व हदीस के अध्ययन से जितनी बात समझ में आती है वह यह है कि काफिर की ज़िन्दगी का मरकज़ और परिधी दो ही चीज़ें हैं.....भूख और वासना.....

दोनों चीज़ें ऐसे खाने और पीने का तकाज़ा करती हैं जिनसे उनकी आग और भड़के चाहे हलाल हों या हराम, जाएज़ हों या नापाक, जुल्म से हासिल हों या बेईमानी से, लूटमार से हासिल हों या चोरी डाके से। चुनांचे कुरआन मजीद में कुफ्फार को कुछ जगह जहन्नम के डरावे के साथ साथ "खूब खाने पीने और मज़े करने" का ताना भी दिया गया है। सूरह हिज्र में इर्शाद मुबारक है" ज़रहुम याकुलू व य त मत्तऊ व युल हिहिमुल अ म लु फ़ सव फ यालमून०" छोड़ दो इन्हें (हलाल या हराम) खाएं और खूब मज़े करें और झूठी उम्मीदें इन्हें गाफिल किय रखें शिघ्र

Www.IslamicBooks.Website

ही इन्हें (इनके आमाल का) अनजाम मालूम हो जाएगा (आयत १३) सूरह मुरसलात में इर्शादे बारी तआला हैः "कुलू व तमत्तऊ कलीलन इन्नकुम मुज्रिमून०" (अपनी इस मुख्तसर ज़िन्दगी के) चन्द दिन खाओ और खूब मज़े करो, बेशक तुम लोग मुजरिम हो (आयत ४६) एक और जगह इर्शादे बारी ताआला हैः "वल्लज़ी न क फ रू यतमत्तऊ न व यककुलू न कमा तअकुलुल अनआमु वन्न रू मसवल्लहुम०" (जिन लोगों ने कुफ्र किया है वे खूब मज़े कर रहे हैं और जानवरों की तरह खा पी रहे हैं। अच्छा खूब खाएं और पीएं उनका आखीरी ठिकाना तो जहन्नम ही है। (सूरह मुहम्मद १२) चुनांचे भूख और वासना का यह बन्दा दुनिया में अच्छे से अच्छे खानों और उम्दा से उम्दा पीने के मज़े लेकर जब अपने पालनहार और मालिक के हुजूर पेश होगा तो कुफ्र के बदले जहन्नम की आग और "स्वादिष्ठ" खानों के बदले में थूहर, कांटेदार घास, खौलते पानी, सड़े और गन्दे खून और पीप से उसकी आवभगत की जाएगी।

याद रहे कि काफिरों के लिए तो सदैव जहन्नम और उसके दूसरे अज़ाब हैं ही, हलाल व हराम में अन्तर न करने वाले मुसलमानों के लिए भी जहन्नम और उसके खान पान का अज़ाब किताब व सुन्नत से साबित है। यतीम का माल खाने वाले के लिए स्पष्ट रूप से कुरआन मजीद की यह आयत मौजूद हैः "बेशक जो लोग जुल्म के साथ यतीमों के माल खाते हैं बेशाक वे अपने पेट में आग निगलते हैं और वे ज़रूर आग में डाले जाऐंगे। (सूरह निसाः १०) शराब पीने वालों के बारे में इर्शादे नबवी सल्ल० है कि उन्हें जहन्नम में जहन्नमियों का पसीना पिलाया जाएगा। (मुस्लिम) मुसनद अहमद की एक रिवायत के मुताबिक ज़ानी मर्दों और ज़ानी औरतों की शर्मगाहों से बहने वाले गलीज़ बदबूदार पदार्थ भी शराबियों को पिलाया जाएगा।

तो ऐ यतीमों और बेवाओं के माल खाने वालो! दूसरों की जायदादों पर नाजाएज़ कब्ज़ा करने वालो! कौमी खज़ाने की दौलत लूटने वालो!

Www.IslamicBooks.Website

जुआ, सूद और रिश्वत की कमाई पर वासना के महल तामीर करने वालो! और ऐ शराब व शबाब से रंग रलियां मानाने वालो! एक बार नहीं हज़ार बार सोचकर फैसला करो क्या जहन्नम में पैदा होने वाला थूहर का पेड़ और कांटेदार घांस खा लोगे? बदबूदार, गलीज़ और सियाह पानी के खौलते हुए जाम भी पी लोगे? फिर है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

२. सर में खौलता पानी उडेलने का अज़ाबः काफिरो के लिए यह और दुखद अज़ाब होगा। फरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा "इसको पकड़ लो और रेंगते हुए जहन्नम के बीच में ले जाओ और उसके सर पर खौलते पानी का अज़ाब उडेल दो। (सूरह दुखानः ४७-४८) इस आयत की व्याख्या में आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया कि जब खौलता पानी काफिर के सर पर डाला जाएगा तो उसके सर में छेद करके जिस्म के अन्दर के तमाम अंगों को जला डालेगा और फिर यह अंग पिछे के रास्ते निकल कर उसके कदमों में आ गिरेंगे। (मुसनद अहमद)

सर में छेद करने के बाद सबसे पहले खौलता पानी काफिर के दिमाग को जलाएगा जो उसकी काम इच्छाओं, असत्य दृष्टिकोण और मुश्रिकाना अकीदों का मरकज़ था जिस दिमाग से वह इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ धोखे की चालें चलता रहा जिस दिमाग से वह मुसलमान पर जुल्म व सितम के पहाड़ तोड़ने के लिए चालाकियां करता रहा। जिस दिमाग से वह इस्लाम के खिलाफ प्रोपेगन्डा करने के लिए रोज़ नई दलीलें गढ़ता रहा जिस दिमाग से वह इस्लाम की राह रोकने के लिए बड़े मनसूबे ओर साज़िशें तैयार करता रहा उसी दिमाग से उस दुखद अज़ाब का आरम्भ किया जएगा।

सूरह दुखान की इस आयत के आखिर में "अज़ाब का मज़ा चख तू (दुनिया में) बड़ा गालिब और इज्जतदार था।" (आयत ४९) के शब्द इस बात की पूरी तरह व्याख्या कर रहें है कि इस दुखद अज़ाब के हकदार कुफ्र के वे ईमाम होंगे जो दुनिया में बड़ी ताकत, इक्तेदार और

Www.IslamicBooks.Website

गल्बे के मालिक रहे होंगे। दुनिया की निगाह में उनकी बड़ी इज्जत और आन बान होगी। इसी ताकत गल्बे और इक्तेदार के नशे में वे इस्लाम को नीचा दिखाने और मुसलमानों को दुनिया से मिटाने का हर हरबा इस्तेमाल करते रहे होंगे कुरआन मजीद में ऐसे लोग की मक्कारियों और चालबाज़ियों का जगह-जगह ज़िक्र फरमाया गया है। इर्शादे बारी तआला है "उन्हों ने (मुहम्मद सल्ल० के खिलाफ) साज़िशें की और अल्लाह ने भी चाल चली और अल्लाह तआला बेहतरीन चाल चलने वाला है।" (सूरह अनफालः ३०) एक दूसरी आयत में इर्शाद मुबारक हैः "इनसे पहले जो लोग गुज़र चुके उन्होंने भी बड़ी चालें चली मगर फैसलाकुन चाल तो पूरी की पूरी अल्लाह के हाथ में है।" (सूरह रअदः ४२) सूरह इब्राहीम में अल्लाह तआला फरमाते हैं। काफिरों ने इस्लाम के खिलाफ ऐसी-ऐसी ज़ोर की साज़िशें की और चालें चली कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाते। "काफिरों ने अपनी सारी चालें चल देखीं मगर उनकी हर चाल का तोड़ अल्लाह के पास था अगरचे उनकी चालें ऐसी मज़ेदार थीं कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाएं। (सूरह इब्राहीमः ४६) हज़रत नूह अलैहि० ने ६५० साल तक कौम को दावत देने के बाद अल्लाह तआला के समक्ष जब अपनी प्रार्थना पेश की तो उसका एक अहम सुत्र यह भी था "या अल्लाह! इस कौम के सरदारों ने धोखेबाज़ी का बड़ा भारी जाल फैला रखा है।" (सूरह नूहः २२) चुनांचे इस्लाम के खिलाफ धोखा व फरेब के जाल फैलाने वाले, दीन इस्लाम को प्राजीत करने के मनसूबे बनाने वाले और मुसलमानों को मलिया मेट करने की तदबीरें करने वाले यही अज़ीज़ (His Excellency) और करीम (His Higness) कयामत के रोज़ जब हिसाब किताब के लिए उठेंगे तो उनकी आवभगत उसी दुखद अज़ाब से की जाएगी।

निःसन्देह वह दुखद अज़ाब है तो काफिरों के लिए लेकिन ईमान लाने के बाद इस्लामी देशों में इस्लामी व्यवस्था को रोकने की साज़िशें करने वाले इस्लामी कानूनों का मज़ाक उड़ाने वाले इस्लामी शरीअत की

Www.IslamicBooks.Website

तौहीन और तहक़ीर करने वाले सूदी निज़ाम जारी रखने की चालें चलने वाले, अल्लाह और उसके रसूल को धोखा और फरेब देने वाले "हिज़ ऐक्सी लैंसर" क्या इस अज़ाबे अलीम से बच जाएंगे?

अतः ऐ सदारत और विज़ारत की कुर्सियों पर बिराजमान "हिज़ एक्सी लैंसी" कचेहरियों और अदालतों में रौनक अफरोज़ "माई लॉर्डज़" और ऐ सूबाई व कौमी असेम्बलियों के पदों के मज़े लूटने वाले सम्मनित लोगो! अल्लाह के अज़ाब से डर जाओ इस्लाम के खिलाफ साज़िशें करने से बाज़ आ जाओ, इस्लामी ताज़िरात और इस्लामी शरीअत का मज़ाक मत उड़ाओ, अल्लाह और उसके रसूल को धोखा और फरेब देना छोड़ दो वर्ना उसके अज़ाब से बच न सकोगे। "डरो उस आग से जो काफिरों के लिए तैयार की गई है।" (सूरह आले इमरानः १३१)

३. आग की तंग व अंधेरी कोठरियों में ठूंसने का अज़ाबः जहन्नम के कठोर अज़ाबों और इकाबों में से एक यह होगा कि काफिरों के हाथ और पांव भारी ज़ंजिरों से बांध कर इन्तिहाई तंग व अंधेरी कोठरियों में ठूंस दिय जाएंगे और ऊपर से दरवाज़े सख्ती से बन्द कर दिए जाएंगे न हवा का गुज़र होगा, न रोशनी की किरन ही नज़र आएगी न कोई राहे फरार होगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फरमाते हैं कि जहन्नम काफिर के लिए इस तरह तंग होगी जिस तरह नेज़े की अन्नी लकड़ी के दस्ते में सख्ती से ठूंसी जाती है।

इस अज़ाबे अलीम का अन्दाज़ा लगाने के लिए प्रेशर कूकर की कल्पना कर लीजिए। बहुत बड़ा प्रेशर कूकर, जिसमें एक हज़ार आदमियों की गुंजाइश हो लेकिन उसमें दो हज़ार आदमियों को इस तरह ज़बरदस्ती ठूंस दिया जाएगा कि सांस लेना भी दुशवार हो, हाथ और पांव ज़ंजीरों से बधे हों कि हरकत तक न कर सकें ऊपर से ढकना मज़बूती से बन्द कर दिया जाए और जहन्नम की आग में पकने के लिए रख दिया जाए। इस हालत में काफिर मौत को पुकारेंगे लेकिन मौत नहीं आएगी। इर्शादे बारी

Www.IslamicBooks.Website

तआला हैः "जब मुज्रिम लोग जहन्नम की तंग व अंधेरी कोठरी में हाथ पांव बांधकर फेंके जाएंगे तो अपने लिए मौत को पुकारेंगे। (उस वक्त उनसे कहा जाएगा) आज एक मौत को नहीं बहुत सी मौतों को पुकारो।" (सूरह फुरकानः १३-१४) लेकिन मौत का दूर-दूर तक कोई निशान नहीं होगा। मौत ज़ब्ह की जा चुकी होगी और काफिर लोग इसी अज़ाबे अलीम में हमेशा-हमेशा के लिए फंसे रहेंगे।

आग की तंग व अंधेरी कोठरियों में बांधकर ठूसे जाने का दर्दनाक अज़ाब किन ज़ालिमों को दिया जाएगा? सूरह फुरकान की इन्हीं आयतों में अल्लाह तआला ने इस सवाल का जवाब भी दे दिया है इर्शादे बारी तआला है "जो व्यक्ति कयामत को झुठलाए उसके लिए हमने भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (सूरह फुरकानः११) कयामत को झुठलाने का स्वभाविक नतीजा दुनिया में स्वतंत्र ज़िन्दगी बसर करना है। दीन और मज़हब का उपहास और मज़ाक उड़ाने की आज़ादी, इस्लामी शरीअत की तहकीर और तौहीन की आज़ादी, अश्लीलता नंग्नता फैलाने की आज़ादी, नुमाइश हुस्न और नुमाइश जिस्म की आज़ादी, गाने बजाने और नाचने की आज़ादी, शराब और ज़िना की आज़ादी, गर्भपात की आज़ादी, हम जिन्स परस्ती की आज़ादी-१, नंगे घूमने फिरने की आज़ादी-२ और हर उस बात की आज़ादी जिसमें मर्द और औरत जिन्सी लज्ज़त हासिल कर सकें। इस आज़ादी के बदले जहन्नम की तंग व अधेरी कोठरियों में निरन्तर कैद। किस कदर हौलनाक और शिक्षाप्रद अन्जाम होगा दुनिया में इस आज़ादी का, काश! काफिर लोग आज यह जान सकें।

४. चेहरे पर आग के शोले बरसाने का अज़ाबः जहन्नम

---

१. लगता है हम जिन्सपरस्ती के लानत के शिकार पश्चिम ने कौमे लूत को भी पीछे छोड़ दिया है "महान" ब्रिटेन की अदालतों ने हम जिन्सपरस्ती को "कानूनी जोड़ों" का दर्जा देना शुरू कर दिया है चर्चों के कुछ पादरी अपने हम जिन्सपरस्त होने पर एलानिया गर्व करते हैं। ब्रिटेन की बर सरे इक्तेदार लेबर पार्टी में ऐसी मंत्रियों की खासी तादाद शामिल है जो अपने हम जिन्सपरस्त होने को खुलकर बताते हैं। (तकबीर १६ फरवरी २०० ई०)

२. पश्चिम में यह नंगी आज़ादी अब कोई राज़ की बात नहीं रही। फिर भी एक खबर बतौरे

Www.IslamicBooks.Website

पूरी तरह आग ही आग ही सर से पांव तक मुज्रिमों का सारा जिस्म आग ही में जल रहा होगा इसके बावजूद अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में कुछ मुज्रिमों के चेहरों में आग के शोले बरसाने और चेहरों को आग से तपाने का खास ज़िक्र फरमाया है। इर्शादे बारी तआला है: "उस रोज़ तुम देखोगे मुज्रिम लोगों के हाथ और पांव ज़ंजिरों में जकड़े होंगे तारकोल के लिबास पहने हुए और आग के शोले उनके चेहरों पर छाए जा रहे होंगे।" (सूरह इब्राहीम ४६-५०)

अल्लाह तआला ने इंसानी जिस्म को जो बनावट प्रदान की है उसके बारे में कुरआन पाक में यह बात इर्शाद फरमाई है: "हमने यकीनन इंसान को बेहतरीन बनावट पर पैदा फरमाया है।" (सूरह तीनः ४) इंसान के सारे जिस्म में से चेहरे को अल्लाह तआला ने खूबसूरती, हुस्न इज्ज़त और मान सम्मान की निशानी बनाया है। दिलकश आखें, उत्तम नाक, साफ सुथरे कान, नर्म व नाजुक होंठ, आकर्षक गाल, जवानी में काले सियाह बाल इंसान के हुस्न और खूबसूरती में वृद्धि का कारण बनते हैं बुढ़ापे में चांदी की तरह सफेद बाल इंसान के वकार और इज्ज़त में इज़ाफा कर देते हैं। चेहरे की इसी तकरीम और वकार की खातिर रसूले रहमत सल्ल० ने यह हुक्म दिया है कि बीवी० (बच्चे या गुलाम वगैरह) को तरबियत के लिए मारना पड़े तो चेहरे पर न मारो (इब्ने माजा)

चिकित्सा की दृष्टि से चेहरे के तमाम हिस्से बाकी सारे जिस्म के

मिसाल मुलाहिज़ा हो। सेटल में एक ३७ साला नंगी हसीना हाइवे पर मौजूद एक खम्बे को पकड़ कर रक्स करते करते ऊपर चढ़ गई और झूम झूम कर गाने लगी उसके हाथ में शराब की एक बोतल भी थी पुलिस ने तुरन्त पावत कम्पनी को टेलीफोन करके बिजली बन्द करवा दी क्योंकि महिला नशे में थी और तारों को लाइटर से जलाने की कोशिश कर रही थी महिला के दीदार के लिए पूरी ट्रेफिक जाम हो गई लोग घंटा भर यह ड्रामा देखते रहे आखिरकार पुलिस ने बड़ी मुश्किल से हुजूम पर काबू पाकर औरत को खम्बे से नीचे उतार किर गिरफ्तार किया। उस पर इल्ज़ाम यह है कि उसने सैफ्टी ऐक्त का उल्लंघन किया है जिस वजह से ट्रेफिक में खलल पड़ा (उर्दू न्यूज़ १० सितम्बर १९९९ ई०) न शराब नोशी पर एतराज़ न नंगे होन पर मुकदमा। पश्चिम की इस नंगी आज़ादी के मतवालों की हरकतों से अब हमारा देश भी सुरक्षित नहीं।

Www.IslamicBooks.Website

मुकाबले में ज़्यादा विवेकशील और नाजुक होते हैं। आँख, कान, नाक, दाँत, गाल वगैरह की रगें सीधे दिमाग से जूड़ी होती हैं दिमाग से करीब होने की वजह से खून की गर्दिश चेहरे में बाकी जिस्म की तुलना में ज़्यादा तेज़ होती है यही वजह है कि मामूली सा गुस्स आने पर चेहरे का रंग फौरन सुर्ख हो जाता है। चेहरे के एक हिस्से में तकलीफ हो तो बाकी सारे हिस्से भी तकलीफ का शिकार हो जाते हैं। सिर्फ दाँत में दर्द होतो आँख, कान, और दिमाग भी दर्द महसूस करने लगते हैं। और यह दर्द इतना सख्त होता है कि इंसान उसका एक-एक छड़ गिन-गिन कर गुज़ारता है और जल्द से जल्द आराम हासिल करने की कोशिश करता है। जिस्म के इस सबसे ज़्यादा विवेश शील और नर्म व नाजुक हिस्से यानी चेहरे पर जब जहन्म की आग के सख्त गर्म शोले बरसाए जाएंगे तो काफिरों को किस कद्र सख्त तकलीफ और यातना का सामना करना पड़ेगा इसका अन्दाज़ा जहन्नमियों की इस ख्वाहिश से लगाया जा सकता है। "हाय अफसोस! मैं मिट्टी होता।" (सूरह नबाः ४०)

मुज्रिमों को जब मारा पीटा जाता है तो आम तौर पर वे अपना चेहरा मार से बचाने के लिए हाथ में छुपा लेते हैं लेकिन कल्पना कीजिए एक तरफ मज्रिमों के हाथ पांव भारी ज़ंजीरों में जकड़े होंगे और दूसरी तरफ जहन्नम के खैफनाक दारोगा बगैर किसी रोक टोक के उनके चेहरों पर निरंतर आग की बारिश बरसा रहे होंगे मानो जिस्मानी अज़ाब के साथ-साथ सख्त जिल्लत और बदनामी का अज़ाब भी उन्हें दिया जाएगा। और यह बदनाम अज़ाब घन्टे या दो घन्टे के लिए नहीं, हफ्ता या दो हफ्ते के लिए नहीं बल्कि हमेशा हमेशा के लिए होता रहेगा। इर्शादे बारी तआला हैः "काश! काफिर लोग उस वक्त का यकीन कर लें जब वे अपने मुंह आग से बचाा सकेंगे न ही अपनी पीठें आग से बचा सकेंगे और न ही (कहीं से) मदद पाएंगे।

(सूरह अंबियाः ३०)

Www.IslamicBooks.Website

इस बदनाम और सख्त अज़ाब से दो चार होने वाले कौन बख्बख्त और बदनसीब मुज्रिम होंगे? अल्लाह तआला ने बड़े स्पष्ट शब्दों में इसकी कुरआन मजीद में वयाख्या की है इर्शादे बारी तआला है: "जिस रोज़ मुज्रिमों के चेहरे आग पर तपाए जाएंगे उस वक्त वे (मुज्रिम) कहेंगे "काश हमने अल्लाह और उसके रसूल की अज्ञा मानी होती।" और कहेंगे "ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और बड़ों की अज्ञा मानी उन्होंने हमें सीधी राह से बे राह कर दिया उनको दोहरा अज़ाब दे और उन पर सख्त लानत फरमा।" (सूरह अहज़ाबः ६६-६८)

मानो उन मुज्रिमों का जुर्म यह होगा कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के मुकाबले में अपने सरदारों और बड़ों की आज्ञा मानी होगी। काफिरों के कुफ्र और मुश्रिकों के शिर्क का यह फितरी नतीजा है वे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का अनुसरण नहीं कर रहे बल्कि अपने आलिमों, दुर्वेशों लीडरों और शहंशाहों का पालन कर रहे हैं जिसकी दुखद सज़ा उन्हें कयामत के रोज़ भुगतनी पड़ेगी।

हमारे नज़दीक काफिरों और मुश्रिकों की निस्बत उन मुसलमानों का मामला ज़्यादा चिन्ताजनक है जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का कलिमा पढ़ा है, कयामत पर ईमान रखते हैं, जन्नत और जहन्नम को भी मानते हैं लेकिन इसके बावजूद किसी न किसी गलतफहमी में फंसकर रसूल सल्ल० की अवज्ञा कर रहे हैं।

याद रहे इस तरह रसूल अकरम सल्ल० की रिसालत कयामत तक के लिए निश्चित है उसी तरह आप सल्ल० का अनुसरण भी कयामत तक के लिए तय है। इर्शादे बारी तआला है: "और नहीं भेजा हमने तुम्हें मगर सारे लोगों के लिए बशीर और नज़ीर बनाकर।" (सूरह सबाः २८) दूसरी जगह इर्शादे मुबारक है: "ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ अल्लाह का रसूल हूं।" (सूरह आराफः १५८) इसी तरह इर्शाद मुबारक है: "बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसने अपने बन्दे पर फुरकान (यानी कुरआन)

Www.IslamicBooks.Website

नाज़िल फरमाया ताकि वह सारे जहान वालों के लिए डराने वाला हो।" (सूरह फुरकानः १) पस जो लोग रसूल अकरम सल्ल० की रिसालत को आपके पाक जीवन को महदूद समझते हैं वे यकीनन रसूल सल्ल० की आज्ञापालन नहीं कर रहे हैं और जो लोग रसूले अकरम सल्ल० को सिर्फ अल्लाह तआला का कलाम महुंचाने वाला पैगम्बर समझकर आपकी बतलाई हुई शिक्षा (यानी हदीस शरीफ) का इंकार करते हैं वे आपकी अवज्ञा कर रहे हैं और जो लोग यह अकीदा रखते हैं कि सिर्फ कुरआन मजीद ही हिदायत के लिए काफी है उसके साथ हदीस रसूल सल्ल० की ज़रूरत नहीं वे भी आपकी अवज्ञा कर रहे हैं। (देखें सूरह नहल' ४४ वगैरह) और जो लोग यह अकीदा रखते हैं कि कुरआन मजीद तो सही हालत में मौजूद है लेकिन हदीस विश्वास योग्य नहीं लिहाज़ा उस पर अमल करना ज़रूरी नहीं वे भी नबी की अवज्ञा कर रहे हैं। (देखें सूरह हिज्रः ६) और जो लोग "उलमा" अपने फिक्ही मसलक के तास्सुब की बिना पर अपने ईमामों के अकवाल को रसूल अकरम सल्ल० की अहादीस पर तरजीह देते हैं वे भी इताअते रसूल से इनहिराफ कर रहे हैं और जो लोग अपने बुजुर्गों के मुराकिबों और मुकाशिफों को हदीस रसूल सल्ल० पर तरजीह देते है वे भी इताअते रसूल सल्ल० से इनहिराफ कर रहे हैं। इसी तरह जो लोग अपने अकाबिर के मुशाहिदों और ख्वाबों के सुन्नते रसूल सल्ल० पर तरजीह देते हैं वे भी इताअते रसूल सल्ल० से इनहिराफ कर रहे हैं।

(देखें सूरह हुजुरातः १)

हम इनतिहाई अदब और एहतराम के साथ मुसलमानों के तमाम मकातिबे फिक्र की खिदमत में इन्तिहाई मुखलिसाना और हमदर्दाना विनती करेंगे कि अकीदत, बुजुर्गों की मुहब्बत और गढ़े हुए नज़रियात का तास्सुब हमें कयामत के रोज़ किसी बड़े दुखद अज़ाब से दो चार कर दे। अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पर ईमान लाने के बाद ऐसा दुखद अन्जाम बड़ा ही खसारे का सौदा होगा। "खबरदार! यह सबसे बड़ा खसारा है।"

Www.IslamicBooks.Website

(सूरह जुमर:१५)

५. गुरूज़ों और हथौड़ो की मार का अज़ाबः जहन्नम में काफिरों और मुश्रिकों को लोहे के गुरूज़ों और हथौड़ों से मारने का अज़ाब भी होगा उनका ज़िक्र कुरआन मजीद में भी है और अहादीसे मुबारका में भी। इर्शादे बारी तआला हैः "और (काफिरों को मारने के लिए) लोहे के गुरूज़ होंगे।" (सूरह हजः २१) हदीस शरीफ में इर्शादे नब्वी है कि काफिरों को मारने वाला गुरूज़ इस कद्र वज़नी होंगे कि अगर एक गुरूज़ ज़मीन पर रख दिया जाए और ज़मीन पर बसने वाले सारे के सारे इंसान और जिन्न उसे उठाना चाहें तो नहीं उठा सकेंगे। (मुसनद अबू याला)

जहन्नम से पहले कब्र में भी काफिरों को गुरूज़ों और हथौड़ों की मार का अज़ाब दिया जाएगा। अज़ाबे कब्र का विवरण बयान करते हुए रसूल अकरम सल्ल० ने इर्शाद फरमाया है कि मुनकिर नकीर के सवालों के जवाब में नाकाम होने के बाद काफिर पर अन्धा और बहरा फरिश्ता मुसल्लत कर दिया जाता है जिसके पास लोहे का गुरूज़ होता है। जो इतना वज़नी होता है कि अगर उसे किसी पहाड़ पर मारा जाए तो वह कण-कण हो जाए। उस गुरूज़ से वह अन्धा और बहरा फरिश्ता उसे मारेगा जिससे काफिर चींखे और चिल्लाएगा। और आप सल्ल० का इर्शाद मुबारक है काफिर की चींख व पुकार की आवाज़ें मश्रिक व मग्रिब के बीच जिन्न व इंसान के अवाला हर जानदार मखलूक सुनती है। फरिश्ते की ज़र्ब से काफिर मिट्टी (की तरह कण-कण) हो जाएगा फिर उसमें रूह डाली जाएगी। (मुसनद अबू याला) यही अमल बार-बार दोहरया जाता रहेगा यहां तक कि कयामत कायम हो जाएगी।

जहन्नम का अज़ाब कब्र के अज़ाब से कहीं ज़्यादा कठोर और दुखद होगा। कब्र में अगर हथौड़ों और गुरूज़ों से मारने वाले फरिश्ते अंधे और बहरे होंगे तो जहन्नम के फरिश्तों के बारे में अल्लाह तआला ने

Www.IslamicBooks.Website

खुद इर्शाद फरमाया हैः "यानी जहन्नम पर निहायत बे-रहम और सख्त गीर फरिश्ते मुकर्रर हैं।" हज़रत इक्रिमा रज़ि० फरमाते हैं कि जब जहन्नमियों को पहला जत्था जहन्नम की तरफ जाएगा तो दरवाज़े पर चार लाख फरिश्ते अज़ाब देने के लिए खड़े होंगे जिनके चेहरे बड़े डरावने और बड़े ही सियाह हैं कुचलियां बाहर को निकली हुई हैं सख्त बे रहम हैं अल्लाह तआला ने ज़र्रा बराबर रहम उनके दिलों में नहीं रखा उन फरिश्तों की दूसरी खूबी अल्लाह तआला ने यह बताई है किः "वे फरिश्ते कभी अल्लाह के हुक्म का उल्लंघन नहीं करते और जो हुक्म उन्हें दिया जाता है बजा लाते हैं। (सूरह तहरीमः ६) यानी अल्लाह तआला फरिश्तो को जैसा अज़ाब करने का हुक्म देगा फरिश्ते फौरन वैसाही अज़ाब देना शुरू कर देंगे, क्षण भर के लिए भी नहीं झिझकेंगे ये फरिश्ते ऐसी-ऐसी बदतरीन तरकिबों से काफिरों को सजाए देंगे कि बड़े-बड़े मुज्रिमों का पित्ता पानी और कलेजा छलनी हो जाएगा। (इब्ने कसीर)

यह है काफिरों का अंजाम और काफिरों के कुफ्र की सज़ा। हकीकत यह है कि काफिर अल्लाह तआला के नज़दीक उसकी सबसे ज़्यादा काबिले नफरत और अपमान जनक मखलूक है जबकि ईमान की दौलत से बढ़ कर इस दुनिया में कोई दौलत नहीं। काश! मुसलामन इस दुनिया में ईमान की कद्र कीमत और पहचान सकें। रहे काफिर तो यकीनन वे कयामत के दन अज़ाब देखकर यह तमन्ना करेंगेः "काश वे दुनिया में हिदायत का रास्ता अपनाते।" (सूरह कससः ६४)

६. ज़हरीले सांपों और बिच्छुओं के डसने का अज़ाबः जहन्नम में ज़हरीले सांपों और बिच्छुओं के डसने का अज़ाब भी होगा। सांप और बिच्छू दोनों इंसान के दुश्मन समझे जाते हैं और दोनों के नाम में इस कद्र खौफ और दहसत है कि अगर किसी जगह सांपों और बिच्छुओं का ठिकाना वहां रहना तो दूर की बात कोई व्यक्ति गुज़रने का खतरा भी मोल लेने को तैयार नहीं होगा। कुछ सांपों की शक्ल व सूरत,

Www.IslamicBooks.Website

रंगत, लम्बाई और हरकात ऐसी होती हैं कि उन्हें देखते ही इंसान के होश चले जाते हैं।

सांप या बिच्छू ज़्यादा से ज़्यादा किस कद्र ज़हरीला हो सकते हैं? उसका इल्म अल्लाह के सिवा किसी को भी नहीं हो सकता। लेकिन अनुभव की बिना पर कुछ किताबों में मौजूद विवरण से यह फैसला करना मुश्किल नहीं कि सांप इंतिहाई खतरनाक और इंसान का जान लेवा दुश्मन है।

दक्षिण पश्चिम फ्रांस में वाकेअ सांपों के मर्कज़ से एक ज़हरीले सांप के बारे में कुछ मालूमात प्रकाशित हुई हैं जिनके मुताबिक यह डेढ़ मीटर लम्बा सांप अपने ज़हर से एक वक्त में पांच आदमियों को मार सकता है। (उर्दू न्यूज़, जद्दा १७ अगस्त १९९९ ई०)

फरवरी १९९९ ई० में जामिया मलिक सऊद, रियाज़ (सऊदी अरब) में छात्रों के लिए एक शैक्षिक नुमाईश हुई जिसमें दुनिया के मुखतलिफ मुल्कों के इन्तिहाई ज़हरीले सांपों की नुमाईश भी की गई जो शीशों के सन्दूक में बन्द थे उनमें से कुछ के बारे में यह मालूमात दी गईं।

अरबी कोबरा (Arabian Cobra) जो अरब देशों में पाया जाता है इस कद्र ज़हरीला है इसके ज़हर का सिर्फ २० मिली ग्राम ७० किलोग्राम वज़नी आदमी को तुरन्त हलाक कर देता है। जबकि यह कोबरा एक वक्त में अपने मुंह से २०० मिली ग्राम से ३०० मिली ग्राम ज़हर दुश्मन पर फेंकता है। किंग कोबरा जो कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में पाया जाता है का डसा हुआ आदमी भी तुरन्त हलाक हो जाता है। पश्चिम देशों में पाया जाने वाला सांप (West Diomand Black Snack) भी इन्तिहाई ज़हरीले सांपों में माना जाता है। इंडोनेशिया का थूक फेंकने वाला ज़हरीला सांप (Indoesian Spitting Cobra) २

Www.IslamicBooks.Website

मीटर लम्बा होता है और यह तीन मीटर के फासले से इंसान की आंख में पिचकारी की तरह ज़हर फेंकता है जिससे इंसान तुरन्त मर जाता है।

जहन्नम से पहले कब्र में भी काफिरों को सांपों के डसने का अज़ाब दिया जाएगा। चुनांचे अज़ाबे कब्र की तफसील बयान फरमाते हुए रूसले अकरम सल्ल० ने इर्शाद फरमाया हे कि काफिर जब मुन्किर नकीर के सवालों के जवाब में नाकाम हो जाता है तो उस पर ९९ सांप छोड़ दिए जाते हैं जो कयामत तक उसका गोश्त नोचते रहते हैं और उसे डसते रहते हैं। कब्र के सांप के बारे में रसूल अकरम सल्ल० का इर्शाद मुबारक है कि अगर वह सांप ज़मीन पर एक बार फुंकार मार दे तो ज़मीन पर कभी सब्ज़ न उगे। (मुसनद अहमद) कब्र के सांप के बारे में इब्ने हिबान की रिवायत में यह भी बताया गया है कि एक-एक अज़दहे के सत्तर मुंह होंगे जिसे वह काफिर को कयामत तक डसता रहेगा।

जहन्नम के सांप के बारे में रसूले अकरम सल्ल० ने यह फरमाया है कि उसका कद ऊंट के बराबर होगा अैर उसके एक बार डसने से काफिर चालीस साल तक तकलीफ महसूसू करता रहेगा। (मुसनद अहमद) कब्र में और जहन्नम में डसने वाले सांप यकीनन दुनिया के सांपों के मुकाबले में हज़ारों गुना ज़हरीले, खतरनाक और डरावने होंग। दुनिया में एक आम ज़हरीले सांप के डसने से इंसान जिस कठोर यातना से दो चार होता है वह यह है कि:

१. इंसान पर बेहोशी तारी हो जाती है।

२. ज़हर से प्रभावित हिस्सा शिथिल हो जाता है।

३. नाक, मुंह, कान यहां तक कि आंखों से भी खून बहना शुरू हो जाता है। यह हालत सिर्फ एक बार सांप के डसने से पैदा होती है कल्पना कीजिए कि इंसान को दुनिया के सांपों के मुकाबले में हज़ारों गुना ज़्यादा ज़हरीले सांप बार-बार डस रहे होंगे वह किस कद्र कड़ी यातना में

Www.IslamicBooks.Website

गिरिफ्तार होगा।

बिच्छू के डसने का असर सांप के डसने के असर के बिल्कुल अलग होता है। बिच्छू के डसने से इंसान तत्काल दो तरह की तकलीफ का शिकार होता है।

१. जिस्म सूज जाता है।

२. सांस लेने में तकलीफ और घुटन महसूस होने लगती है।

जहन्नम के बिच्छू का ज़िक्र करते हुए रसूल अकरम सल्ल० ने फरमाया है कि वह ख्च्चर जितना बड़ा होगा और उसके एक बार डसने से काफिर चालीस साल तक उसकी जलन महसूस करता रहेगा। (मुसनद अहमद) जिसका मतलब यह है कि बिच्छू के मुसलसल डसने के नतीजे में जहन्नमी की सूजन (Swelling) में भी बराबर इज़ाफा होता रहेगा और उसकी सांस में घुटन भी क्षण क्षण बढ़ती जाएगी। यह उस अज़ाबे अलीम का एक हिस्सा है जो हजन्नम में काफिर को दिया जाएगा।

क्या काफिर जहन्नम में इन सांपों और बिच्छुओं को मार डालेंगे या कहीं भाग जाएंगे या कोई शरण स्थली पाएंगे? सच फरमाया अल्लाह तआला नेः "वह वक्त भी आएगा जब काफिर लोग पछता पछता कर कहेंगे, काश हम मुसलमान होते।" (सूरह हिज्रः २)

लेकिन ऐ ईमान वालो! जहन्नम और उसके अज़ाबों पर यकीन रखने वालो! तुम तो अल्लाह के अज़ाबों से डर जाओ। अल्लह और उसके रसूल की अवज्ञा से बाज़ आ जाओ। अल्लह के अज़ाबों को जानने और मानने के बावजूद उसकी अवज्ञा करना तो और भी अल्लाह के अज़ाब को भड़काने वाली बात है। "फिर क्या तुम अल्लाह की अवज्ञा से बाज़ आते हो?" (९१)

७. बदन को बड़ा करने का अज़ाबः मौजूदा आकार में जहन्नम का अज़ाब बार्दाश्त करना चूंकि नामुमकिन होगा इसलिए जहन्नमी

Www.IslamicBooks.Website

के आकार को बहुत ज़्यादा बढ़ाया जाएगा जो कि स्वयं एक अज़ाब की सूरत होगी। रसूले अकरम सलल० का इर्शाद मुबारक हैः "जहन्नम में काफिर का एक दांत उहुद पहाड़ के बराबर होगा।" (मुस्लिम) कुछ काफिरों की खाल की मोटाई तीन दिन की मुसाफत के बराबर होगी। (मुस्लिम) कुछ की मोटाई ४२ हाथ (६३ फिट) के बराबर होगी। (तिर्मिज़ी) यह फर्क काफिरों के आमाल के फर्क की वजह से होगा। कुछ काफिरों के दोनों कांधों का बीच का फासला तीव्र गति सवार की तीन दिन की मुसाफत का फासला होगा। कुछ काफिरों के बैठने की जगह मक्का और मदीना के बीच मुसाफत के बराबर होगी (यानी ४१० किलो मीटर)। (तिर्मिज़ी) कुछ काफिर जहन्नम के व्यापक मैदान में समा जाएंगे। (इब्ने माजा) कुछ काफिरों के बाजू और रानें पहाड़ के बराबर होंगी। (अहमद) इस दुनिया में अल्लाह तआला ने बिना किसी भेदभाव सब इंसानों को बड़ा खूबसूरत और सन्तुलित जिस्म प्रदान किया है, अगर किसी उचित जिस्म में कोई एक अंग भी अनुचित होता तो इंसान की शक्ल बड़ी भद्दी और खराब बन जाती। कल्पना कीजिए कि ५ या ६ फिट जिस्म के साथ अगर दस फिट लम्बे बाजू लगा दिए जाते या पेशानी पर एक फिट लम्बी नाक लगा दी जाती तो इंसान की शक्ल किस कद्र बदसूरत बल्कि डरावनी होती। मुमकिन है जहन्नम में काफिर की बनावट को इसी बेढंगे तरीके से बढ़ाकर इंतिहाई खराब व खौफनाक और डरावनी सूरत दे दी जाए।

इंसानी जिस्म में तकलीफ के एतिबार से जिल्द (या खाल) का हिस्सा सबसे ज़्यादा विवेकशील होता है यही वजह है कि काफिरों को जहन्नम में ज़्यादा से ज़यादा तकलीफ पहुंचाने के लिए जली हुई खाल को बार-बार बदलने का ज़िक्र कुरआन मजीद में खास तौर पर आया है। (देखें सूरह निसाः४) खाल को जब खींचा जाए तो किस कद्र तकलीफ होती है इसका अन्दाज़ा यूं लगाया जा सकता है कि बाजू या टांग की टूटी हुई हड्डी को जोड़ने के लिए खाल को मामूली से खींचना पड़ता है उसके दर्द से आदमी बिलबिला उठता है। उसी खाल को खींचकर जब इतना

Www.IslamicBooks.Website

बढ़ा दिया जाएगा जिसका ज़िक्र अहादी से मुबारका में मिलता है तो उससे काफिर को कितनी सख्त तकलीफ होगी। दुनिया में शायद इसकी कल्पना करना भी मुम्किन नहीं।

इतनी बड़ी आकृति के काफिर को जब बड़े-बड़े अज़दहे और बिच्छू बार-बार डसेंगे और उसका गोश्त नोचेंगे तो उनके ज़हर के भौतिक प्रभाव के कारण मदहोश, शिथिल, खून में रंगे और हांपते कांपते काफिर की सूरत की कल्पना कीजिए। अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

इंसान के अन्दर अपने जिस्म को उठाने की ताकत भी एक हद तक ही रखी गई है। जिस्म अगर गैर मामूली तौर पर मोटा हो जाए तो इंसान के लिए उठना बैठना और चलना फिरना इस कद्र मुश्किल हो जाता है कि ज़िन्दगी एक अज़ाब बन जाती है। और मोटापे की वजह से जिस्म में दूसरे बहुत से रोग उसके अलावा पैदा हो जाते हैं। जैसे दिल की बीमारियां, सांस की बिमारियां, नज़र की बिमारियां, शुगर की बीमारियां जहन्नम में काफिर की आकृति इस कद्र बढ़ाने से अन्य रोग अज़ाब की शक्ल में पैदा होंगे या नहीं यह तो अल्लाह ही बेहतर जानता है। लेकिन यह बात तो स्पष्ट है कि फरिश्ते गुरूज़ों और हथौड़ों से मारें या सांप बिच्छू काटें, काफिर हरकत तक नहीं कर सकेगा और अगर कभी फरिश्ते उसे ज़बरदस्ती एक जगह से दूसरी जगह चलाकर ले जाना चाहेंगे तो काफिर के लिए एक कदम उठाना इस कद्र मुश्किल होगा कि वह एक अलग अज़ाबे अलीम की शक्ल बन जाएगी।

काफिर जहन्नम में चींख चींख कर कहेंगे या अल्लाह! एक बार यहां से निकाल ले आगे फिर हम नेक बनकर रहेंगे। जवाब में इर्शाद होगाः "मज़ा चखो (अपने कुफ्र और शिर्क का) ज़ालिमों का यहां कोई मददगार नहीं। (सूरह फातिरः ३७) अल्लाह तआला हमें अपनी रहमत और कृपा और करम से जहन्नम के अज़ाब से पनाह दें, बेशक वह बड़ा दानी इनाम देने वाला, बादशाह, एहसान करने वाला

Www.IslamicBooks.Website

और रहम करने वाला है।

८. सख्त सर्दी का अज़ाबः जिस तरह आग इंसानी जिस्म को जला देती है उसी तरह सख्त सर्दी भी इंसानी जिस्म को जला देती है। इसलिए जहन्नम में सर्दी का अज़ाब भी होगा जहन्नम के उस वर्ग का नाम "ज़महरीर" है। ज़महरीर में किस कद्र सख्त सर्दी होगी। अतः उस सर्दी से तो बहरहाल कहीं ज़्यादा होगी जो इस दुनिया के किसी भी सर्द से सर्द क्षेत्र में दिसम्बर और जनवरी के महीनों में हो सकती है जिसका मुकाबला करने के लिए गर्म लिबास, कम्बल, लिहाफ, हिटर आग की अंगेठी गर्म से गर्म खाने पीने के सामान और न जाने किस किस चीज़ का प्रबन्ध किया जाता है जब भी ज़रा सी असावधानी बर्ती, इंसान को फौरन किसी न किसी रोग का शिकार बना देती है। सावधानी के बगैर नंगे बदन इंसान को दुनिया की सर्दी सिर्फ जिस्म कें अन्दरूनी सांस से पैदा होती है। (बुखारी) इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है सिर्फ जिस्म के अन्दरूनी सांस से पैदा होने वाली सर्दी अगर इंसान के लिए इस कद्र नाकाबिले बर्दाश्त है तो फिर जहन्नम के अन्दर सर्दी के तबके "ज़महरीरा" में इंसान की कैफियत क्या होगी?

अल्लाह तआला ने इंसान को बड़ा ही नर्म व नाजुक और विवेकशील जिस्म प्रदान किया है इस कद्र नर्म व नाजुक की सिर्फ ३५ और ३७ डिग्री सेन्टीग्रेड के बीच वह सेहतमन्द रहता है इस दर्जा गर्मी से कम या ज़्यादा दोनों बिमारी की निशानियां हैं। अगर जिस्म का टेम्प्रेचर ३५ से कम होकरी २६ डिग्री सेन्टीग्रेड तक पहुंच जाए तो उसकी मौत हो जाती है और अगर यह टेम्प्रचर सख्त सर्दी की वजह से जिस्म के किसी हिस्से में नकारात्मक ६.७५ डिग्री सेन्टहग्रेड (२० डिग्री फारन हाइट) तक पहुंच जाए तो जिस्म का वह हिस्सा सर्दी के कारण जल कर या गल कर फौरन अलग हो जाता है जिसे मेडिकल परीभाषा में (Frost Bite) कहा जाता है।

Www.IslamicBooks.Website

क्षण भर के लिए मान लिजिए कि ज़महरीरा में सिर्फ इसी कद्र सर्दी होगी जिससे जिस्म के अन्दर का टेम्प्रेचर नकारात्मक ६.७ डिग्री सेन्टीग्रेड (या २० डिग्री सेन्टीग्रेड फारन हाइट) तक पहुंच जाए तो उस अज़ाब की हालत यह होगी कि जिन्दा इंसान का जिस्म सर्दी की सख्ती से रेत की तरह बिखर कर कण-कण हो जाएगा और फिर उसे नये सिरे से जिस्म दिया जागा फिर सर्दी की सख्ती से उसका जिस्म चूरा चूरा हो जाएगा और फिर उसे जिस्म दे दिया जाएगा जब तक वह ज़महरीरा में रहेगा इसी अज़ाबे अलीम का शिकार रहेगा।

यह नतीजा सिर्फ साइंसी तथ्यों और अनुभवों की रोश्नी में निकाला गया है जबकि यह बात स्पष्ट है कि जहन्नम की आग तरह ज़महरीरा की सर्दी भी दुनिया की सर्दी से कहीं ज़्यादा सख्त होगी। ज़महरीरा की असल सर्दी में अज़ाब और प्रकोप की ठीक-ठीक स्थिती क्या होगी इसकी शायद हम इस दुनिया में कल्पना भी न कर सकें, लेकिन इस बात में किसी शक की गुंजाइश नहीं कि जहन्नम की आग हो या ज़महरीरा की सर्दी, काफिर और ज़िन्दगी पर मौत को वरीयता देंगे और बार-बार मौत मांगे गे और वह पुकारेंगे "ऐ मालिक! (दारोगा जहन्नम का नाम) (काश!) तेरा रब हमारा काम, तमाम ही करदे।" जवाब में इर्शाद होगाः "बेशक अब तुम इसी में रहोगे।" (सूरह जुख्रूफः ७७) अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों को अपने फ़ज़्ल व करम और एहसान से ज़महरीरा के अज़ाब से पनाह में रखे। वह यकीनन बड़ा बख्शने वाला दरगुज़र फरमाने वाला और अपने बन्दों पर रहम और शफकत करने वाला है।

६. कुरआन व हदीस में आग के अलावा जहन्नम में दिये जाने वाले अज़ाबों की बहुत सी किस्मों को जहां सामान्य उल्लेख किया गया है वहां कुछ गुनाहों के खास अज़ाबों का ज़िक्र भी किया गया है। लेकिन इसके साथ-साथ अल्लाह तआला ने यह बात भी इर्शाद फरमाई हैः "और इसी किस्म के कुछ दूसरे अज़ाब भी होंगे।" (सूरहः स्वादः ५८) कहीं

Www.IslamicBooks.Website

सिर्फ "दर्दनाक अज़ाब" और कहीं "कुछ दूसरे अज़ाब" या "अज़ाबे अलीम" या "अज़ाबे अज़ीम" क्या होंगे इसका इल्म सिर्फ अल्लाह तआला को ही है।

महसूस यह होता है कि जिस तरह जेल में वैसे तो मुज्रिमों की सज़ाएं निर्धारित होती है लेकिन कुछ नामी गिरामी मुज्रिमों के लिए कभी-कभी बड़े सिर्फ इतना ही कह देते हैं कि "फलां मुज्रिम को अच्छी तरह सबक सिखाया जाए" और जल्लाद खूब जानते हैं कि साहब क्या चाहते हैं और ऐसे मुज्रिमों को सबक सिखाने का क्या तरीका है। इसी तरह अल्लाह तआला कुफ़्र के बड़े बड़े अपराधियों को सकब सिखाने के लिए सिर्फ इतना इर्शाद फरमा देगा कि फलां फलां मुज्रिम को अज़ाबे अलीम दिया जाए। जहन्नम के दारोगा खूब जानते होंगे कि ऐसे बड़े काफिरों को अज़ाबे अलीम देने की कौन-कौन सी शक्लें हैं और जो मुज्रिम अज़ाबे अलीम के हकदार हैं उन्हें अज़ाबे अलीम कैसे देना है।

यह है वह जहन्नम और उसके अज़ाब जिनसे खबरदार करने के लिए अल्लाह के रसूल नज़ीर बनाकार भेजे गए और आप सल्ल० ने लोगों को आग से डराने में कोई कसर नहीं छोड़ी लोगों को बार-बार खबरदार कियाः "आग से बचो चाहे खजूर का एक टुकड़ा ही सदका देकर बचो और जो यह भी न पाए वह अच्छी बात ही कह कर बचे। (मुस्लिम) यानी आग से बचना इतना ज़रूरी है कि जिसके पास सदका खैरात करने के लिए कुछ भी न हो वह खजूर का टुकड़ा ही सदका करके बचे और जिसके के पास खजूर का टुकड़ा भी न हो वह अच्छी बात कहकर ही बचने की कोशिश करे। रसूले अकरम सल्ल० के आखिरी शब्द "जिसके पास खजूर का टुकड़ा भी न हो...." यह बताते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० आग से बचाने के लिए कितनी इच्छा और आरजू रखते थे। हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि० फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० हमें जहन्नम की आग से बचने की दुआ इस तरह सिखाते थे

Www.IslamicBooks.Website

जैसे कुरआन मजीद की सूरतें सिखाते। (नसाई)

हज़रत मालिक बिन दीना रह० फरमाते हैं कि अगर मेरे पास मददगार होते मैं उन्हें सारी दुनिया में मुनादी के लिए भेजता कि वह ऐलान कर दें "लोगो जहन्नम की आग से बचो, लोगो जहन्नम की आग से बचो।" सारी दुनिया में न सही लेकिन इतना तो कम से कम हममें से हर आदमी कर ही सकता है कि अपने बाल बच्चों को जहन्नम की आग से खबरदार कर दे अपने रिश्ते व नाते दारों को जहन्नमी आग से डरा दे, अपने दोस्तों मिलने वालों और पड़ोसियों को जहन्नम की आग से खबरदार करदे कि लोगो! आग से बचो चाहे खजूर का एक टुकड़ा ही दे कर और जिसके पास यह भी न हो वह अच्छी बातें कहकर बचे।

(मुस्लिम)

हद चाहिए सज़ा में.....!: जहन्नम की आग और उसमें विभिन्न किस्मों के अज़ाबों का अध्ययन करते वक्त आदमी के रौंगटे खड़े हो जाते हैं आप से आप आदमी जहन्नम से पनाह मांगने लगता है लेकिन उसके साथ साथ यह ख्याल भी आता है कि ज़िन्दगी भर के गुनाह चाहे कितने ही क्यों न हों बहरहाल उन गुनाहों की सज़ा के लिए एक हद होनी चाहिए और फिर वह ज़ात जो अपने बन्दों पर बड़ी ही दयावान और मेहरबान है वह सदैव के लिए इंसानों को कैसे और क्योंकर आग में डाल देगी?

इस सवाल का जवाब तलाश करने से पहले अल्लाह तआला के कानूनों जज़ा व सज़ा में से एक अहम कानून ज़हन नशीन कर लेना चाहिए। रसूले अकरम सल्ल० का इर्शाद मुबारक है: "जिस व्यक्ति ने लोगों को हिदायत की दावत दी उसे उन तमाम लोगों के बराबर सवाब मिलेगा जिन्होंने उसकी दावत पर अमल किया और उन लोगों के अपने सवाब में कोई कमी नहीं की जाएगी। इसी तरह जिसने लोगों को गुमराही की तरफ बुलाया उसे उन तमाम लोगों के गुनाहों के बराबर गुनाह मिलेगा

Www.IslamicBooks.Website

जिन्होंने उसकी दावत पर गुनाह किया जबकि गुनाह करने वालों के अपने गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जाएगा। (मुस्लिम) इस कानून की अधिक व्याख्या हाबिल और काबिल की घटना से भी हो जाती है जिसके बारे में आप सल्ल० का इर्शाद मुबारक हैः "दुनिया में कोई व्यक्ति ज़ुल्म से कत्ल नहीं किया जाता मगर आदम का पहला बेटा यानी काबिल (कातिल) भी उस गुनाह में शरीक होता है क्योंकि उसने सबसे पहले कत्ल का तरीका ईजाद किया था। (बुखारी व मुस्लिम) इस कानून के तहत एक काफिर को सिर्फ उसके अपने कुफ्र की ही सज़ा ही नहीं मिलेगी बल्कि उसकी औलाद और फिर औलाद की औलाद.... यहां तक कि कयामत तक उसकी नस्ल से जितने भी काफिर पैदा होंगे, उन तमाम काफिरों के कुफ्र की सज़ा उस पहले काफिर को मिलेगी जिसने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को मानने से इंकार कर दिया था जबकि उन तमाम काफिरों को अपने अपने कुफ्र की सज़ा भी मिलेगी। और यही हर उस काफिर के साथ होगा जिसने अपनी औलाद को कुफ्र की तालीम दी और कुफ्र पर कायम रखा इस उसूल के तहत हर काफिर के जुर्मों की सूची इतनी बढ़ी हुई और लम्बी नज़र आती है कि उसका जहन्नम में सदैव का ठीकाना न्याय के तकाज़ों के अनुसार स्पष्ट नज़र आता है। यह मामिला तो है एक जान के कुफ्र का, अगर कोई काफिर कुफ्र को सामूहिक आन्दोलन का रूप देकर किसी समाज, देश या पूरी दुनिया पर थोपने की कोशिश करता है तो यह संगठित संघर्ष उसके असल गुनाह यानी कुफ्र में वृद्धि का कारण बनेगा और यह वृद्धि इस बात पर निर्भर होगी कि इस संगठित संघर्ष के नतीजे में कितने लोग गुमराह हुए और इस तहरीक को बर्पा करने के लिए कितने और कैसे-कैसे जुर्म किय गए। जैसे लेनिन ने कम्युनिज़्म की गुमराही ईजाद की और फिर उस गुमराही को विभिन्न देशों में थोपने के लिए लाखों इंसानों को कत्ल किया विरोध करने वाले लाखों इंसानों पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े गए, शहर के शहर और बस्तियां की बस्तियां टैंकों तले रौंद दी गईं, मुस्लिम बहुल रियासतों में इस्लाम की राह

Www.IslamicBooks.Website

रोकने के लिए हर तरह के हथकंडे इस्तेमाल किए गए अल्लाह और रसूल का नाम लेने पर पाबन्दी, अज़ान पर पाबन्दी, नमाज़ पर पाबन्दी, कुरआन पर पाबन्दी, मसाजिद और मदारिस पर पाबन्दी उलमा और मशाइख मार डाले, ये सारे के सारे जुर्म लेनिन के गुनाहों में वृद्धि का कारण बनेंगे और इस तरह वह सिर्फ अपनी वंशीय नस्ल के काफिरों के कुफ्र का ही ज़िम्मेदार नहीं होगा बल्कि अरबों खरबों इंसानों की गुमराही का बोझ अपनी गर्दन पर लिए हुए कयामत के दिन आएगा। कत्ल व मार धाड़ और फसाद के जुर्मों की सूची इसके अलावा होगी। आखिर ऐसे इस्लाम दुश्मन और कट्टर काफिर के लिए जहन्नम से ज़्यादा उचित जगह और कौनसी हो सकती है।

मार्च १८४६ ई० में "महाराजा" गुलाब सिंह ने कशमीर खरीद कर अपना अधिपत्य जमाने की कोशिश की, तो दो मुसलमान सरदारों, मिली खान और सब्ज़ अली खान ने विरोध किया गुलाब सिंह ने दोनों सरदारों को उलटा लटका कर ज़िन्दा खालें खींचने का हुक्म दिया यह मंज़र इस कद्र भयानक था कि गुलाब सिंह का बेटा रंबीर सिंह सहन न कर सका और दरबार से उठकर चला गया। गुलाब सिंह ने उसे वापस बुलाकर कहा "अगर तुम्हारे अन्दर यह दृश्य देखने की हिम्मत नहीं तो तुम्हें उत्तराधिकारी से हटा दिया जएगा।" इस्लाम और मुसलमान दुश्मनी की इस तालीम और तरबियत का हिसाब जहन्नम की आग के सिवा और कौन चुका सकता है।

देश विभाजन के दौरान "लॉर्ड" माउंटेन बेटन "सर" पटेल, "हिज़ एक्सीलेंसी" नेहरू और गांधी ने इस्लाम दुश्मनी ने जिस तरह सोचे समझे मंसूबे बनाकर मुसलमानों को कत्ले आम करवाया, मुस्लिम औरतों की बे हुरमती करवाई। मासूम बच्चों को कत्ल करवाया, इसका बदला जब तक जहन्नम आग, जहन्नम के सांप और बिच्छू नहीं लेंगे जब तक उन बेगुनाह मरने वाले मुसलमानों, मुसलमान औरतों और मासूम मुसलमान

Www.IslamicBooks.Website

बच्चों के कलेजे कैसे ठंडे होंगे?

तो वह अलीम व खबीर ज़ात, जो इंसानों के दिलों में छुपी तमन्नाओं और आर्ज़ुओं तक से वाकिफ है जितनी-जितनी और जो-जो सज़ा काफिरों के लिए ठहराएगा वह ठीक-ठीक उसी सज़ा के मुस्तहिक होंगे न उससे कण बराबर कम होगी न ज़्यादा बल्कि न्याय के तकाज़ों के ठीक मुताबिक होगी और अल्लाह जो अपनी सारी सृष्टि के लिए बिला भेद भाव रहमान और रहीम है किसी पर कण बराबर जुल्म नहीं करेगा। "और तेरा रब किसी पर कण भर जुल्म नहीं करेगा। ?" (सूरह कहफः ४६)

अपने परिवार को जहन्नम की आग से बचाओः कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया हैः "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! बचाओ अपने आपको और अपने घर वालों को आग से जिसका ईधन इंसान और पत्थर हैं जिस पर तेज़ तर्रार और कठोर फरिश्ते मुकर्रर हैं अल्लाह तआला उन्हें जो भी हुक्म देता है उसकी अवज्ञा नहीं करते बल्कि जो हुक्म देता है वह पूरा करते हैं। (सूरह तहरीमः ६)

इस आयत में अल्लाह तआला ने दो बातों का स्पष्ट शब्दों में हुक्म दिया है।

१. अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ।

२. अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ।

घर वालों से मुराद बीवी और बच्चे हैं अर्थात हर आदमी अपने साथ अपने बीवी और बच्चों को भी जहन्नम की आग से बचाने का पाबन्द है यह अपने घर वालों से सच्ची खैर ख्वाही का तकाज़ा भी है और अल्लाह तआला के हुक्म की बजा आवरी भी है। अल्लाह तआला ने रसूले अकरम सल्ल० को जब यह हुक्म दियाः "यानी अपने करीबी रिश्ते दारों को जहन्नम की आग से डराओ" तो आप सल्ल० ने अपने कुंबे

Www.IslamicBooks.Website

और कबीले वलों को बुलाया उन्हें जहन्नम की आग से डाराया और आखिर में अपनी बेटी हज़रत फातिमा रज़ि० का नाम लेकर फरमायाः "ऐ फातिमा रज़ि० अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ, अल्लाह के मुकाबले में (कयामत के दिन) मैं तुम्हारे किसी काम नहीं आऊंगा।" (मुस्लिम) अपने रिश्तेदार व निकट वलों और कुंबे कबीले वालों को जहन्नम की आग से डराने के बाद अपनी बेटी को जहन्नम की आग से डराकर आप सल्ल० ने तमाम मुसलमानों को सचेत किया कि अपनी औलाद को जहन्नम की आग से बचाना ही मां बाप के कर्तव्य में से एक कर्तव्य है।

एक हदीस शरीफ में इर्शादे नब्वी सल्ल० है किः "हर बच्चे फितरत (इस्लाम) पर पैदा होता है उसके मां बाप उसे यहूदी, ईसाई और अग्नि पूजक बना देते हैं।" (बुखारी) अर्थात आम उसूल यही है कि मां बाप ही औलाद को यातो जन्नत की राह पर डालते हैं या जहन्नम की राह पर।

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में इंसान की बहुत सी कमज़ोरियों का ज़िक्र फरमाया है जैसे इंसान बड़ा ज़ालिम और नाशुक्रा है। (सूरह इब्राहीमः ३४) इंसान बड़ा जल्दबाज़ है। (सूरह बनी इसराईलः ११) वगैरह। दीगर कमज़ोरियों की तरह एक कमज़ोरी यह बताई गई है कि इंसान जल्द हासिल होने वाले फायदे को ज़्यादा महत्व देता है चाहे वह अस्थाई और थोड़ा ही क्यों न हो। जबकि देर से हासिल होने वाले फायदे की अवहेलना कर देता है चाहे वह हमेशा वाली और अधिक ही क्यों न हो। इर्शाद बारी तआला हैः "बेशक यह लोग जल्दी हासिल होने वाली चीज़ (यानी दुनिया) से मुहब्बत करते हैं और आगे आने वाला भारी दिन भुला देते हैं। (सूरह दहरः २७) यह इंसान की इसी फितरी कमज़ोरी का नतीजा है कि बहुत से मां बाप अपनी औलाद को दुनिया की अस्थाई ज़िन्दगी में उच्च पद, बाइज़्ज़त और बावकार मकाम दिलवाने के लिए

Www.IslamicBooks.Website

उच्च से उच्च शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था करते हैं चाहे उसके लिए इन्हें कितना समय लगे कितनी दौलत खर्च करनी पड़े और कितनी तकलीफ और मुसिबतें बर्दाश्त करनी पड़ें जबकि बहुत ही कम संख्या ऐसे मां बाप की है जो अपनी औलाद को आखिरत की हमेशा वाली ज़िन्दगी में उच्च पद बाइज़्ज़त और मान मर्यादा दिलवाने के लिए दीनी शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था करते हैं जिसकी प्राप्ती सांसारिक शिक्षा के मुकाबले में आसान भी है और दीनी व सांसारकि दोनों दृष्टि से मां बाप के लिए लाभदायक भी है।

सांसाररिक शिक्षा हासिल करने वाले बहुत से बच्चे अमली ज़िन्दगी में अपने मां बाप के बागी और खुदसर साबित होते हैं जबकि दीनी तालीम हासिल करने वाले बहुत से बच्चे अपने मां बाप के अज्ञापालक और सेवक साबित होते हैं। और आखिरत की दृष्टि से तो यकीनन वही औलाद मां बाप के लिए लाभदायक होगी जो नेक, मुत्तकी और दीनदार होगी। इन सारे तथ्यों को जानने और मानने के बावजूद निःसन्देह ९९ प्रतिशत संख्या उन लोगों की है जारे सांसारिक शिक्षा को दीनी शिक्षा पर वरियता देते हैं। आइए! इंसान की इस कमज़ोरी का एक और पहलू से अवलोकन करें।

मान लीजिए! किसी मकान को आग लग जाती है उस मकान के सारे लोग घर से बाहर निकल जाते हैं गलती से एक बच्चा मकान के अन्दर रह जाता है अन्दाज़ा कीजिए इस स्थिति में मां बाप की परेशानी की क्या हालत होगी? दुनिया की कोई व्यस्तता या मजबूरी जैसे कारोबार, मुलाज़मत हादसा या बीमारी वगैरह मां बाप का ध्यान बच्चे से हटा सकेगी? हरगिज़ नहीं, बच्चा जब तक आग से बचकर निकल नहीं आता मां बाप को पल भर के लिए चैन नसीब नहीं होगा। अपने बच्चे को आग से बचाने के लिए मां बाप को जान की बाज़ी तक लगानी पड़े तो वह भी लगा देंगे। कितने ताज्जुब की बात है कि इस अस्थाई ज़िन्दगी में तो हर

Www.IslamicBooks.Website

व्यक्ति का मस्तिष्क यह काम करता है कि उसे अपनी औलाद को हर किमत पर आग से बचाना चाहिए। लेकिन आखिरत में जहन्नम की आग से अपनी औलाद को बचाने की चिन्ता कम ही लोगों को हासिल होती है। सच फरमाया अल्लाह तआला नेः "मेरे बन्दों में से शुक्रगुज़ार कम ही होते हैं।" (सूरह सबाः १३)

बिला शुबह इंसान की यह कमज़ोरी उस आज़माइश का हिस्सा है जिसके लिए उसे दुनिया में भेजा गया है लेकिन अकलमन्द वही है जो उस आज़माइश की समझ हासिल कर ले। उस आज़माइश की समझ यही है कि इंसान अपने पालनहार व मालिक का हुक्म बिला चुं वरा तसलीम करले। अल्लाह तआला ने अहले ईमान को जहन्नम से बचने और अपने बीवी बच्चों को जहन्नम से बचाने का हुक्म दिया है तो ईमान का तकाज़ा यह है कि हर मुसलमान अपने आपको और अपने बीवी बच्चों को जहन्नम की आग से बचाने के लिए इस इज़तिराब और परेशानी से ६९ दर्जा ज़्यादा इज़तिराब और पेरशानी महसूस करे जिसमें हर व्यकित अपने आपको या अपनी बीवी बच्चों को इस दुनिया की आग से बचाने के लिए महसूस करता है। इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए हर मुसलमान को दो बातों की पाबन्दी हर किमत पर करनी चाहिए।

१. कुरआन व हदीस की तालीम की व्यवस्थाः जिहालत और अल्प ज्ञान चाहे दुनिया के मामले में या दीन के माले में, इंसान के नुक्सान और घाटे का कारण बनता है खुद अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इर्शाद फरमाया हैः "भला जो लोग इल्म रखते हैं और जो इल्म नहीं रखते दोनों बराबर हो सकते हैं?" (सूरह जुमरः ९)

यह आम मुशाहिदे की बात है कि जो आदमी आखिरत पर ईमान रखता है, हश्र के हालात से वाकिफ है, जन्नत की सदैव की नेमतों और जहन्नम के अज़ाब और इकाब का इल्म रखता है। उसकी ज़िन्दगी उस व्यक्ति की ज़िन्दगी से बिल्कुल अलग होगी जो सिर्फ रसमी तौर पर

Www.IslamicBooks.Website

आखिरत को मानता है लेकिन हश्र के हालात, जन्नत की सदैव वाली नेमतों और जहन्नम के अज़ाबों से अन्जान है। किताब व सुन्नत का इल्म रखने वाले लोग दूसरे लोगों के मुकाबले में ज़्यादा सच्चे, ईमान्दार, मुत्तकी और कदम-कदम पर अल्लाह तआला से डरने वाले होते हैं। इर्शादे रब्बानी हैः "हकीकत यह है कि अल्लाह के बन्दों में से सिर्फ ज्ञान (कुरआन व हदीस) रखने वाले लोग ही उससे डरते हैं।" (सूरह फातिरः २८) तो जो लोग अपनी औलाद को सांसारिक शिक्षा की खातिर कुरआन व हदीस की तालीम से महरूम कर देते हैं वे असल में अपनी औलाद की आखिरत बरबाद करके उन पर जुल्मे अज़ीम करते हैं और जो लोग अपनी औलाद को दुनिया की तालीम के साथ-साथ कुरआन व हदीस की तालीम से भी नवाज़ते हैं वे न सिर्फ अपनी औलाद की आखिरत संवार कर उन पर एहसाने अज़ीम कते हैं बल्कि खुद भी अल्लाह तआला की अदालत में पसन्दीदा होकर इनाम व इकराम के हकदार ठहरते हैं।

२. घर में इस्लामी माहौल की ज़रूरतः बच्चे की शख्सियत को कुरआन व सुन्नत की तालीम के सांचे में ढालने के लिए घर के अन्दर इस्लामी माहौल का कयाम बहुत ही अहम है पांच वक्त पाबन्दी से नमाज़ का एहतमाम करना, घर में आते जाते सलाम करना सच बोलने की आदत डालना, खाने पीने में इस्लामी आदाब का ख्याल रखना, सदका खैरात की आदत डालना, सोने जागने की दुआओं का एहतेमाम करना, संगीत, गाना, बजाना, तसावीर और फिलमी रिसाले, नंगी तसावीर पर अधारित अखबारात वगैरह से घर को पाक साफ रखना, झूठ, गीबत, गाली गलोच और लड़ाई झगड़े से बचना अंबिया किराम की घटनाएं पाक जीवन, कुरआनी किस्से, गज़वात, सहाबा किराम रज़ि० और सहाबियात की सीरत वगैरह पर मुशतमिल लिट्रेचर बच्चों को उपलब्ध करना, आपस में एक दूसरे से सद व्यवहार से पेश आना, ये सारी बातें ऐसी हैं जो बच्चे की शख्सियत तामीर करने में दुनियावी किरदार अदा करती हैं। लिहाज़ा जो मां बाप अपनी औलाद को जहन्नम की आग से बचाने की

Www.IslamicBooks.Website

ज़िम्मेदारी पूरी करना चाहते हैं उन पर लाज़िम है कि वे अपने बच्चों को कुरआन व हदीस की तालीम दिलवाने के साथ-साथ घर के अन्दर मुकम्मल इस्लामी माहौल भी उन्हें उपलब्ध करें।

एक गलतफहमी का निवारणः अल्लाह तआला के हुक्म की अवज्ञा करने के बाद शैतान जब रांदा दरगाह हुआ तो उसने अहद कियाः "ऐ मेरे रब! मैं इंसानों के लिए ज़मीन में बड़ी कशिश और ज़िनत पैदा करूंगा और सब को गुमराह करके छोड़ूंगा, सिवाए तेरे सच्चे बन्दों के।" (सूरह हिज्रः ३९) दूसरी जगह अल्लाह तआला ने शैतान के यह शब्द नकल फरमाए हैं। "मैं उन्हें (गुमराह करने के लिए) आगे पीछे और दाएं बाएं हर तरफ से घेरूंगा।" (सूरह आराफः १७) हकीकत यह है कि शैतान दिन रात हर इंसान के पीछे लगा हुआ है ताकि मौत से पहले पहले उसे किसी न किसी फितने में फंसाकर जन्नत की राह से हटाकर जहन्नम की राह पर डाल दे। इंसानों को गुनाह पर जमाए रखने और उनमें अल्प ज्ञान पैदा करने के लिए शैतान का सबसे ज़्यादा आकर्षक और खुशनुमा हथियार यह है कि अल्लाह बड़ा माफ करने वाला और दयावान है वह सक कुछ माफ कर देगा।

इसमें शक नहीं कि अल्लाह तआला की रहमत बहुत बड़ी है और अल्लाह तआला गुस्से पर गालिब है लेकिन इस रहमत की प्राप्ती के लिए भी अल्लाह तआला ने कायदे और उसूल कुरआन मजीद में स्पष्ट कर दिए हैं। इर्शादे बारी तआला हैः "और जो व्यक्ति तौबा कर ले और ईमान ले आए, अच्छे काम करे, फिर हिदायत पर जमा रहे, उसके लिए मैं बड़ा ही बख्शने वाला हूं। (सूरह ता०हा०: ८२) इस आयत में अल्लाह ताआला ने बख्शिश के लिए चार शराइत बताए हैं।

१. तौबा- अगर कोई व्यक्ति पहले कुफ्र और शिर्क में फंसा था तो कुफ्र और शिर्क से बाज़ आना लेकिन अगर कोई व्यक्ति काफिर या मुश्रिक नहीं वैसे बड़े गुनाह में फंसा था तो उसका बड़े गुनाहों से बाज़

Www.IslamicBooks.Website

आना और तर्क करना पहली शर्त है।

२. ईमान- सच्चे दिल से अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना और किताबों पर फरिश्तों पर और आखिरत पर ईमान लाना दूसरी शर्त है।

३. सद कर्म- अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने के बाद अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के अहकाम के मुताबिक जिन्दगी बसर करना। ज़िन्दगी के हर मामले में रसूले अकरम सल्ल० की सुन्नत मुबारका का अनुसरण करना तीसरी शर्त है।

४. इस्तकामत- अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की इताअत में अगर कोई मुसिबत या आज़माइश आए तो इस्तकामत इख्तियार करना चौथी शर्त है।

जो व्यक्ति उपरोक्त चार शर्तें पूरी करेगा उसके साथ अल्लाह तआला ने मगफिरत और बख्शिश का वायदा फरमाया है। यह है अल्लाह तआला का कानून और उसूल रहम फरमाने का और लोगों के गुनाह माफ करने का।

एक दूसरी जगह अल्लाह तआला ने तौबा का कायदा बयान फरताते हुए यह बात भी स्पष्ट की है कि तौबा उन लोगों की कबूल है जो अनजाने या भूल चूक से गुनाह करते हैं लेकिन जो लोग जान बुझ कर गुनाह करते चले जाएं उनके लिए मगफिरत नहीं बल्कि अज़ाबे अलीम है। "हां यह जान लो कि अल्लाह तआला पर तौबा की कबूलियत का हक उन्हीं लोगों के लिए है जो नादानी की वजह से कोई बुरा काम करते हैं और उसके बाद जल्द ही तौबा कर लेते हैं। ऐसे लोगों पर अल्लाह अपनी नज़रे इनायत से फिर मुतवज्जह हो जाता है और अल्लाह सारी बातों की खबर रखने वाला हकीम और दाना है। (और यह भी जान लो कि) तौबा उन लोगों के लिए नहीं जो बुरे काम किए चले जाते

Www.IslamicBooks.Website

हैं यहां तक कि जब उनमें से किसी की मौत का वक्त आ जाता है उस वक्त वह कहता है कि मैंने तौबा की और इसी तरह तौबा उन लोगों के लिए भी नहीं जो मरते दम तक काफिर रहें। ऐसे लोगों के लिए तो हमने अज़ाबे अलीम तेयार कर रखा है।" (सूरह निसाः १७-१८)

इस आयत में तीन बातें बड़ी स्पष्ट हैं:

१. गुनाहों से माफी सिर्फ उन लोगों के लिए है जो अनजाने में या भूलज चूक से गुनाह करते हैं।

२. जिन्दगी भर जानकर गुनाह करने वालों के लिए अज़ाबे अलीम है।

३. हालते कुफ्र में मरने वालों के लिए अज़ाबे अलीम है।

अहदे नबवी सल्ल० में जंगे तबूक के मौके पर हज़रत काअब बिन मालिक रज़ि०, हज़रत हिलाल बिन उमैया रज़ि० और हज़रत मुरारा बिन रबीअ रज़ि० से भूल से कोताही हुई। तीनों हज़रात ने तौबा व इस्तगफार किया, और अल्लाह ने उनकी तौबा कबूल फरमाली जब कि इसी जंग के मौके पर मुनाफिकीन ने जान कर अल्लाह के रसूल सल्ल० की अवज्ञा की। उन्होंने आप सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होकर क्षमा याचना की और रसूलुल्लाह सल्ल० को राज़ी करना चाहा तो अल्लाह तआला ने साफ फरमा दियाः "ये लोग सरासर गन्दगी हैं उनका ठिकाना जहन्नम है उन आमाल के बदले जो इन्होंने कमाए।" (सूरह तौबाः ५)

हज़रात सहाबा किराम रज़ि० में से बहुत से ऐसे थे जिन्हें रसूले अकरम सल्ल० ने बड़े स्पष्ट शब्दों में जन्नत की बशारत दुनिया में ही दे दी थी। जैसे अशरह मुबश्शरह, असहाबे बदर और असहाबे शजर, लेकिन इसके बावजूद वे अल्लाह की पकड़ से इस कदर खौफज़दह रहते थे कि जैसे ही आखिरत का ज़िक्र होता रोने लगते। हज़रत उसमान रज़ि० जैसा व्यक्ति जिसे रसूले अकरम सल्ल० ने एक बार नहीं कई बार

Www.IslamicBooks.Website

जन्नत की बशारत दी, कब्र का ज़िक्र होता तो इस कद्र रोते कि दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो जाती। हज़रत उमर रज़ि० जुमे के खुतबे में सूरह तकवीर की तिलावत फरमा रहे थे "जब अलिमत नफ्सुम मा अह ज़रत" (कयामत के दिन हर नफ्स को मालूम हो जाएगा कि वह क्या लेकर आया है) पर पहुंचे तो इस कद्र अल्लाह का भय गालिब आया कि आवाज़ निकलनी बन्द हो गई। हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० बिस्तर पर लेटते तो करवटें बदलते रहते नींद न आती और फरमाते "या अल्लाह! जहन्नम का भय मेरी नींद ले गया।" इसके बाद उठ बैठते और सुबह तक नमाज़ में रोते व गिड़गिड़ाते रहते।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फरमाते हैं कि सूरह नजम नाज़िल हुई तो सहाबा किराम रज़ि० ने यह आयत सुनी "क्या (कयामत) इन बातों पर तुम ताज्जुब करते तो, हंसते और रोते नहीं।" (आयत ५९-६०) तो इस कद्र रोए कि आंसू गालों पर बहने लगे। रसूल अकरम सल्ल० ने रोने की आवाज़ सुनी तो आप तशरीफ लाए और आप सल्ल० के भी आंसू जारी हो गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० सूरह मुतफ्फिफीन की तिलावत फरमा रहे थे जब इस आयत पर पहुंचे "कयामत के दिन सारे लोग रब्बुल आलमीन के सामने (जवाबदेही के लिए) खड़े होंगे।" (आयतः ६) तो इस कद्र रोए कि अपने आप पर काबू न रख सके और गिर पड़े हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० सूरह काफ की तिलावत फरमाते फरमाते जब इस आयत पर पहुंचे "और मौत की जांकनी हक लेकर आ पहुंची (ऐ इंसान) यह वही चीज़ है जिससे तू भागता था।" (आयत ९१) तो रोते-रोते हिचकी बंध गई।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० अपनी मौत की बिमारी में रोने लगे लोगों ने रोने की वजह पूछी तो फरमाया "मैं दुनिया के लिए नहीं रोता बल्कि इस लिए रोता हूं कि मेरा सफर लम्बा है और सामाने सफर बहुत कम है मैंने ऐसे टीले पर सुबह की जो जन्नत और ज़हन्नम की तरफ उड़ रहा है और मुझे कोई इल्म नहीं कि मेरी मंज़िल कौन सी है?

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू दरदा रज़ि० आखिरत के खौफ से फरमाया करते "काश मै। एक पौधा होता जिसे काट दिया जाता और जानवर चारा बना लेते।"

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि० फरमाया करते "काश मैं किसी टीले पर पड़ी हुई राख होता जिसे हवाएं उड़ाए लिए फिरतीं।

अल्लाह के हुजूर हिसाब किताब और फिर जहन्नम की अज़ाब की वजह से यह कैफिरयत सिर्फ चन्द एक की नहीं बल्कि सभी सहाबा किराम रज़ि० का मामला ऐसा ही था। अधिक हालात इस किताब के अध्याय "सहाबा किराम रज़ि० और जहन्नम" में देखें।

सवाल यह है कि क्या सहाबा किराम रज़ि० को यह पता नहीं था कि अल्लाह तआला गफूर और रहीम है? क्या सहाबा किराम रज़ि० को मालूम नहीं था कि अल्लाह तआला सारे गुनाह माफ कर सकता है? क्या सहाबा किराम रज़ि० नहीं जानते थे कि अल्लाह तआला की रहमत उसके गुस्से पर गालिब है? सब कुछ मालूम था बल्कि हम से कहीं बेहतर मालूम था लेकिन अल्लाह की महानता और जलाल का भय हर वक्त दिल में रहना इबादत है इर्शाद बारी तआला है: "लोगों से न डरो बल्कि सिर्फ मुझ ही से डरो अगर तुम वास्तव में मोमिन हो।" (सूरह आले इमरानः १७५) यही वजह है कि अल्लाह तआला के फरिश्ते भी उसके अज़ाब और पकड़ से डरते हैं रसूले अकरम सल्ल० भी अल्लाह के अज़ाब और पकड़ से डरते थे आप सल्ल० का इर्शाद मुबारक है: "अल्लाह की कसम मैं तुम सब लोगों से ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हूं।" (बुखारी) अल्लाह के रसूल सल्ल० तो अपनी दुआओं में अल्लाह का डर व खौफ तलब फरमाते थे। आप सल्ल० की दुआओं में से एक महत्वपुर्ण दुआ यह है: "ऐ अल्लाह! तू हमें इतना डर प्रदान कर जो हमारे और हमारे गुनाहों के बीच रूकावट बन जाए।" (तिर्मीज़ी) एक दुआ में रसूले अकरम सल्ल० ने अल्लाह के डर से खाली रहले वाले दिल से पनाह मांगी है "ऐ अल्लाह

Www.IslamicBooks.Website

मैं ऐसे दिल से तेरी पनाह चहता हूं जो तुझसे न डरे।"

ताबईन और तबअ ताबईन यानी खैरूल कुरून के सभी लोग अल्लाह के अज़ाब और पकड़ से बहुत ज़्यादा डरन वाले थे अल्लाह के अज़ाब व पकड़ से बेखौफ हो जाना ता अपने आप में बड़ा गुनाह है जिसका नतीजा अपने आपको हलाकत में डालना है। इर्शादे बारी ताआला हैः "अल्लाह की चाल से वही लोग बेखौफ होते हैं जो तबाह होने वाले हैं।" (सूरह आराफः ६६) अतः अल्लाह तआला की मग्फिरत और बख्शिश की उम्मीद उस व्यक्ति को रखनी चाहिए जो अल्लाह से डर कर ज़िन्दगी बसर करता है और जान बूझकर होने वाले गुनाहों से अल्लाह तआला की मगफिरत निरन्तर तलब करता है लेकिन जो व्यकित निरन्तर गुनाह किए चला जा रहा हौ और साथ-साथ यह समझ रहा है कि अल्लाह बड़ा गफूर और रहीम है उसे यकीन कर लेना चाहिए कि वह सरासर शैतान के धोखे का शिकार है जिसका अंजाम हलाकत और बरबादी के सिवा कुछ नहीं है।

कुछ मुद्दत के लिए जहन्नम में जाने वाले लोगः उपरोक्त शिर्षक से किताब में एक अध्याय शामिल किया गया है जिसमें उन मुसलमानों के जहन्नम में जाने का ज़िक्र है जो कुछ बड़े गुनाहों की वजह से पहले जहन्नम में जाएंगे ओर अपने गुनाहों की सज़ा भुगतने के बाद जन्नत में दाखिल होंगे।

उल्लिखित अध्याय के लिए हमने सिर्फ उन्हीं अहादीस का चयन किया है जिनमें रसूले अकरम सल्ल० ने स्पष्ट रूप से "दखलन्नार" (वह आदमी जहन्नम में दाखिल हुआ) जैसे शब्द इस्तेमाल फरमाए या उससे मिलते जुलते शब्द इस्ते माल फरमाए हैं ताकि किसी किस्म की गलतफहमी या भ्रम पैदा न हो। लेकिन इससे यह नतीजा नहीं निकाला जा सकता कि उन बड़े गुनाहों के अलावा और ऐसे गुनाह नहीं हैं जो जहन्नम में जाने का कारण बन सकते हैं।

Www.IslamicBooks.Website

"किताबुन्नार" मुरत्तब करने का मकसद सिर्फ यह है कि लोग जहन्नम के अज़ाब और इकाब से आगाह हों और उससे बचने की यथा सम्भव कोशिश करें इसके लिए ज़रूरी था कि लोगों को उन तमाम गुनाहों से भी आगह किया जाता जो जहन्नम में जाने का कारण बन सकते हैं इसके लिए हम किसी लम्बी बहस में पड़े बगैर इमाम ज़हबी रह० की किताब "किताबुल कबाइर" से बड़े गुनाहों की सूची दर्ज कर रहे हैं उम्मीद है अल्लाह के अज़ाबों ओर इकाबों से डरने वाले नेक और मत्तकी लोग इंशाअल्लाह इससे ज़रूर फायदा उठाऐंगे।

१. शिर्क करना

२. अकारण कत्ल करना

३. जादू करना और करवाना

४. नमाज़ तर्क करना

५. ज़कात अदा न करना

६. बिला शरअई कारण रमज़ान के रोज़े तर्क करना

७. हैसियत के बावजूद हज न करना

८. मां बाप की अवज्ञा करना

९. रिश्तों को काटना

१०. ज़िना करना

११. अमल कौमे लूत (हम जिन्सपरस्ती)

१२. सूद (सूद लेना, देना, सूदी मामले की किताबत करना और उसकी गवाही देना सब एक ही दर्जे के बड़े गुनाह हैं)

१३. यतीम का माल खाना

१४. अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के नाम झूठी बात मंसूब

Www.IslamicBooks.Website

करना

१५. मैदाने जिहाद से भागना

१६. हाकिम का जन्ता पर जुल्म करना उसे धोखा देना

१७. घमण्ड और गर्व करना

१८. झूठी गवाही देना

१९. झूठी कसम खाना

२०. जुआ खेलना

२१. पाक दामन औरत पर तोहमत लगाना

२२. माले गनीमत में बेईमानी करना

२३. चोरी करना

२४. डाका डालना

२५. शराब पीना

२६. जुल्म करना

२७. टैक्स वसूल करना

२८. हराम खाना

२९. आत्म हत्या करना

३०. झूठ बोलना,

३१. किताब व सुन्नत के खिलाफ फैसला करना

३२. रिश्वत लेना

३३. मर्दों औरतों को एक दूसरे के जैसा बनना

३४. दुर्वेश बनना

Www.IslamicBooks.Website

३५. हलाला निकालना और निकलवाना

३६. पेशाब से सावधानी न करना

३७. दिखावा और नुमाइश से काम लेना

३८. दुनिया हासिल करने के लिए इल्मे दीन सीखना और इल्मे दीन छुपाना

३९. बेइमानी करना

४०. ऐहसान जतलाना

४१. तकदीर का इंकार करना

४२. दूसरों के राज़ टटोलना

४३. चुगुलखोरी और गीबत करना

४४. लानत करना

४५. वायदा खिलाफी करना

४६. ज्योतिषी की तस्दीक करना

४७. पति से पत्नी का दुर्व्यवहार से पेश आना

४८. तस्वीर बनाना

४९. मातम और रोना धोना करना

५०. उद्दंडता करना

५१. गुलाम, लौंडी और बीवी से बद सुलूकी करना

५२. पड़ोसी को तकलीफ पहुंचाना

५३. आम मुसलमानों को तकलीफ देना

५४. किसी मुसलमान पर हमला करना

Www.IslamicBooks.Website

५५. तहबन्द टखनों के नीचे रखना

५६. मर्दों का रेशम और सोना ईस्तेमाल करना

५७. गुलाम का भागना

५८. गैरूल्लाह के नाम पर जानवर ज़बह करना

५९. सगे बाप के बजाए किसी दूसरे की तरफ निस्बत करना

६०. नाहक लड़ाई झगड़ा करना

६१. अपनी ज़रूरत से अधिक पानी दूसरे को न लेना देना

६२. नाप तौल में कमी करना

६३. अल्लाह की तदबीर से बे खौफ होना

६४. छोटे गुनाह पर आग्रह करना

६५. बिला शरअई कारण मुस्तकिल बिला जमाअत नमाज़ अदा करना

६६. गैर शरअई वसीअत करना

६७. किसी को धोखा और फरेब देना

६८. इस्लामी हुकूमत की जासूसी करना

६९. अस्हाबे रसूल को गाली देना - १

ये सारे गुनाह बड़े गुनाह हैं जिनमें से किसी एक का करना भी इंसान को जहन्नम में ले जाने के लिए काफी है लिहाज़ा जहन्नम से बचने के लिए ज़रूरी है किः

१. उपरोक्त तमाम बड़े गुनाहों से मुकम्मल बचा जाए।

२. अगर कभी इंसानी तकाज़े के तहत कोई बड़ा गुनाह हो जाए तो मालू होते ही फौरन अल्लाह तआला के हुजूर तौबा इस्तिगफार की

Www.IslamicBooks.Website

जाए और आइन्दा उस गुनाह के करीब न जाने का पुख्ता इरादा किया जाए।

३. अगर उस गुनाह में किसी आदमी का हक मारा गया होतो उसकी क्षतिपुर्ति की जाए या उससे माफी मांगी जाए। अगर किसी वजह से ऐसा मुमकिन न हो (जैसे वह व्यक्ति मर चुका हो) तो उसके हक में अधिकता से इस्तगफार किया जाए।

४. छोटे गुनाहों को माफ करने वाले नेक आमाल जैसे नफली नमाज़, नफली रोज़ा, नफली सदका व खैरात वगैरह अधिक किए जाएं। लेकिन यह बात याद रखनी चाहिए कि किसी भी छोटे गुनाह को जानकर बार-बार करना छोटे गुनाह को बड़ा बना देता है, जिसके लिए तौबा करनी ज़रूरी है। नेक आमाल के साथ स्वं माफ होने वाले छोटे गुनाह सिर्फ वही हैं जो बे सोचे समझे तौर पर इंसान से होते हैं। इनकी पाबन्दी करने के बाद अल्लाह तआला से पूर्ण उम्मीद रखनी चाहिए कि वह अपने फ़ज़्ल व करम से ज़रूरी जहन्नम के अज़ाब से बचाएगा और अपनी नेमतों भरी जन्नत में दाखिल फरमाएगा।

हस्बुना किताबुल्लाहि व सुन्नतु नबिय्यही- रसूल अकरम सल्ल० की वफात मुबारक से पहले अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल व करम से दीने इस्लाम की हर लिहाज़ से तकमील फरमादी। इर्शादे बारी तआला हैः "आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया है।" (सूरह माइदाः ३) खुद रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया हैः यानी "मैं एक स्पष्ट और रौशन शरीअत लेकर तुम्हारे पास आया हूं।" (मुसनद अहमद) एक दूसरी जगर इर्शादे नबवी सल्ल० हैः यानी "मेरी शरीअत की रात भी दिन की तरह रौशन है।" (इब्ने अबी आसिम) अर्थात इस दीन में अब न तो किसी वृद्धि की ज़रूरत है और न ही कोई बात उलझी और अस्पष्ट छोड़ी गई है।

अकीदों का मामला हो या इबादतों का, हुकूक का मामला हो या

Www.IslamicBooks.Website

समाज का, तर्गीब का मामला हो या तर्हीब का, सब चीज़ों के बारे में जितना कुछ बतलाना ज़रूरी था वह सब अल्लाह और उसके रसूल ने बतला दिया है। जन्नत की तर्गीब और जहन्नम से तर्हीब के लिए जिन जिन बातों की ज़रूरत थी वे सारी की सारी अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इर्शाद फरमा दी हैं। कुरआन मजीद का कोई पन्ना ऐसा नहीं जिस पर किसी न किसी सूरत में जन्नत व जहन्नम का ज़िक्र मौजूद न हो। कुरआन मजीद की ११४ सूरतों में से एक बड़ी तादाद ऐसी सूरतों की है जो सिर्फ हश्र, हिसाब किताब और जन्नत व जहन्नम के विषयों पर आधारित हैं। रसूले अकरम सल्ल० ने अहादीस में उनकी और व्याख्या और तफ्सीर दी है। इसके बावजूद हमारे यहां जन्नत और जहन्नम पर लिखी गई किताबों में तर्गीब या तर्हीब के लिए मन गढ़त किस्से कहानियां, बुजुर्गाने दीन के सपने, औलिया किराम के मुरकबे ओर मुकाशिफे और ज़ईफ और मौजू रिवायत बड़े एहतमाम से बयान की गई हैं। हमारे नज़दीक ये सारी चीज़ें शरीअते इस्लामिया में वृद्धि हैं जो सरासर बातिल और गुमराहकुन हैं इस तर्ज़े अमल में अल्लाह और उसके रसूल की स्पष्ट अवज्ञा और विरोध पाया जाता है इर्शादे बारी ताआला हैः "ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहो।" (सूरह हुजरातः १)

दीने इस्लाम की बुनियाद दो बड़ी स्पष्ट और रोशन चीज़ों पर है अल्लाह की किताब और रसूले अकरम सल्ल० की सुन्नत। हमारा अकीदा और ईमान इन दो चीज़ों से आग बढ़ने की हमें इजाज़त नहीं देता। न ही हम अपने अन्दर इतनी हिम्मत पाते हैं कि बुजुर्गाने दीन के सपनों, अकाबिरीन के मुराकबों और औलिया किराम के मुकाशिफों या फिर पैरोकारों, फकीरों के मन गढ़त किस्से कहानियों को लोगों के सामने अल्लाह का दीन बनाकर पेश करें और कयामत के दिन अल्लाह तआला की अदालत में मुज्रिम की हैसियत से पेश हों। "मैं अल्लाह की पनाह तलब करता हूं इस बात से कि जाहिलों में शामिल हो जाऊं।" अल्लाह के

Www.IslamicBooks.Website

रसूल सल्ल० ने उम्मत को खुद यह ताकीद फरमाई है कि गुमराही से बचने का सिर्फ एक ही तरीका है और वह यह है कि अल्लाह की किताब और मेरी सुन्नत को मज़बूती से थामें रखो। इर्शादे नबवी सल्ल० हैः यानी "मैं तुम्हारे बीच वह चीज़ छोड़े जा रहा हूं जिसे मज़बूती से थामे रखोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे और वह है अल्लाही की किताब और उसके नबी सल्ल० की सुन्त।" (मुस्तदरक हाकिम) हमने अल्लाह के रसूल सल्ल० का हुकम सुना और इताअत की। और निजात के लिए अल्लाह की किताब और उसके रसूल सल्ल० की सुन्नत हमारे लिए काफी है इसके अलवा किसी तीसरी चीज़ की तरफ हमें देखने की ज़रूरत नहीं है न हाजत। "हस्बुना किताबुल्लाहि व सुन्नत नबिय्यिही।"

पाठक! किताबुन्नार दरअसल किताबुल जन्नह का दूसरा हिस्सा है। जिसे पृष्ठ ज़्यादा होने कीर वजह से कम करना पड़ा। उम्मीद है इससे दोनों हिस्सों की अफादियत में कोई कमी नहीं आएगी। इन्शाअल्लाह। बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में आजिज़ाना विनती है कि वह किताबुल जन्नह और किताबुन्नार को तर्गीब और तर्हीब का बेहतरीन ज़रिया बनाकर लोगों के लिए लाभकारी बनाए। किताब के बेहतरीन पहलुओं को अपने फज़्ल व करम से शर्फे कबूलियत अता फरमाए और उसमें गलतियों और कोताहियों से दरगुज़र फरमाए। आमीन!

हर बार की तरह सेहत अहादीस के सिलसिले में शैख मुहम्मद नासिरूद्दीन अलबानी रह० की तहकीक से लाभ उठाया गया है हवाला जात के आखिर में नम्बर मौसूफ की कुतुब के दिए गए हैं।

आखिर में वाजिबुल ऐहतराम उलेमा किराम का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी समझता हूं जो "तफ्हीमुन्निसा" की तालीफ के दौरान मेरी रहनुमाई फरमाते रहते हैं और अपने कीमती मशवरों से नवाज़ते हैं। और अपने उन तमाम साथियों के लिए भी दुआ करता हूं जो इशाअते हदीस के इस अहम मंसूबे में पिछले पन्द्रह साल से कदम ब कदम साथ-साथ चल रहे

Www.IslamicBooks.Website

हैं। फ जज़ा कुमुल्लाहु अहसनुल जज़ा।

पाठक गण! अब आइए अपने बुज़ुर्ग व बरतर पाक रब के हुजूर जहन्नम से पनाह मांगने की दुआ करें बेशक व दुआऐं सुन्ने वाला है और कबूल फरमाने वाला है। इन्न रब्बी लसमीउद दुआ (३६-४१)

ऐ हमारे पैदा करने वाले जलील व करीम पाक रब! आप हमारे मालिक हम आपके मखलूक हैं, आप हमारे हाकिम हम आपके महकूम हैं, आप कादिरे मुतलम हम मजबूर व मगलूब हैं, आप बेनियाज़ और हम मोहताज हैं, आप गनी हम फकीर हैं, हमारी पेशानियां आपके हाथ में हैं हमारे फैसले आपके इख्तियार में हैं।

ऐ हमारे इज़्ज़त और महानता वाले रब! आपकी पनाह के अलावा हमरे लिए कोई पनाह नहीं। आपके सहारे के अलावा हमरे लिए कोई सहारा नहीं, आपके दर के अलावा हमारे लिए कोई दर नहीं। आपके आसताने के अलावा हमारे लिए कोई असताना नहीं, आपकी रहमत हमारे सफर का सामान और आपकी मगफिरत हमारी पूंजी है।

ऐ हमारे कुदरतों वाले, बरकतों वाले, खुबियों वाले, शानों वाले, बुलन्दियों वाले बड़ाइयों वाले पाक रब! आपने खुद ही बताया है कि जहन्नम बहुत ही बुरा ठिकाना है, इसका अज़ाब जान से चिमट जाने वाला है इसमें दाखिल होने वाला न ज़िन्दा रहेगा न मरेगा तो जिसे आपने जहन्नम में डाला वह रूसवा तो हो ही गया।

ऐ हमारे गफ्फार, सत्तार, रहमान, और रहीम रब! हमने अपने आप पर जुल्म किया है हम अपने तमाम छोटे और बड़े, खुले और छुपे, जानकर और अनजाने में, मालूम और नामालूम गुनाहों का इकरार करते हैं। और आपके अज़ाबों ओर इकाबों से डरत हैं आपकी जहन्नम से पनाह मांगते हैं और हर उस कौल और फेल से पनाह मांगते हैं जो जहन्नम से करीब ले जाने वला हो।

Www.IslamicBooks.Website

ऐ सलामती वाले, अमन देने वाले, गुनाह माफ फरमाने वाले, और दोषों की पर्दा पोशी फरमाने वाले रब! जिस तरह आपने इस दुनिया में अपनी रहमत से हमारी गुनाहों पर पर्दा डाल रखा है उसी तरह कयामत के दिन भी अपनी रहमत से हमरी गुनाहों पर पर्दा डाले रखना और अपनी रहमत से हमें उस दिन की ज़िल्लत और रूसवाई से महफूज़ रखना।

ऐ अर्शे अज़ीम के मालिक! आसमानों और ज़मीन के मालिक, रोज़े जज़ा के मालिक, शहंशाहों के शहंशाह, हकीमों के हकीम पाक रब! अगर आपने हम पर रहम न फरमाया तो फिर आपही बताएं कि हम पर कौन रहम फरमाएगा? अगर आपने हमारे गुनाह माफ न फरमाए तो हमारे गुनाह कौन माफ फरमाएगा? अगर आपने हमें पनाह न दी तो हमें कौन पनाह देगा? अगर आपने हमें जहन्नम से न बचाया तो हमें कौन जहन्नम से बचाएगा?

ऐ जिब्रील, मीकाईल, इसराफील और मुहम्मद सल्ल० के पाक रब! हम जहन्नम से आपकी पनाह मांगते हैं और आपकी रहमत से उम्मीद रखते हैं कि कयामत के दिन आप हमें निराश नहीं फरमाएंगे। "और मैं अल्लाह तआला से उम्मीद रखता हूं कि कयामत के दिन वह मेरी खता माफ फरमा देगा। (सूरह शुअराः ८२)

﴿وصلى الله على نبينا محمد و علىٰ آله و اصحابه وسلم تسليما كثيرا كثيرا﴾

मुहम्मद इकबाल कीलानी

Www.IslamicBooks.Website

اِثْبَاتُ وُجُوْدِ النَّارِ

जहन्नम के वजूद का सबूत

मसला १. रसूल अकरम सल्ल० ने अबू समामा अम्र बिन मालिक को जहन्नम में आंतें घसीटते देखा।

عن جابر رضی اللہ عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم قال (رایت ابا ثمامة عمرو بن مالک یجر قصبه فی النار)

رواه مسلم (۱)

हज़रत जाबिर रज़ि० नबी अकरम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने फरमायाः "मैंने अबू समामा अम्र बिन मालिक को जहन्नम में देखा कि वह अपनी आंतें जहन्नम में घसीट रहा था।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल कसूफ)

मसला २. कब्र में जहन्नमी को जहन्नम में उसका ठिकाना दिखाया जाता है।

عن ابن عمر رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (اذامات احدکم فانه یعرض علیه مقعده با لغداة والعشی فان کان من اهل الجنة فمن اهل الجنة وان کان من اهل النار فمن اهل النار) رواه البخاری (۲)

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "जब तुम में से कोई आदमी मर जाता है तो उसे सुबह व

Www.IslamicBooks.Website

शाम उसका ठिकाना दिखाया जाता है अगर जन्नती है तो जन्नत में (उसका ठिकाना उसे दिखाया जाता है) अगर जहन्नमी है तो जहन्नम में (उसका ठिकाना दिखाया जाता है)" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताब बदाउल खल्क, बाब माजा की सफतुल जन्नह)

Www.IslamicBooks.Website

اَبْوَابُ النَّارِ

जहन्नम के दरवाज़े

मसला ३. जहन्नम के सात दरवाज़े हैं।

मसला ४. तमाम जहन्नमी अपने अपने गुनाहों के मुताबिक खास दरवाज़ों से दाखिल होंगे।

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ • لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ (44-43:15)

(शैतान की पैरवी करने वाले) तमाम इंसानों के लिए जहन्नम की चेतावनी है जिसके सात दरवाज़े हैं। हर दरवाज़े के लिए जहन्नमियों में से एक हिस्सा खास कर दिया गया हैं (सूरह हिज्रः ४३-४४)

मसला ५. कयामत के दिन फरिश्ते जहन्नम के बन्द दरवाज़े खोल देंगे ताकि जहन्नमियों को अलग-अलग गिरोहों में दाखिल किया जा सके।

व्याख्या- आयत मसला १६२ के तहत देखें।

मसला ६. जहन्नमियों को जहन्नम में दाखिल करने के बाद जहन्नम के दरवाज़े सख्ती से बन्द कर दिए जाएंगे।

व्याख्या- आयत मसला १३३ के तहत देखें।

Www.IslamicBooks.Website

دَرَكَاتُ النَّارِ

जहन्नम के दरजात

मसला ७. जहन्नम के मुख्तलिफ दरजात हैं सबसे निचले दर्जे में कठोर अज़ाब होगा और ऊपर वाले दर्जे में सबसे कमतर दर्जे का अज़ाब होगा।

عن العباس بن عبد المطلب رضى الله عنه انه قال يا رسول الله صلى الله عليه وسلم هل نفعت ابا طالب بشيء فانه كان يحوطك و يغضب لك قال رسول الله صلى الله عليه وسلم (نعم هو فى ضحضاح من نار و لو لا انا لكان فى الدرك الا سفل من النار)

رواه مسلم (۱)

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल० अबू तालिब आपकी हिफाज़त करते थे और आप सल्ल० के लिए (दूसरे लोगों से) नाराज़ होते थे। क्या यह चीज़ उनके किसी काम आएगी?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "हां! अब वह जहन्नम के ऊपर के दर्जे में अगर मैं उनके लिए सिफारिश न करता वह जहन्नम के सबसे निचले दर्जे में होते।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाब शफाअतुन्नबी सल्ल० ला अबी तालिब)

मसला ८. मुनाफिक जहन्नम के सबसे निचले दर्जे में होंगे।

Www.IslamicBooks.Website

إِنَّ الْـمُـنَافِقِيْنَ فِىْ الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْراً
(145:4)

“यकीनन मुनाफिक जहन्नम के सबसे निचले दर्जे में होंगे और तुम किसी को उनका मददगार न पाओगे।” (सूरह निसाः १४५)

मसला ६. जहन्नम के दरजात मुखतलिफ गुनाहों के मुताबिक मुख्तलिफ अज़ाबों के लिए खास होंगे।

عن سمرة رضـى الـلـه عنه انه سمع النبى صلى الله عليه وسلم يقول(ان منهم من تا خذه النار الٰى كعبيه ومنهم من تاخذه الٰى حجزته ومنهم من تاخذه الٰى عنقه) رواه مسلم (۱)

हज़रत समरा रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने नबी अकरम सल्ल० को फरमाते हुए सुनाः “कुछ लोगों को आग टखनों तक जलाएगी, कुछ लोगों को कमर तक जलाएगी और कुछ लोगों को गर्दन तक जलाएगी।” इसे मुस्लिम ने रिवायत किया हैं (किताबुल जन्नह, बाब जहन्नम अआजनल्लाहु मिन्हा)

عن ابى هريرة رضـى الـلـه عـنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قـال(تـا كـل النار ابن آدم الا اثر السجود حرم الله على النار ان تاكل اثر السجود) رواه ابن ماجه (۲)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया “आग इब्ने आदम के सारे जिस्म को खाएगी लेकिन सजदा वाली जगह को नहीं खाएगी अल्लाह तआला ने आग पर सजदा वाली जगह को खाना हराम कर दिया है।” इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुज़ ज़ुहुद, बाब सफतुन्नार- २/३४६२)

मसला १०. जहन्नम का एक दर्जा “अल जहीम” (भड़कती हुई आग का गढ़ा) है।

Www.IslamicBooks.Website

فَأَمَّا مَن طَغَى • وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا • فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَى

(37-39:79)

"जिसने सरकशी की और दुनिया की ज़िन्दगी को वरियाता दी उसका ठिकाना भड़कती हुई आग का गढा होगा।" (सूरह नाज़िआत-३७-३९)

मसला ११. जहन्नम का दूसरा दर्जा "हुतम" (चकना चूर कर देने वाली) है।

كَلَّا لَيُنبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ • وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ • نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ (6-4:104)

"हरगिज़ नहीं वह व्यक्ति चकना चूर कर देने वाली जगह में फेंक दिया जाएगा। और तुम क्या जानो वह चकनाचूर कर देने वाली जगह कैसी है? अल्लाह की आग है खूब भड़कती हुई।" (सूरह हुमज़ह' ४-६)

मसला १२. जहन्नम का तीसरा दर्जा "हावियह" (गहरी खाई) है।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ • فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ • وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ • نَارٌ حَامِيَةٌ • (11-8:101)

"और जिनके पलड़े (मिज़ान) हलके होंगे उनकी जगह गहरी खाई होगी और तुम्हें क्या मालूम वह गहरी खाई क्या है? भड़कती हुई आग है।" (सूरह कारिअहः ८-११)

मसला १३. जहन्नम का चौथा दर्जा "सकरा" (सख्त झुलसा देने वाली) है।

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ • وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ • لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ • لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ (29-26:74)

"शीघ्र ही मैं उसे झूलसा देने वाली जगह में झौंक दूंगा तुम क्या जानो वह सख्त झुलसा देने वाली जगह क्या है? न बाकी रखे न छोड़े

Www.IslamicBooks.Website

खाल को (जलाकर) काला कर देने वाली है।" (सूरह मुदस्सिरः २६-२९)

मसला १४. जहन्नम का पाचवां दर्जा "लज़ा" (भड़की हुई आग की लपट) है।

كَلَّا إِنَّهَا لَظَى • نَزَّاعَةً لِّلشَّوَى • تَدْعُو مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى • وَجَمَعَ فَأَوْعَى (18-15:70)

"हरगिज़ नहीं, वह तो भड़कती हुई आग की लपट है जो सर और मुंह की खाल उधेड़ देगी, पुकार-पुकार कर अपनी तरफ बुलाएगी हर उस व्यक्ति को जिसने हक से मुंह मोड़ा, पीठ फेरी, माल जमा किया और खर्च न किया।" (सूरह मआरिजः १५-१८)

मसला १५. जहन्नम का छठा दर्जा "सईर" (दहकती हुई आग) है।

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ • فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحَابِ السَّعِيرِ (11-10:67)

"(कयामत के दिन) काफिर कहेंगे काश हम (दुनिया में) गौर से सुनते या समझते तो आज इस दहकती हुई आग के सज़ावारों में शामिल न होते। इस तरह वे अपने कुसूरों का खुद एतराफ करेंगे। लानत है उन जहन्नमियों पर।" (सूरह मुल्कः १०-११)

मसला १६. जहन्नम के एक दर्जे का नाम "ज़महरीर" है जिसमें सख्त सर्दी का अज़ाब दिया जाएगा।

व्याख्या- हदीस मसला १२५ के तहत देखें।

मसला १७. जहन्नम की एक वादी का नाम "वयलून" (हलाकत और बर्बादी) भी है।

انطَلِقُوا إِلَى ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ • لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ • إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ • كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ • وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ

Www.IslamicBooks.Website

لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (34-30:70)

"(काफिरों को हुक्म होगा) चलो उस साए की तरफ जो तीन शाखों वाला है न ठण्डक पहुंचाने वाला न आग की लपेट से बचाने वाला यह आग महल जैसी बड़ी-बड़ी चिंगारियां फेंकेगी। (यूं महसूस होगा) जैसे ज़र्द रंग के ऊंट हैं हलाकत और बर्बादी होगी उस दिन झुठलाने वालों के लिए।" (सूरह मुरसलातः ३०-३४)

Www.IslamicBooks.Website

سَعَةُ النَّارِ

जहन्नम की व्यापकता

मसला १८.जहन्नम में गिरने वाला पत्थर ७० साल के बाद जहन्नम की तह तक पहुंचता है।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال کنا مع رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا سمع وجبة فقال النبی صلی الله علیه وسلم (أتدرون ما هٰذا؟) قال قلنا الله ورسوله اعلم قال (هٰذا حجر رمی به فی النار منذ سبعین خریفا فهو یهوی فی النار الآن حتٰی انتهٰی الٰی قعرها)

رواه مسلم (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा हम रसूले अकरम सल्ल० के साथ थे कि अचानक धामाके की आवाज़ सुनी। रसुलुल्लाह सल्ल० ने पुछाः "जानते हो यह आवाज़ कैसी थी?" रावी कहते हैं, हमने अर्ज़ किया "अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं।" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया " यह एक पत्थर था जो आज से ७० साल पहले जहन्नम में फेंका गया था और वह आग में गिरता चला जा रहा था और अब वह जहन्नम की तह तक पहुंचा है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताब सफतुल मुनाफिकीन, बाब जहन्नम अआज़नल्लाहु मिन्हा)

मसला १९. जहन्नम की गहराई ज़मीन व आसमान के बीच के फासले से ज़्यादा है।

Www.IslamicBooks.Website

عن ابی هریرة رضی اللـه عنه انه سمع رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول(ان العبد لیتکلم با لکلمةینزل بها فی النار ابعد ما بین المشرق وبین المغرب) رواه مسلم (۲

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि उन्हों ने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है ''बन्दा कोई ऐसी बात ज़बान से कह देता है जिसकी वजह से वह जहन्नम में ज़मीन व आसमान के बीच के फासले से भी नीचे चला जाता है।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।'' (किताबुज़्ज़ुहद, बाब हिफज़ल्लिसान)

मसला २०. जहन्नम के एक अहाते की दो दीवरों के बीच चालीस साल की मुसाफत का फासला है।

عن ابی سعید ن الخدری رضی الله عنه عن رسو ل الله صلی اللـه علیه وسلم انه قال (لسرادق النار اربعة جدر بین کل جدار مثل اربعین سنة) رواه ابو یعلیٰ (۱) (صحیح)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया ''जहन्नम का अहाता चार दिवारों पर आधारित है हर दीवार के बीच ४० साल की मुसाफत का फासला है।'' इसे अबू याला ने रिवायत किया है। (अबू याला जुज़ सानी, हदीस १३५८)

मसला २१. जहन्नम में एक-एक काफिर के कान और कंधे के बीच ७० साल की मुसाफत का फासला होगा।

عن مجاهد رضی الله عنه قال لی ابن عباس رضی الله عنهما أتدری ما سعة جهنم؟قلت لا قال اجل والله ما تدری ان بین شحمة اذن احدهم وبین عاتقه مسیرة سبعین خریفا یجری فیها اودیة القیح والدم قلت انهار؟ قال لا بل اودیة . رواه ابو نعیم فی الحلیة (۲) (صحیح)

हज़रत मुजाहिद रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास

Www.IslamicBooks.Website

रज़ि० ने मुझसे पूछा "क्या तुम्हें जहन्नम की व्यापकता का इल्म है?" मैंने अर्ज़ किया "नहीं", हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फरमाया "हां, वल्लाह तुम नहीं जानते (सूनो) जहन्नमी के कान की लो से लेकर कंधे तक ७० साल की मुसाफत का फासला होगा जिसके बीच पीप और खून की वादियां बहेंगी।" मैंने अर्ज़ किया "क्या नहरें बहेंगी? हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फरमाया "नहीं बल्कि वादियां (नहरों से ज़्यादा व्यापक) बहेंगी।" इसे अबू नईम ने हुलिया में रिवायत किया है। (शरहुस्सुन्नह, जुज़ १५, पृ० २५१)

मसला २२. अल्लाह तआला की सारी मखलूक (जिन्न व इंसान) में से हज़ार में से ६६६ आदमी जहन्नम में जाएंगे।

व्याख्या- हदीस मसला २४२ के तहत देखें।

मसला २३. एक हज़ार आदमियों में से ६६६ जहन्नम में जाने के बावजूद जहन्नम में जगह बच जाएगी और जहन्नम और लोगों को मुतालबा करेगी।

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ (30:50)

"कयामत के दिन हम जहन्नम से पूछेंगे क्या तू भर गई है? वह कहेगी, कया और कुछ है?" (सूरह काफः ३०)

عن انس بن مالک رضی اللہ عنه ان النبی صلی الله علیه وسلم قال(لا تزال جهنم تقول هل من مزید حتی یضع فیها رب العزة تبارک وتعالی قدمه فتقول قط قط وعزتک ویزوی بعضها الی بعض) رواه مسلم (۱)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के नबी सल्ल० ने फरमाया "जहन्नम मुसलसल कहती रहेगी कुछ और है कुछ और है?" यहां तक कि रब्बुल इज़्ज़त तबारक व तआला अपना कदम मुबारक जहन्नम में डालेंगे तब जहन्नम कहेगी "तेरी इज़्ज़त की

Www.IslamicBooks.Website

कसम! बस-बस'' और जहन्नम सिमट जाएगी। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल जन्ह वन्नार, बाब जहन्नम अआज़नल्लाहु मिन्हा)

मसला २४. जहन्नम को मैदाने हश्र में लाने के लिए चार अरब नव्वे करोड़ फरिश्ते मुकर्रर होंगे।

عن عبدا لله بن مسعود رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم (يؤتىٰ بجهنم يو مئذ لها سبعون الف زمام مع كل زمام سبعون الف ملک يجرونها) رواه مسلم (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरामया ''कयामत के दिन जहन्नम (मैदाने हश्र में) लाई जाएगी तो उसकी ७० हज़ार बांगे होंगी और हर बाग को ७० हज़ार फरिश्ते खींच रहे होंगे। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल जन्नत वन्नार, बाब जहन्नम अआज़नल्लाहु मिन्हा)

Www.IslamicBooks.Website

هَوْلُ عَذَابِ النَّارِ

जहन्नम के अज़ाब की हौलनाकी

(اجارنا الله تعالیٰ منها بفضله و کرمه واحسا نه فانه لا یملکها الا هو)

मसला २५. काफिरों को दूर से आते देखकर जहन्नम क्रोध से ऐसी आवाज़ें निकालेगी जिससे काफिरों के होश बिगड़ जाएंगे।

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا (12:25)

"जब जहन्नम काफिरों को दूर से देखेगी तो काफिर जहन्नम का गुस्से से चीखना चिल्लाना सुन लेंगे।" (सूरह फुरकानः १२)

व्याख्या- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि जब जहन्नमी को जहन्नम की तरफ घसीटा जाएगा तो जहन्नम चीखेगी और एक ऐसी झुरझुरी लेगी कि तमाम हश्र वाले भयभीत हो जाएंगे। हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ि० फरमाते हैं कि जब जहन्नम गुस्से से थरथराएगी, शोर व गुल चींख व पुकार और जोश व खरोश शुरू करेगी तो उस वक्त तमाम मुकर्रब फरिश्ते और सम्मानित अंबिया कांपने लगेंगे। यहां तक कि खलीलुल्लह हज़रत इब्राहीम अलैहि० भी अपने घुटनों के बल गिर पड़ेंगे और अर्ज़ करेंगे या अल्लाह! मैं आज सिर्फ तुझ से अपनी जान की सलामती चाहता हूं और कुछ नहीं मांगता। एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० हज़रत रबीअ रज़ि० वगैरह को साथ लेकर जा रहे थे कि रास्ते में सुरह फुरकान की यह आयत निकली उसे सुनते ही हज़रत रबीअ रज़ि० बेहोश होकर गिर पड़े। चारपाई पर डालकर उन्हें घर पहुंचाया गया। सुबह से लेकर दोपहर तक हज़रत अब्दुल्लाह बिन

Www.IslamicBooks.Website

मसऊद रज़ि० उनके पास बैठे रहे लेकिन उन्हें होश न आया। (इब्ने कसीर)

मसला २६. जब काफिर जहन्नम में डाले जाएंगे तो जहन्नम बदले की सख्ती से ऊंची खौफनाक आवाज़ निकालेगी।

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقاً وَهِيَ تَفُورُ • تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ

(8-7:67)

"जब काफिर जहन्नम में फेंके जाएंगे तो वह जहन्नम के दहाड़ने की हौलनाक आवाज़ सुनेंगे। जहन्नम जोश खा रही होगी, ऐसा मालूम होगा कि गुस्से के मारे अभी फट जाएगी।" (सूरह मुल्क : ७-८)

मसला २७. जहन्नम काफिरों से बदला लेने के लिए सख्त बेचैन होगी।

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَاداً • لِلطَّاغِينَ مَآباً • لَابِثِينَ فِيهَا أَحْقَاباً

(32-21:78)

"बेशक जहन्नम घात की जगह है सरकशों का ठिकाना वही है। उसमें वे सदियों पड़े रहेंगे।" (सूरह नबाः २१-२३)

मसला २८. जहन्नम की आग भड़काने के लिए अल्लाह तआला ने ऐसे फरिश्ते मुकर्रर कर रखें हैं जो निहायत तेज़ तर्रार, बेरहम और कठोर हैं। उन फरिश्तों की तादाद १९ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَاراً وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ (6:66)

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो अपने आपको और अपने घर वलों को उस आग से बचाओ जिसका ईधन इंसान और पत्थर होंगे। जिस पर

Www.IslamicBooks.Website

निहायत तेज़ तर्रार और कठोर फरिश्ते मुकर्रर होंगे। जो कभी अल्लाह के हुक्म की अवज्ञा नहीं करते जो हुक्म उन्हें दिया जाता है उसे बजा लाते हैं।" (सूरह तहरीमः ६)

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ (30:74)

"जहन्नम पर १६ फरिश्ते मुकर्रर हैं।" (सूरह मुद्दस्सिरः ३०)

मसला २६. जहन्नम का अज़ाब देखते ही काफिरों के चेहरे काले सियाह हो जाएंगे।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُواْ السَّيِّئَاتِ جَزَاء سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَّا لَهُم مِّنَ اللّهِ مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعاً مِّنَ اللَّيْلِ مُظْلِماً أُوْلَـئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خَالِدُون (27:10)

"जिन लोगों ने गुनाह किए हैं उन्हें गुनाह के मुताबिक ही बदला दिया जाएगा। अपमान व तिरस्कार उन पर छाई होगी। उन्हें अल्लाह तआला से बचाने वाला कोई नहीं होगा। उनके चेहरों पर ऐसी अंधियारी छायी होगी जैसे रात के सियाह के पदे उन पर पड़े हुए हों। ये लोग आग वाले हैं, जिसमें वे हमेशा रहेंगे।" (सूरह यूनुसः २७)

मसला ३०. जहन्नमियों की खाल जब जल जाएगी तो फौरन दूसरी खाल पैदा कर दी जाएगी ताकि अज़ाब के क्रम में ठहराओ न आए।

إِنَّ الَّـذِيْـنَ كَـفَـرُواْ بِـآيَـاتِـنَـا سَـوْفَ نُـصْلِيْهِمْ نَاراً كُلَّمَا نَضِجَتْ جُـلُـودُهُـمْ بَـدَّلْـنَاهُمْ جُلُوداً غَيْرَهَا لِيَذُوقُواْ الْعَذَابَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَزِيْزاً حَكِيْما (56:4)

"बेशक वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को मानने से इंकार किया है उन्हें हम यकीनन आग में झोंकेंगे। जब उनके बदन की खाल गल जाएगी तो उसकी जगह दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि वे अज़ाब का खूब मज़ा चखें। अल्लाह गालिब भी है और हिकमत वाला भी।"

Www.IslamicBooks.Website

(सूरह निसाः ५६)

मसला ३१. जहन्नम के अज़ाब से तंग आकर जहन्नमी मौत मांगे गे लेकिन मौत नहीं आएगी।

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَاناً ضَيِّقاً مُقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوراً ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوراً وَاحِداً وَادْعُوا ثُبُوراً كَثِيراً (14-13:25)

"जब काफिर हाथ पांव बांधकर जहन्नम में एक तंग जगह ठूसे जाएंगे तो अपनी मौत को पुकारने लगेंगे। (उस वक्त उनसे कहा जाएगा) आज एक मौत तो नहीं बहुतसी मौतों को पुकारो।"

(सूरह फुरकानः १३-१४)

मसला ३२. जहन्नम की आग जैसे ही धीमी होने लगे गी तो फरिश्ते उसे फौरन भड़का देंगे।

وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَن يُضْلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاء مِن دُونِهِ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْماً وَصُمّاً مَّأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرا (97:17)

"जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसे वह गुमराह करे उसके लिए तुम अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को हामी व मददगार नहीं पा सकते। उन लोंगों को हम कयामत के दिन अंधे, गुंगे और बहरे बनाकर मुंह के बल खींच लाएंगे। उनका ठिकाना जहन्नम है जब कभी उसकी आग धीमी होने लगेगी हम उसे और भड़का देंगे।" (सूरह बनी इस्राईलः ६७)

मसला ३३. जहन्नमियों के अज़ाब में पल भर के लिए भी कमी नहीं की जाएगी।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَى عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ (36:35)

Www.IslamicBooks.Website

"और जिन लोगों ने कुफ़्र किया है उनके लिए हजन्नम की आग है न उनका किस्सा पाक किया जाएगा कि मर जाएं न उनके लिए जहन्नम के अज़ाब में कोई कमी की जागी।" (सूरह फातिरः ३६)

मसला ३४. जहन्नम का अज़ाब देखकर तमाम अंबिया किराम अल्लाह तआला से सिर्फ अपने बचाव की विनती करेंगे।

व्याख्या- मसला हदीस ३१३ के तहत देखें।

मसला ३५. जहन्नम का अज़ाब जान को चिमट जाने वाला होगा।

وَالَّذِيْنَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَاماً • إِنَّهَا سَاءتْ مُسْتَقَرّاً وَمُقَاما (66-65:25)

"अल्लाह के बन्दे (दुनिया में) दुआ मांगते हैं ऐ हमारे रब! हमें जहन्नम के अज़ाब से बचाले उसका अज़ाब तो जान का लागू है वह तो बड़ा ही बुरा ठिकाना और बहुत ही बुरी जगह है।" (सूरह फुरकानः ६५-६६)

मसला ३६. सारी ज़िन्दगी दुनिया की बड़ी-बड़ी नेमतों से लाभान्वित होने वाला व्यक्ति जहन्नम की एक झलक देखते ही दुनिया की सारी नेमतों को भूल जाएगा।

عن انس بن مالک رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (یوتیٰ بانعم اهل الدنیا من اهل النار یو القیٰمة فیصبغ فی النار صبغة ثم یقال: یا ابن آدم هل رأیت خیرا قط؟ هل مر بک نعیم قط؟ فیقول:لا والله یا رب'ویوتی با شد الناس بؤسا فی الدنیا من اهل الجنة فیصبغ صبغة فی الجنة'فیقال له:یا ابن آدم هل رأیت بؤسا قط ؟هل مر بک شدة قط ؟فیقول لا والله یا رب'ما مر بی من بؤس قط 'ولا رأیت شدةقط) رواه مسلم (ا)

"हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

Www.IslamicBooks.Website

सल्ल० ने फरमाया "कयामत के दिन ऐसे व्यक्ति को लाया जाएगा जिसका जहन्नम मं जाना तय हो चुका होगा। दुनिया में उसने बहुत ज़्यादा भोगविलास किया होगा। उसे दोज़ख में एक डुबकी दी जागी और उससे पूछा जाएगा ऐ आदम के बेटे! क्या दुनिया में तूने कोई नेमत देखी, कभी दुनिया में तुम्हारा सुख वैभव से वास्ता पड़ा?" वह कहेगा "ऐ मेरे रब, तेरी कसम! कभी नहीं।" फिर एक ऐसे आदमी को लाया जाएगा जो जन्नती होगा लेकिन दुनिया में बड़ी कष्टदायक ज़िन्दगी बसर की होगी उसे जन्नत में एक डुबकी दी जाएगी और उससे पूछा जाएगा "आदम के बेटे! कभी दुनिया में तूने कोई कष्ट देखा या रंज व गम से कभी तुम्हारा वास्ता पड़ा?" वह कहेगा "ऐ मेरे रब, तेरी कसम! कभी नहीं। मुझे तो न कभी रंज व गम से वास्ता पड़ा न कोई दुख या तकलीफ देखी।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल मुनाफिकीन, बाब फिल कुफ्फार)

मसला ३७. जहन्नम में मौत नहीं होगी, मौत होती तो जहन्नमी जहन्नम के अज़ाब से घबराकर मर जाते।

عن ابی سعید رضی الله عنه یرفعه قال (اذا کان یوم القیٰمة اتی بالموت کا لکبش الاملح فیوقف بین الجنة والنار فیذ بح وهم ینظرون فلو ان احدا مات فرحا لمات اهل الجنة ولو ان احدا مات حزنا لمات اهل النار.) رواه الترمذی (صحیح)

"हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूल अकरम सल्ल० ने फरमायाः "कयामत के दिन मौत एक चितकबरे मेंढे के रूप में जन्नत और जहन्नम के बीच खड़ी की जाएगी और उसे ज़ब्ह किया जाएगा। जन्नती और जहन्नमी लोग उसे देख रहे होंगे। अगर खूशी से मरना मुम्किन होता तो जन्न्ती रखुशी से मर जाते और अगर गम से मरना मुम्किन होता तो जहन्नमी गम से मर जाते।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (अबवाब सफतुल जन्नह, बाब माजा फी खुलद अहलिल जन्नह -२/२०७३)

Www.IslamicBooks.Website

شِدَّةُ حَرِّ النَّارِ

जहन्नम की आग की सख्ती

(اللهم انا نعوذ بک من حر النار بفضلک ومنک وکرمک وآنت
اکرم الاکرمین وارحم الرحمن واجود الاجودین)

मसला ३८. जहन्नम के आग का पहला शोला ही काफिर के जिस्म का सारा गोश्त पोस्त हड्डियों से अलग कर देगा।

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُون (104:23)

''आग उनके चेहरों को चाट जाएगी और उनके जबड़े बाहर निकल आएंगे।'' (सूरह मोमिनून: १०४)

كَلَّا إِنَّهَا لَظَى • نَزَّاعَةً لِّلشَّوَى (15-16:70)

''हरगिज़ नहीं वह भड़कती हुई आग है जो गोश्त पोस्त को चाट जाएगी।'' (सूरह मआरिज: १५-६)

''मसला ३९. जहन्नम की आग इंसान को न ज़िन्दा रहने देगी न मरने दगी।''

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ • لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ • لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَر
(29-27:74)

''तुम क्या जानो वह जहन्नम क्या है न बाकी रखेगी न छोड़ेगी खाल तक जला डालेगी।'' (सूरह मुद्दस्सिर: २७-२९)

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَى • ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى
(13-11:87)

Www.IslamicBooks.Website

"नसीहत कबूल करने से गुरेज़ वही करेगा जो अत्यन्त भाग्यहीन ओर बड़ी आग में जाने वाला है जहां न मरेगा न ज़िन्दा रहेगा।"

(सूरह आलाः ११-१३)

मसला ४०. नारे जहन्नम के शोले की एक मामूली चिंगारी बहुत बड़े किले के बराबर होगी।

انطَلِقُوا إِلَى ظِلٍّ ذِي ثَلاثِ شُعَبٍ • لا ظَلِيلٍ وَلا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ • إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ • كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ (33-30:77)

"चलो (उस धुवें के) साय की तरफ जो तीन शाखों वाला है न ठंडक पहुंचाने वाला न आग की लपेट से बचाने वाला। वह आग किले जैसी बड़ी-बड़ी चिंगारियां फेंकेगी (उन चिंगारियों के टुकड़े ऐसे होंगे) जैसे ज़र्द रंग के ऊंट।" (सूरह मुरसलातः ३०-३३)

मसला ४१. नारे जहन्नम मुसलसल भड़कने वाली आग है जो कभी सर्द न होगी।

فَأَنذَرْتُكُمْ نَاراً تَلَظَّى (14:92)

"तो मैंने तुम्हें भड़कती हुई आग से खबरदार कर दिया है।"

(सूरह लैलः १४)

تَصْلَى نَاراً حَامِيَةً (4:88)

"काफिर भड़कती हुई आग में दाखिल होंगे।"

(सूरह गाशियाः ४)

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ • فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ • وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ • نَارٌ حَامِيَةٌ (11-8:101)

"और जिसके पलड़े हलके होंगे उसकी जगह गहरी खाई होगी तुम क्या जानो वह गहरी खाई क्या है? वह भड़कती हुई आग है।"

Www.IslamicBooks.Website

(सूरह कारिअहः ८-११)

मसला ४२. नारे जहन्नम जैसे ही सर्द होने लगेगी, जहन्नम के दारोगा उसे फौरन भड़का देंगे।

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا (97:17)

"जब कभी जहन्नम की आग धीमी होने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।" (सूरह बनी इसराईलः ९७)

मसला ४३. नारे जहन्नम अपने अंदर आने वाले हर इंसान को चकना चूर कर देगी।

كَلَّا لَيُنبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ • وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ • نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ • الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ • إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ • فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ (9-4:104)

"हरगिज़ नहीं बल्कि (हराम माल इकटठा करने वाला व्यक्ति) चकना चूर कर देने वाली आग में फेंक दिया जाएगा। तुम क्या जानो वह चकना चूर करने वाली जगह क्या है? अल्लाह की आग है, खूब भड़काई हुई जो दिलों पर चढ़ती चली जाएगी। मुज्रिमों को बड़े-बड़े खम्बों में (बांध कर) ऊपर से बन्द कर दी जाएगी।" (सूरह हुमज़हः ४-९)

मसला ४४. नारे जहन्नम का ईधन पत्थर और इंसान हैं।

فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ

(24:2)

"उस आग से बचो जिसका ईधन इंसान और पत्थर होंगे वह आग काफिरों के लिए तैयार की गई है।"

मसला ४५. जहन्नम की आग दुनिया की आग से ६९ दर्जे ज़्यादा गर्म है ओर उसके हर हिस्से में गर्मी की इतनी ही कठोरता है जितनी

Www.IslamicBooks.Website

दुनिया की आग में है।

عن ابی هريرة رضـی الـلـه عـنـه ان النبی صلی الله عليه وسلم قـال(نـار كـم هٰـذه التـی يـوقـد ابـن آدم جـزء من سبعين جزء من حر جهـنـم)قـالـوا والـلـه ان كانت لكافية يا رسول الله قال (فا نها فضلت عليها بتسعة و ستين جزء كلها مثل حرها) رواه مسلم (ا)

"हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमायाः "तुम्हारी यह (दुनिया की) आग जिसे आदम की सन्तान जलाती है जहन्न्म की आग की गर्मी का सत्तरवां हिस्सा है।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "वल्लाह या रसूलल्लाह! (इंसान को जलाने के लिए तो यही दुनिया की) आग काफी थी।" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया " लेकिन वह तो दुनिया की आग से ६८ दर्जे ज़्यादा गर्म है ओर उसका हर हिस्सा इस दुनिया के बराबर गर्म है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल जन्नह व सफतन नईमहा बाब जहन्नम अअज़नल्लाहु मिन्हा)

मसला ४६. जहन्नम का दारोगा जहन्नम की आग लगातार दहका रहा है।

عن سمرة رضـی الـلـه عـنـه قال قال النبی صلی الله عليه وسلم (رأيـت الـلـيـلـةرجـلـيـن اتيانی قا لا الذی يو قدالنار ما لک خازن النار وانا جبريل وهٰذا ميكا ئيل) رواه‌البخاری.

"हज़रत समरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "मैंने आज रात सपना देखा है जिसमें दो व्यक्ति मेरे पास आए और दोनों ने कहा कि यह जो आग भड़का रहा है जहन्नम का दारोगा मालिक है। मैं जिब्रील हूं और यह मीकाईल हैं।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताब बदाउल ख्ल्फ, बाब ज़िकरूल मलाइका)

मसला ४७. अगर लीोग जहन्नम की आग देख लें तो हंसना छोड़

Www.IslamicBooks.Website

दें, बीवियों से मिलने की इच्छा छोड़ दें, शहर की सुख भरी ज़िन्दगी छोड़कर जंगलों में जा बसें और हर वक्त आग से अल्लाह की पनाह तलब करते रहें।

عن ابی ذر رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (انی اری مالا ترون واسمع مالا تسمعون ان السمآء اطت وحق لها ان تئط ما فیها موضع اربع اصابع الا وملک واضع جبهته ساجدا لله والله لو تعلمون ما اعلم لضحکتم قلیلا ولبکیتم کثیرا وما تلذذتم با لنسآء علی الفرشات ولخرجتم الی الصعدات تجارون الی الله) رواه ابن ماجه (۲) (حسن)

"हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "मैं वह चीज़ें देखता हूं जो तुम नहीं देखते और वह कुछ सुनता हूं जो तुम नहीं सूनते। बेशक आसमान चरचरा रहा है और उसे चरचराने ही चाहिए क्योंकि उसमें कहीं भी एक बालिश्त भर जगह ऐसी नहीं जहां किसी फरिश्ते का सर सज्दा में न हो। वल्लाह! अगर तुम वे बातें जान लो जो मैं जानता हूं तो कम हंसो और ज़्यादा रोओ। बिस्तरों पर औरतों से आनन्दित होना छोड़ दो और अल्लाह की पनाह तलब करने जंगलों और मरूस्थलों की तरफ निकल जाओ।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुज़ जुहद, बाबुल जिज़्न वल बका)

व्याख्या- मुसनद अहमद की रिवायत में है कि सहाबा किराम रज़ि० ने मालूम किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! आपने क्या देखा है?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "मैंने जन्नत और जहन्नम की आग देखी है।

मसला ४८. जहन्नम की आग की लो भी बर्दाश्त करना इंसान के बस की बात नहीं।

عن جابر بن عبدالله رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی

Www.IslamicBooks.Website

الله عليه وسلم (لقد جئ با لنار وذلكم حين رأيتمونى تا خرت مخافة ان يصيبنى من لفحها) رواه مسلم (۱)

"हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहतें हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "(नमाज़ कसूफ के दौरान) जहन्नम मेरे सामने लाई गई और यह उस वक्त लाई गई जब तुमने (दौराने नमाज़) मुझे (अपनी जगह से) पीछे हटते देखा। मैं (उस वकत) इस डर से पीछे जहटा कि कहीं मुझे जहन्नम की आग की लो न लग जाए।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल कसूफ)

मसला ४६. गर्मियों के मौसम में सख्त गर्मी सिर्फ जहन्नम की आग की भाप से पैदा होती है।

عن ابى هريرة رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال (اذا شتد الحر فا بر دوا با لصلا ة فان شدة الحر من فيح جهنم واشتكت النار الى ربها فقالت يا رب!اكل بعضى بعضا فاذن لها بنفسين 'نفس فى الشتآء ونفس فى الصيف اشد ما تجدون من الحر واشد ما تجدون من الزمهرير) رواه البخارى (۲)

"हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल० ने फरमाया "जब सख्त गर्मी होतो (जुहर की) नमाज़ ठंडे वक्त पढ़ो क्यों कि गर्मी की सख्ती जहन्नम की भाप की वजह से है। जहन्नम ने अपने रब से शिकायत की ऐ मेरे रब ! गर्मी की सख्ती की वजह से मेरा एक हिस्सा मेरे दूसरे हिस्से को खा रहा है। अल्लाह तआला ने (उसके बाद) उसे (साल में) दो मर्तबा सांस लेने की इजाज़त दी एक सांस सर्दियों में (अन्दर की तरफ) एक सांस गर्मियों में (बाहर की तरफ)। तुम लोग (गर्मियों में) जो सख्त गर्मी पाते हो (वह उस सांस की वजह से है) और (सर्दियों में) सख्त सर्दी जो तुम पाते हो वह उसी सांस की वजह से है।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताब मवाकीतुस्सलात, बाबुल अबराद बिज़ जुहर फी शिद्दतुल हर)

Www.IslamicBooks.Website

मसला ५०. बुखार जहन्नम की भाप की वजह से होता है।

عن عائشة رضى الله عنها عن النبى صلى الله عليه وسلم قال (الحمىٰ من فيح جهنم فا بر دوها با لمآء) رواه البخارى

हज़रत आईशा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "बुखार जहन्नम की भाप से आता है। लिहाज़ा उसे पानी से ठंडा करो।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताब बदाउल खल्क, बाब सफतुन्नार)

मसला ५१. जहन्नम की आग की कल्पना ज़ेहन में रखने वाला व्यक्ति कभी आराम की नींद नहीं सो सकता।

عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم (ما رأيت مثل النار نام ها ربها ولا مثل الجنة نا م طا لبها) رواه الترمذى (حسن)

"हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया "मैंने जहन्नम से भागने वाले किसी व्यक्ति को (आराम की नींद) सोते नहीं देखा न ही जन्नत के किसी इच्छुक को (आराम की नींद) सोते देखा है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

मसला ५२. जहन्नम की आग लगातार भड़काने की वजह से सुर्ख होने के बजाए एक दम सियाह हो चुकी है।

عن ابى هريرة رضى الله عنه انه قال أترونها حمراء كنار كم هذا؟ لهى اسود من القار .رواه مالک (٣) (صحيح)

"हज़रत अबू हुरैहरह रज़ि० फरमाते हैं "क्या तुम जहन्नम की आग को दुनिया की आग की तरह सूर्ख समझते हो? वह तारकोल से भी ज़्यादा सियाह है।" इसे मालिक ने रिवायत हिया है। (शरहुस्सुन्नह किताब जामेअ, बाब माजा की सफा जहन्नम- १५/२४०)

Www.IslamicBooks.Website

اَهْوَنُ عَذَابِ النَّارِ

जहन्नम का सबसे हल्का अज़ाब

(اجارنا الله تعالیٰ منها بکرمه ومنه وبیده الخیر کله)

मसला ५३. जहन्नम का सबसे हलका और कमतर दर्जे का अज़ाब यह होगा कि जहन्नमी के पांव में आग की जूतियां पहनाई जाएंगी जिससे उसका दिमाग़ खौलने लगेगा।

عن ابن عباس رضی الله عنهما ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (اهون اهل النار عذابا ابو طالب وهو منتعل بنعلین یغلی منهما دماغه) رواه مسلم (۱)

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "जहन्नम का सबसे हल्का अज़ाब अबू तालिब को होगा और उन्हें आग की दो जूतियां पहनाई जाएंगी जिससे उनका दिमाग खौलेगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाब शिफाअतुन नबी सल्ल० ला अबी तालिब)

عن ابی سعید ن الخدری رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (ان ادنیٰ اهل النار عذابا ینتعل بنعلین من نار یغلی دماغه من حرارة نعلیه) رواه مسلم (۲)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया " जहन्नम में सबसे हल्का अज़ाब उस आदमी को होगा जिसे आग की जुतियां पहनाई जाएंगी जिससे उसका दिमाग खौलने लगेगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाब शिफाअतुन नबी सल्ल० ला अवी तालिब)

Www.IslamicBooks.Website

मसला ५४. कमतर दर्जे का अज़ाब देने के लिए कुछ मुज्रिमों के पांव के नीचे आग के अंगारे रख दिये जाएंगे।

عن النعمان بن بشير رضى الله عنه يخطب وهو يقول سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول (ان اهون اهل النار عذابا يوم القيمة لرجل يوضع فى اخمص قدميه جمرتان يغلى منهما دماغه) رواه مسلم (ا)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० ने खुतबा देते हुए यह बात कही कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है कि "कयामत के दिन जिस व्यक्ति को सबसे हल्का अज़ाब दिया जाएगा उसके पांव के तलवों के नीचे आग के दो अंगारे रख दिए जाएंगे जिससे उसका दिमाग (हडियां की तरह) खौलेगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाब शिफ़ाअतुन नबी सल्ल० ला अबी तालिब)

Www.IslamicBooks.Website

حَالُ اَهْلِ النَّارِ

जहन्नमियों का हाल

(اعاذنا الله تعالٰی من حالهم بمنه و کرمه انه علٰی ما یشآء قدیر)

मसला ५५. जहन्नम के अज़ाब की वजह से जहन्नमी ऊंची-ऊंची खौफनाक आवाज़ें निकालेंगे और ऐसा शोर व गुल होगा कि कानों पड़ी आवाज़ें सुनाई नहीं देंगी।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ (100:21)

"जहन्नम में काफिर फुंकारे मारेंगे और हाल यह होगा कि वहां कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं देगी।" (सूरह अंबियाः १००)

मसला ५६. जहन्नम में जहन्नमियों को न तो मौत ही आएगी न उनके अज़ाब में कोई कमी की जाएगी।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا كَذٰلِكَ نَجْزِىْ كُلَّ كَفُوْرٍ (36:35)

"और जिन लोगों ने कुफ्र किया है उनके लिए जहन्नम की आग है न उनका किस्सा पाक किया जाएगा कि मर जाएं न उनके लिए जहन्नम के अज़ाब में कोई कमी की जाएगी।" (सूरह फातिरः ३६)

मसला ५७. जहन्नमियों के जिस्म की खाल जैसे ही गल सड़ जाएगी उसकी जगह नई खाल पैदा कर दी जाएगी ताकि वे मुसलसल अज़ाब में मुब्तला रहें।

Www.IslamicBooks.Website

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُواْ بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَاراً كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ جُلُوداً غَيْرَهَا لِيَذُوقُواْ الْعَذَابَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَزِيْزاً حَكِيْما (56:4)

"जिन लोगों ने हमारी आयतों का इंकार किया है उनहें हम जल्द ही आग में झोंक देंगे जैसे ही उनके जिस्म की खाल गल सड़ जाएगी वैसे ही हम उसकी जगह दूसरी खाल पैदा कर देंगे ताकि वे खूब अज़ाब का मज़ा चखें। बेशक अल्लाह अपने (इरादे पर) गालिब और हिकमत वाला है।" (सूरह निसाः ५६)

मसला ५८. जहन्नमियों के चेहरे काले सियाह होंगे।

व्याख्या- आयत मसला २६ के तहत देंखें।

मसला ५६. जहन्नमियों के चेहरे की खाल जली होगी और दांत बाहर निकले हुए होंगे।

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كَالِحُون (104:23)

"आग जहन्नमियों के चेहरे की खाल चाट जाएगी और उनके जबड़े बाहर निकल आएंगे।" (सूरह मोमिनूनः १०४)

मसला ६०. जहन्नम में काफिर का एक दांत उहुद पहाड़ के बराबर होगा।

मसला ६१. जहन्नम में काफिर की खाल की मोटाई तीन दिन की मुसाफत के बराबर होगी।

عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم (ضرس الكافر او ناب الكافر مثل احد و غلظ جلده مسيرة ثلاث) رواه مسلم (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूललुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "काफिर का दांत या उसकी केचली (जहन्नम में) उहुद पहाड़ के

Www.IslamicBooks.Website

बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई तीन दिन की मुसाफत के बराबर होगी।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल जन्नह व सफतु नई महा बाब जहन्नत अआज़नल्लाहु मिन्हा)

मसला ६२. कुछ काफिरों की दाढ़ उहुद पहाड़ से भी बड़ी होगी और उनका बाकी जिस्म भी इसी हिसाब से बड़ा होगा।

व्याख्या- हदीस मसला १५६ के तहत देखें।

मसला ६३. जहन्नम में काफिर के दोनों कन्धों के बीच का फासला तीव्र गति सवार की तीन दिन की मुसाफत के बराबर होगा।

व्याख्या- हदीस मसला १५७ के तहत देखें।

मसला ६४ कुछ काफिरों के कान और कन्धे के बीच ७० साल का फासला होगा और उनके जिस्म में खून और पीप की वादियां बह रही होंगी।

व्याख्या- हदीस मसला २१ के तहत देखें।

मसला ६५. जहन्नम में काफिर की खाल की मोटाई ४२ हाथ (६३ फिट) होगी एक दांत उहुद पहाड़ के बराबर होगा और उसके बैठने की जगह मक्का और मदीना के बीच मुसाफत के बराबर होगी। (यानी ४१० किलोमीटर)।

व्याख्या- हदीस मसला ५६ के तहत देखें।

मसला ६६. जहन्नमियों का एक बाजू "बैज़ा" पहाड़ के बराबर और रान "वरकान" पहाड़ के बराबर होगी।

व्याख्या- हदीस मसला १६० के तहत देखें।

मसला ६७. कुछ काफिरों का जिस्म इतना बड़ा कर दिया जाएगा कि वह विशाल और व्यापक जहन्नम के एक कोने में समा जाएंगे।

Www.IslamicBooks.Website

व्याख्या- हदीस मसला १६१ के तहत देखें।

मसला ६८. घमण्डी लोगों को जहन्नम में चीटियों की तरह तुच्छ जिस्म दिया जाएगा।

عن عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده رضى الله عنهم عن النبى صلى الله عليه وسلم قال (يحشر المتكبرون يوم القيٰمة امثال الذر فى صور الرجال يغشاهم الذل من كل مكان يساقون الىٰ سجن فى جهنم يسمٰى بولس تعلوهم نار الانيار 'يسقون من عصارة اهل النار طينة الخبال) رواه الترمذى (١) (حسن)

हज़रत अम्र बिन शौएब रज़ि० अपने बाप से और वे अपने दादा रज़ि० से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया "कयामत के दिन घमण्ड करने वालों को चीटियों की तरह इंसान की शक्ल में उठाया जाएगा उन पर हर तरफ से ज़िल्लत छाई हुई होगी। जहन्नम में वे एक जेल की तरफ हांके जाएंगे जिसका नाम "बोलस" होगा। बदतरीन आग उन्हें घेर लेगी और उन्हें जहन्नमियों के जिस्मों से रिसने वाला (पीप और खून वगैरह) पीने को दिया जाएगा जिसे तीनतुल खबाल कहा जाता है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (अबवाब सफतुल कयामत-२/२०२५)

मसला ६९. जहन्नम के अज़ाब से जहन्नमी जलकर कोयले की तरह सियाह हो जाएंगे।

عن ابى سعيدن الخدرى رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال(يدخل اهل الجنة الجنة واهل النار النار ثم يقول الله تعالٰى اخرجوا من كان فى قلبه مثقال حبة من خردل من ايمان فيخرجون منها قدامتحشو ا وعادواجمما فيلقون فى نهر الحيا او الحياة شك مالك فينبتون كما تنبت الحبة فى جانب السيل'الم تر انها تخرج صفر أملتوية؟) رواه البخارى (٢)

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "हिसाब किताब के बाद जन्नती जन्नत में चले जाएंगे जहन्नमी ज़हन्नम में चले जाएंगे फिर अल्लाह तआला (जब चाहेगा) इर्शाद फरमाएगा जिस आदमी के दिल में राई के दाने के बराबर ईमान है उसे भी जहन्नम से निकाल दो चुनांचे जहन्नमी निकाले जाएंगे और वे (जलकर कोयले की तरह) सियाह हो चुके होंगे। फिर व नहर बरसात या नहर हयात (हदीस के रावी इमाम मालिक रह० को शक है कि नहर बरसात है या नहर हयात) में डाले जाएंगे जिससे वे यूं (नये सिरे से) उग आएंगे जैसे किसी नदी के किनारे दाना उग आता है। (फिर आप सल्ल० ने फरमाया) क्या तुमने देखा नहीं कि (नदी के किनारे) दाना (कैसा खूबसूरत) ज़र्द-ज़र्द और लिपटा हुआ उगता है?" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुर्रिकाक, बाब सफतुल जन्नह वन्नार, हदीस २८४)

मसला ७०. जहन्नमी जहन्नम में इस कद्र आंसू बहाएंगे कि उनमें कश्तियां चलाई जा सकेगी।

عن عبد الله بن قيس رضى الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال(ان اهل النار ليبكون حتى لو اجريت السفن فى دموعهم لجرت وانهم ليبكون الدم يعنى مكان الدمع) رواه الحاكم (حسن) (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन कैस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "जहन्नमी इस कद्र रोएंगे कि अगर उनके आंसुओं में कश्तियां चलाई जाएं तो चलने लगें। (आंसू खत्म हो जाएंगे तो) जहन्नमी खून के आंसू बहाएंगे यानी पानी के आंसूओं की जगह।" इसे हाकिम ने रिवायत किया है। (सिलसिला अहादीस सहीहा, जुज़-४, हदीस-१६७६१)

Www.IslamicBooks.Website

طَعَامُ اَهْلِ النَّارِ وَ شَرَابُهُمْ

जहन्नम वालों का खाना पीना

(اجارنا الله تعالٰی منها بمنه وفضله انه جواد کریم ملک بر ر ؤف رحیم)

ا. طَعَامُ اَهْلِ النَّارِ

जहन्नमियों के खाने

मसला ७१. जहन्नमियों को जहन्नम में ये चार किस्म के खाने दिए जाएंगे।

१. थूहर	زقوم
२. कांटेदार घास	ضریع
३. ज़ख्मों के धोवन की गन्दगी	غسلین
४. हलक में फंस-फंस कर उतरने वाला खाना	ذاغصة

زَقُّوم

थूहर

मसला ७२. बदबूदार, कड़वा, कांटेदार, थूहर (ज़क्कूम) जहन्नमियों का खाना होगा, जो जहन्नम की तह में उगता है और उसके शगुफे ज़हरीले सांपों के सर जैसे हैं।

मसला ७३. थूहर खाने के बाद खौलता हुआ पानी जहन्नमियों को

Www.IslamicBooks.Website

पीने के लिए दिया जाएगा।

मसला ७४. दावत का घर-जहन्नम में दावत के बाद जहन्नमियों को उनकी अपनी अपनी जगह पर वापस पहुंचा दिया जाएगा।

أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ • إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ • إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ • طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ • فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِؤُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ • ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ • ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ (68-62:37)

"यह दावत अच्छी है या ज़क्कूम का पेड़? हमने उस पेड़ को ज़ालिमों के लिए फितना बनाया है। ज़क्कूम वह पेड़ है जो जहन्नम की तह में उगता है उसके शगूफे ऐसे हैं जैसे सांपों के सर, जहन्नमी यही (थूहर का पेड़) खाएंगे और उसी से अपना पेट भरेंगे। खाने के बाद पीने के लिए उन्हें खौलता हुआ पानी मिलेगा और उसके बाद उनकी वापसी उसी आतिश पेड़ की तरफ होगी (जहां से पानी पिलाने के लिए लाए गऐ थे।) (सूरह साफ्फात ६२-६७)

मसला ७५. ज़क्कूम का ज़हर पेट में ऐसी तकलीफ देगा जैसे खौलता हुआ पानी जोश मार रहा है।

إِنَّ شَجَرَةَ الزَّقُّومِ • طَعَامُ الْأَثِيمِ • كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ • كَغَلْيِ الْحَمِيمِ (46-43:44)

"(जहन्नम में) ज़क्कूम का पेड़ गुनाहगारों का खाना होगा (देखने में) तेल की तलछट जैसा होगा, पेट में इस तरह जोश मारेगा जैसे गर्म पानी खौलता है।" (सूरह दुखानः ४३-४६)

मसला ७६. जहन्नमियों का खाना (थूहर) इस कद्र ज़हरीला होगा कि अगर उसकी एक बूंद दुनिया में गिरा दी जाए तो वह सारी दुनिया के खाने कमाने के असबाब को तबाह कर दे।

Www.IslamicBooks.Website

عن ابن عباس رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (لو ان قطرةمن الزقوم قطرت فی دارالدینا لا فسدت علی اهل الدنیا معایشهم فکیف بمن تکون طعامه؟) رواه احمد والترمذی والنسائی وابن ماجه (ا) (صحیح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लह सल्ल० ने फरमाया "अगर थूहर की एक बूंद दुनिया में गिरा दी जाए तो सारी दुनिया के जानवरों की जीवन सामग्री (यानी खान पान की चीज़ें) तबाह कर दे। फिर उस व्यक्ति का क्या हाल होगा जिसकी खुराक थूहर हो?" इसे अहमद, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

(सही जामिउस सगीर लिल अल्बानी, जुज़-५ हदीस- ५१२६१)

ضَرِيْع

कांटेदार घास

मसला ७७. थूहर के अलावा कांटेदार घास और झाड़िया (ज़रीअ) भी जहन्नमियों को खाना होगी जो इन्तिहाई ज़हरीली और बदबूदार होंगी।

मसला ७८. "ज़रीअ" का खाना जहन्नमियों की भूख में कण बराबर कमी नहीं करेगा बल्कि उनकी तकलीफ में वृद्धि का कारण बनेगा।

تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ آنِيَةٍ ۝ لَّيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِن ضَرِيعٍ ۝ لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِن جُوعٍ (7-5:88)

'जहन्नमियों को खौलते हुए चशमें का पानी पीने के लिए दिया जाएगा कांटेदार सूखी घास के अलावा उनके लिए कोई खाना न होगा जो मोटा करेगा न भूख मिटाएगा।" (सूरह गाशियहः५-७)

Www.IslamicBooks.Website

٣. غِسْلِيْن

ज़ख्मों के धोवन की गन्दगी

मसला ७६. ज़क्कूम और ज़रीअ के अलावा जहन्नमियों के जिस्म से बहने वाला गन्दा और सड़ा हुआ पदार्थ भी जहन्नमियों को खाने के तौर पर दिया जाएगा।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيْمٌ • وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ • لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِؤُونَ (37-35:69)

"आज यहां उन (गुनहगारों) का कोई साथी है न ज़ख्मों के धोवन के अलावा उनके लिए कोई खाना है जिसे उन गुनहगारों के अलावा कोई दूसरा नहीं खाएगा।" (सूरह हाक्कहः ३५-३७)

व्याख्या- कुछ मुफस्सिरीन के नज़दीक गिस्लीन भी जहन्नम के एक पेड़ का नाम है।

٤. ذَاغُصَّة

हलक में फंसने वाला खाना

मसला ८०. ज़क्कूम, ज़रीअ और गिस्लीन के अलावा जहन्नमियों को ऐसा ज़हरीला कांटेदार और बदबूदार खाना दिया जाएगा जो उनके हलक से फंस-फंस कर नीचे उतरेगा।

إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالاً وَجَحِيماً • وَطَعَاماً ذَا غُصَّةٍ وَعَذَاباً أَلِيماً

(13-12:73)

"हमारे पास (जहन्नमियों के लिए) भारी बेड़ियां और भड़कती हुई आग है हलक में फंसने वाला खाना और दर्दनाक अज़ाब है। (सूरह

Www.IslamicBooks.Website

मुज़म्मिलः १२-१२३)

ب. شَرَابُ اَهْلِ النَّارِ

जहन्नमियों के पेय

मसला ८१. जहन्नमियों को पीने के लिए नीचे लीखे पांच किस्म के पांच किस्म के पेय दिए जाएंगे।

१. खौलता हुआ पानी	مَآءٌ حَمِيْمٌ
२. ज़ख्मों से बहने वाली पीप और खून	مَآءٌ صَدِيْدٌ
३. तेल की तलछट जैसा खौलता हुआ पेय	مَآءٌ كَالْمُهْلِ
४. सियाह ज़हरीला बदबूदार पेय	غَسَّاقٌ
५. जहन्नमियों का पसीना	طِيْنَةُ الْخَبَالِ

مَآءٌ حَمِيْمٌ

१. खौलता हुआ पानी

मसला ८२. थूहर खाने के बाद जहन्नमियों को खौलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जाएगा।

فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِؤُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ • ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْباً مِّنْ حَمِيْمٍ (67-66:37)

"जहन्नमी यही (थूहर का पेड़) खाएंगे और उससे अपना पेट

Www.IslamicBooks.Website

भरेंगे खाने के बाद पीने के लिए उन्हें खौलता हुआ पानी मिलेगा और उसके बाद उनकी वापसी इसी नारे जहन्नम की तरफ होगी (जहां से पानी पीने के लिए लाए गए थे।)" (सूरह साफ्फातः ६६-६७)

व्याख्या- मालूम होता है कि ज़क्कूम का पेड़ और खौलते पानी के चशमें दोज़ख के किसी खास इलाके में होंगे जब जहन्नमियों को भूख और प्यास लगेगी तो उन्हें उस मकाम की तरफ हांक दिया जाएगा और फिर दोज़ख में अपने ठिकाने की तरफ वापस लाया जाएगा। (अश्रफुल हवाशी)

मसला ८३. थूहर खाने के बाद जहन्नमी तौन्स लगे हुए ऊंट की तरह खौलता हुआ पानी पीएंगे।

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّالُّونَ الْمُكَذِّبُونَ • لَآكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ • فَمَالِؤُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ • فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ • فَشَارِبُونَ شُرْبَ الْهِيمِ • هَذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ •

(56-51:56)

"फिर ऐ गुमराह होने वालो और झुठलाने वालो! तुम थूहर का पेड़ खाने वाले हो उसी से तुम पेट भरोगे और ऊपर से खौलता हुआ पानी तौन्स लगे हुए ऊंट की तरह पियोगे कयामत के दिन यह होगा दावत का सामान (झुठलाने वालों के लिए)।" (सूरह वाकिआः५१-५६)

मसला ८४. खौलता पानी पीते ही जहन्नमियों की आतें कट जाएंगी।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاء غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاء حَمِيماً فَقَطَّعَ أَمْعَاءهُمْ

(15:47)

"(परहेज़गार लोगों से) जिस जन्नत का वायदा किया गया है

Www.IslamicBooks.Website

उसकी शान यह है कि उसमें नहरें बह रही होंगी सुथरे पानी की, ऐसे दूध की जिसके मज़े में ज़रा फर्क न आया हो, ऐसी शराब की जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट हो और ऐसे शहद की जो साफ खालिस हो। जन्नत में उनके लिए हर तरह के फल होंगे और उनके रब की तरफ से बख्शिश (क्या यह जन्नती) उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो हमेशा जहन्नम में रहेगा जहां जहन्नमियों को ऐसा गर्म पानी पिलाया जाएगा जो उनकी आंतें तक काट देगा।" (सूरह मुहम्मदः १५)

مَآءٌ صَدِيْدٌ

२. ज़ख्मों से बहने वाली पीप और खून

मसला ८५. जहन्नमियों के ज़ख्मों से बहने वाले खून और पीप या खौलता हुआ पेय भी जहन्नमियों को पीने के लिए दिया जाएगा जिसे ये ज़बरदस्ती एक-एक घूंट करके पीएंगे।

مِّن وَرَآئِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَى مِن مَّاءٍ صَدِيْدٍ • يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهُ وَيَأْتِيْهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِن وَرَآئِهِ عَذَابٌ غَلِيْظٌ • (17-16:14)

"(दुनिया के बाद) आखिरत में (काफिर के लिए) जहन्नम है जहां उसे पीप और खून का मिला हुआ पानी पिलाया जाएगा जिसे वह ज़बरदस्ती घूंट-घूंट करके पीने की कोशिश करेगा लेकिन मुश्किल से ही गले से उतार सकेगा। काफिर को हर तरफ से मौत आती दिखाई देगी लेकिन मरने न पाएगा और उसके बाद भी सख्त अज़ाब उसकी जान को लागू रहेगा। (सूरह इब्राहीमः १६-१७)

Www.IslamicBooks.Website

مَآءٍ كَالْمُهْلِ

३. तेल की तलछट जैसा खौलता हुआ पेय

मसला ८६. तेल की तलछट जैसा गलीज़, बदबूदार और खौलता हुआ पेय भी जहन्नमियों के पीने के लिए दिया जाएगा।

وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاء كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءتْ مُرْتَفَقًا (29:18)

"जहन्नमी पानी मांगे गे तो ऐसे पानी से उनकी आवभगत की जाएगी जो पिघले हुए तांबे जैसा होगा जो चेहरे को भून डालेगा बदतरीन पीने की चीज़ और बहुत ही बुरी आराम गाह।"

(सूरह कहफः २९)

व्याख्या- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने एक बार सोना पिघलाया जब वह पानी जैसा हो गया और जोश मारने लगा तो फरमाया "महल" की एक रूपता इसमें है।

मसला ८७. तेल की तलछट का पेय मुंह को लगाते ही जहन्नमी के चेहरे को भून डालेगा।

عن ابى سعيد رضى الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال (مآء كالمهل كعكر الزيت فاذا اقرب الىٰ فيه سقطت فروة وجهه) رواه الحاكم (١) (صحيح)

हज़रत अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "(जहन्नमियों का पेय) पिघले हुए तांबे का पानी, तेल की तलछट जैसा होगा जब जहन्नमी (उसे पीने के लिए) अपने मुंह के करीब ले जाएगा तो उसके मुंह का गोश्त (जल भुन कर) गिर पड़ेगा।" इसे हाकिम ने रिवायत किया है (४/६४६-६४७-तलखीस सहीह)

Www.IslamicBooks.Website

غَسَّاقُ

४. सियाह ज़हरीला बदबूदार पेय

मसला ८८. उपरोक्त तीन पेय के अलावा गस्साक इंतिहाई सियाह रंग का ज़हरीला गन्दा पदार्थ भी जहन्नमियों को पीने के लिए दिया जाएगा।

هَـٰذَا وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ • جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ •
هَـٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ • وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ •

(58-55:38)

"यह तो है मुत्तकी लोगों को अंजाम और सरकशों के लिए बहुत ही बुरा ठिकाना है। यानी जहन्नम, जिसमें वे झुलसाए जाएंगे। बहुत ही बुरी कयामगाह, ये है सरकशों का अंजाम। अतः अब ये लोग मज़ा चखें बदबूदार खौलते हुए पानी का और बदबूदार सख्त सियाह ज़हरीले पानी का और इसी शक्ल के कुछ दूसेर पेयों का। (सूरह सादः ५६-५८)

मसला ८६. गस्साक पेय इस कद्र ज़हरीला और बदबूदार होगा कि उसका एक ढोल (लगभग दस बारह लीटर का बर्तन) सारी दुनिया को बदबू का शिकार करने के लिए काफी होगा।

عن ابی سعید رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (ان دلوا من غساق یهراق فی الدنیا لا نتن اهل الدنیا) رواه ابو یعلٰی (۱) (صحیح)

हज़रत अबू सईद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "गस्साक (जहन्नमियों के जिस्म से बहने वाले पानी) का एक ढोल अगर दुनिया में डाल दिया जाए तो सारे दुनिया के जीवों को बदबूदार कर दे।" इसे अबू याला ने रिवायत किया है।

Www.IslamicBooks.Website

(मुसनद अबू याला, जुज़ २, ह़दीस १३७६१)

طِينَةُ الْخَبَالِ

५. जहन्नमियों का पसीना

मसला ६०. दुनिया में नशीले पेय पीने वालों को अल्लाह तआला जहन्नमियों के जिस्म से निकलने वाला गलीज़, बदबूदार और ज़हरीला पसीना पिलाएगा।

عن جابر رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم (کل مسکر حرام ان علی اللہ عھدا لمن یشرب المسکر ان یسقیہ من طینۃ الخیال) قالوا یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وما طینۃالخیال؟ قال (عرق اھل النار) رواہ مسلم (۲)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "हर नशीली चीज़ हराम है और अल्लाह तआला ने प्रतिज्ञा की है कि जो नशीले पेय पियेगा उसे (जहन्नम में) तीनतुल ख्बाल पिलाएगा।' सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "या रसूलुललह सल्ल०! तीनतुल खबाल क्या है?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "जहन्नमियों का पसीना।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताब अशरबह, बाद बयान अन कुल)

मसला ६१. जहन्नमियों को सुखमय और पीने के काबिल कोई पेय नहीं दिया जाएगा।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْداً وَلَا شَرَاباً • إِلَّا حَمِيماً وَغَسَّاقاً • جَزَاء وِفَاقاً • (26-24:78)

"जहन्नमी, जहन्नम के अन्दर किसी ठंडी और पीने के काबिल किसी चीज़ का मज़ा न चखेंगे सिवाए गर्म पानी और पीप के। यह भरपूर

Www.IslamicBooks.Website

बदला है। (उनके आमाल का)।" (सूरह नबाः २४-२६)

मसला ६२. जहन्नम में जहन्नमिया के लिए मीठे पानी की एक बुंद और स्वादिष्ट खाने का एक लुक्मा तक हराम होगा।

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ

(50:7)

"जहन्नमी, जन्नतियों को पुकारेंगे कुछ थोड़ा सा पानी हम पर डाल दो या जो रिज़्क अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसमें से कुछ फेंक दो। ये जवाब देंगे, अल्लाह ने ये दोनों चीज़ें काफिरों के लिए हराम कर दी है।" (सूरह आराफः ५०)

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ الْعَطَشِ

सख्त प्यास का अज़ाब

(اعاذنا لله تعالیٰ منه بمنهٖ و کرمهٖ لا الٰه الا هو یفعل ما یشآء)

मसला ६३. मुज्रिमों को आग में डालने से पहले सख्त प्यास के अज़ाब में फंसा दिया जाएगा।

وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَى جَهَنَّمَ وِرْداً (86:19)

"मुज्रिमों को हम सख्त प्यास की हालत में जहन्नम की तरफ ले जाएंगे।(सूरह मरयमः ८६)

मसला ६४. प्यास की सख्ती की वजह से जहन्नमी, जहन्नम और खौलते पानी के चशमों के बीच चक्कर लगाते रहेंगे।

هَـٰذِهِ جَهَـنَّـمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ • يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ • فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (45-43:55)

"यह वह जहन्नम है जिसे मुज्रिम लोग झुठलाया करते थे। इसी जहन्नम और खौलते हुए पानी के बीच वे गर्दिश करते रहेंगे फिर अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे।" (सूरह रहमानः ४३-४५)

मसला ६५. जहन्नमी थूहर खाने के बाद प्यासे ऊंट कीसी तौन्स महसूस करेंगे।

व्याख्या- आयत मसला ८३ के तहत देखें।

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ اِسْكَابِ الْمَآءِ الْحَمِيْمِ

खौलता हुआ पानी सर पर उंडेलने का अज़ाब

(اعاذنا الله تعالٰی منه بفضله و کرمه وهو العظیم الحلیم رب العرش الکریم)

मसला ६६. जहन्नम के ठीक बीच में ले जाकर काफिर के सर पर खौलता हुआ पानी उंडेल दिया जाएगा।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ • ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ • ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ • إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ (50-47:44)

"(हुक्म होगा) पकड़ लो इसे और रगेदते हुए ले जाओ इसको जहन्नम के बीचों बीच और उंडेल दो इसके सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब (फिर उसे कहा जाएगा) चख उसका मज़ा बड़ा ज़बरदस्त इज़्ज़तदार था तू, यह वही चीज़ है जिसके आने में तुम लोग शक किया करते थे।" (सूरह दुखानः ४७-५०)

मसला ६७. काफिरों और मुश्रिकों के सर पर इस कद्र गर्म पानी डाला जाएगा कि उनकी खाल, चर्बी और पेट के अंदर आंतें, कलेजा, दिल, गुर्दा, सब कुछ जल जाएगा।

هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُؤُوسِهِمُ الْحَمِيمُ • يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ (20-19:22)

Www.IslamicBooks.Website

"ये दो पक्ष हैं जिनके बीच अपने रब के मामले में झगड़ा है उनमें से जिन्होंने कुफ़्र किया उनके लिए आग के लिबास काटे जा चुके हैं उनके सरों पर खौला हुआ पानी डाला जाएगा जिससे उनकी खालें ही नहीं पेट के अंदर के हिस्से तक गल जाएंगे।" (सूरह हजः १६-२०)

मसला ६८. खौलता हुआ गर्म पानी काफिरों के सरों पर डाला जएगा जिससे उनके पेट की हर चीज़ जलकर बाहर कदमों में जा गिरेगी। अल्लाह के हुक्म से काफिर फिर अपनी पहली हालत पर आ जाएंगे इसी तरह बार-बार उसे यही अज़ाब दिया जाएगा।

عن ابی هریرة رضی الله عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم (ان الحمیم لیصب علٰی رؤوسهم فینفذ الجمجمة حتٰی یخلص الٰی جوفه فیسلت ما فی جوفه حتٰی یمرق من قدمیه وهو الصهر ثم یعاد کما کان) رواه احمد (۱) (حسن)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "खौलता हुआ पानी काफिरों के सरों पर डाला जाएगा जो सर को छेदकर पेट तक पहुंचेगा ओर पेट में जो कुछ होगा उसे काट डालेगा और वह सब कुछ (उसकी पीठ से निकल कर) कदमों में जा गिरेगा और यह है (तफसीर शब्द) "सहर" (की) इस सज़ा के बाद काफिर फिर अपनी पहली हालत पर लौटा दिया जाएगा।" इसे अहमद ने रिवायत किया है। (शरहुस्सुन्नह, किताबुल फितन, बाब सफतुन नार व अहलहा।)

Www.IslamicBooks.Website

لِبَاسُ اَهْلِ النَّارِ

जहन्नमियों का लिबास

(اعاذنا الله عزوجل منه بفضله وكرمه ومنه لا يسئل عما يفعل)

मसला ९९. जहन्नमियों को आग का लिबास पहनाया जाएगा।

هَـٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ۞ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ (20-19:22)

"ये दो पक्ष हैं जिनके बीच अपने रब के मामले में झगड़ा है उनमें से जिन्होंने कुफ्र किया उनके लिए आग के लिबास काटे जा चुके हैं उनके सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा जिससे उनकी खालें ही नहीं पेट के अंदर के हिस्से तक गल जाएंगे। (सूरह हजः १९-२०)

मसला १००. कुछ मुज्रिमों को हथकड़ियां और बेड़ियां पहना कर तारकोल का लिबास पहनाया जाएगा।

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۞ سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ وَتَغْشَىٰ وُجُوهَهُمُ النَّارُ (50-49:14)

उस दिन तुम मुज्रिमों को देखोगे उनक हाथ और पांव ज़ंजीरों मे जकड़े हुए होंगे। तारकोल के लिबास पहले हुए होंगे और आग के शोले उनके चेहरों पर छाए जा रहे होंगे।"

Www.IslamicBooks.Website

(सूरह इब्राहीम' ४६-५०)

मसला १०१. कुछ मुज्रिमों को गंधक का पाजामा और खुजली का कुर्ता पहनाया जाएगा।

व्याख्या- हदीस मसला १७५ के तहत देखें।

मसला १०२. कुरआन व हदीस का इल्म छुपाने वालों को आग की लगाम पहनाई जाएगी।

व्याख्या- हदीस मसला १७० के तहत देखें।

मसला १०३. कुछ मुज्रिमों को आग की जुतियां पहनाई जाएंगी।

व्याख्या- हदीस मसला ५३ के तहत देखें।

Www.IslamicBooks.Website

فِرَاشُ اَهْلِ النَّارِ

जहन्नमियों के बिस्तर

(اعاذناالله عزوجل منه باسماء الحسنى وصفا ته العليا و هو الحليم الغفور الرحيم)

मसला १०४. जहन्नमियों को "आराम" करने के लिए आग के बिस्तर उपलब्ध कराए जाएंगे।

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ (41:7)

"काफिरों के लिए जहन्नम (की आग) का बिछौना होगा और जहन्नम (की आग) का ही ओढ़ना होगा यह है वह बदला जो हम ज़ालिमों को दिया करते हैं। (सूरह आराफः ४१)

मसला १०५. जहन्नमियों के "कालीन" और "ग़ालिचे" भी आग के होंगे।

لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذَلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ (16:39)

"उनके लिए आग की छतरियां ऊपर से भी छाई होंगी और नीचे भी छतरियां होंगी। यह है वह अंजाम जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है। तो ऐ मेरे बन्दो! मेरे गज़ब से बचो।" (सूरह ज़ुमरः १६)

Www.IslamicBooks.Website

मसला १०६. जहन्नमियों का ओढ़ना बिछौना आग ही आग होगी।

يَوْمَ يَغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (55:29)

"उस दिन (आग का) अज़ाब उन्हें ऊपर से भी ढांक लेगा और पांव के नीचे से भी और इर्शाद होगा अब मज़ा चखो उन आमाल का जो तुम करते थे।" (सूरह अनकबूतः ५५)

وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا • (29:18)

"जहन्नमी पानी मांगेगे तो ऐसे पानी से उनकी आवभगत की जाएगी। जो पिघले हुए तांबे जैसा होगा जो चेहरे को भून डालेगा। बदतरीन पीने की चीज़ और बहुत ही बुरी आरामगाह है।"

(सूरह कहफः २६)

Www.IslamicBooks.Website

مُظلاَّتُ اَهْلِ النَّارِ وَسُرَادِقُهُمْ

जहन्नमियों की छतरियां और कनात

(اعاذنااللہ عزوجل منہابفضلہ و منہ و کرمہ انہ ھو الغفور الودود الکریم الرحیم)

मसला १०७. जहन्नमियों के ऊपर आग की छतरियां होंगी।

لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذَلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ (16:39)

''उन पर आग की छतरियां ऊपर से भी छाई होंगी और नीचे से भी। यह वह अंजाम है जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता है। अतः ऐ मेरे बन्दों! मरे प्रकोप से बचो।'' (सूरह जुमरः १६)

मसला १०८. आग की कनातों में जहन्नमी रह रहे होंगे।

وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا (29:18)

''हमने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी कनातें उन्हें घेर लेंगी।'' (सूरह कहफः २६)

मसला १०९. जहन्नमी की कनात की दो दीवारों के बीच चालीस साल की मुसाफत का फासला है।

व्याख्या- हदीस मसला २० के तहत देखें।

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ الْاَغْلَالِ وَالسَّلَاسِلِ

आग के तौक, आग की हथकड़ियां और आग की बेड़ियों का अज़ाब

(اعاذنا الله تعالیٰ منهابفضله و منه و کرمه و انه هو الحلیم الکریم الرحیم لا معقب لحکمه)

मसला ११०. जहन्नम में ले जाने के लिए मुज्रिमों की गर्दन में भारी तौक डाले जाएंगे।

मसला १११ जहन्नम में ले जाने के बाद मुज्रिमों को सत्तर हाथ (लगभग १०५ फिट) लम्बी ज़ंजीर में जकड़ दिया जाएगा।

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ • ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ • ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعاً فَاسْلُكُوهُ • إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ • وَلَا يَحُضُّ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ • (34-30:69)

"(फरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा) इसे पकड़ो और इसकी गर्दन में तौक डाल दो, और इसे जहन्नम में झोंक दो, फिर इसे सत्तर हाथ लम्बी ज़ंजीर में जकड़ दो। यह न अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर को मानता था न मिसकीन को खाना खिलाने की तरगीब देता था।

(सूरह हाक्कहः ३०-३४)

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلَا وَأَغْلَالاً وَسَعِيراً • (4:76)

"काफिरों के लिए हमने ज़ंजीरें, तौक और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।" (सूरह दहरः ४)

Www.IslamicBooks.Website

मसला ११२. कुछ मुज्रिमों के पांव में आग की बेड़ियां भी पहनाई जलाएंगी।

إِنَّ لَدَيْنَا أَنكَالاً وَجَحِيماً (12:73)

"(मुज्रिमों के लिए) हमारे पास बेड़ियां और भड़कती हुई जहन्नम है।" (सूरह मुज़म्मिलः १२)

मसला ११३. फरिश्ते काफिरों को ज़ंजीरों में बांधकर जहन्नम में घसीटते फिरेंगे।

إِذِ الْأَغْلاَلُ فِىٓ أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلاَسِلُ يُسْحَبُونَ • فِى الْحَمِيمِ ثُمَّ فِى النَّارِ يُسْجَرُونَ (72-71:40)

"(काफिरों को झुठलाने का अंजाम उस वक्त मालूम होगा) जब तौक और ज़ंजीरें उनकी गर्दनों में होंगी और वे (कभी) खौलते पानी की तरफ घसीटे जाएंगे, और (कभी अपनी जगह पर वापस लाने के लिए) आग में घसीटे जाएंगे।" (सूरह मोमिनः ७१-७२)

मसला ११४. कुछ मुज्रिमों को हथकड़िया और बेड़ियां डालकर तारकोल का लिबास पहनाया जाएगा।

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِى الأَصْفَادِ • سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ وَتَغْشَى وُجُوهَهُمُ النَّارُ • (50-49:14)

"उस दिन तुम मुज्रिमों को देखोगे उनके हाथ और पांव ज़ंजीरों में जकड़े हुए होंगे, तारकोल के लिबास पहने हुए होंगे और आग के शोले उनके चेहरों पर छाए जारहे होंगे।" (सूरह इब्राहीमः ४९-५०)

मसला ११५. कुछ लोगों की गर्दनों में ज़हरीले सांप तौक बनाकर डाले जाएंगे।

व्याख्या- हदीस मसला १६६ के तहत देखें।

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ الْاِلْقَاءِ فِیْ مَکَانٍ ضَیِّقٍ

आग की तंग व अंधेरी कोठरियों मे ठूसने का अज़ाब

(اعا ذناالله عزوجل منها بفضله وكرمه ومنه انه هو الرحم أراحمين)

मसला ११६. मुज्रिम लोग अत्यन्त तंग व अंधेरी कोठरियों में मश्कें कसकर ठूंसे जाएंगे और व ख्वाहिश करेंगे काश हमें मौत आ जाए।

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَاناً ضَيِّقاً مُقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوراً ۝ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوراً وَاحِداً وَادْعُوا ثُبُوراً كَثِيْراً (14-13:25)

"जब मुज्रिम लोग जहन्नम की तंग व अंधेरी कोठरियों में मश्कें कसकर फेंके जाएंगे तो अपने लिए मौत को पुकारेंगे। (उस वक्त उनसे कहा जाएगा) आज एक मौत तो नहीं बहुत सी मौतों को पुकारो।"

(सूरह फुरकानः १३-१४)

व्याख्या- इस आयत के बारे में रसूले अकरम सल्ल० से सवाल किया गया तो आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "जिस तरह कील को मुश्किल से दीवार में गाड़ा जाता है उसी तरह जहन्नमियों को ज़बरदस्ती तंग जगह में ठूंसा जाएगा।" (इब्ने कसीर)

मसला ११७. जहन्नमी जहन्नम में इस तरह फंसे हुए होंगे जैसे नेज़े की अनी दस्ते में सख्ती से गाड़ी जाती है।

عن عبدالله بن عمرورضى الله عنه قال ان جهنم لتضيق على

Www.IslamicBooks.Website

الکافر کتضیق الزج فی الرمح ذکرہ فی شرح السنة (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फरमाते हैं जहन्नम काफिर के लिए इस कद्र तंग की जाएगी जिस तरह नेज़े की अनी लकड़ी के दस्ते में सख्ती से गाड़ी जाती है। यह कौल शरहुस्सुन्नह (१५-२५१) में है।

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ تَقْلِيبِ الْوُجُوهِ فِي النَّارِ

चेहरों को आग पर तपाने का अज़ाब

(اعاذنااللہ عزوجل منھا بفضلہٖ وکرمہٖ ومنہٖ ھواکرم الا کرمین)

मसला ११८. जहन्नमियों के चेहरे जहन्नम में आग पर उलट पलट करके भूने जाएंगे।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا • وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا • رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْناً كَبِيراً •

(68-66:33)

"जिस दिन उनके चेहरे आग पर उलट पलट किए जाएंगे उस वक्त वे कहेंगे काश हमने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की इताअत की होती। और कहेंगे "ऐ मेरे रब! हमने अपने सरदारों और बड़ों की इताअत की उन्होंने हमें सीधी राह से गुमराह कर दिया उन्हें दोहरा अज़ाब दे और उन पर सख्त लानत कर।" (सूरह अहज़ाबः ६६-६८)

मसला ११९. फरिश्ते काफिरों को आग पर तपाएंगे और साथ (ही) कहेंगे : "मज़ा चखो उस अज़ाब का जिसका दुनिया में तुम मुतालबा करते थे।"

قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ • الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ • يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ • يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ • ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ •

(14-10:51)

Www.IslamicBooks.Website

"मारे गए कयास और गुमान से काम लेने वाले जो जिहालत में डूबे और गफलत में मदहोश हैं। पूछते हैं आखिर वह बदले का दिन कब आएगा? वह उस दिन आएगा जब ये लोग आग पर तापाए जाएंगे। (और उनसे कहा जाएगा) अब चखो मज़ा अपने फितने का। यह वही चीज़ है जिसके लिए जल्दी मचा रहे थे।" (सूरह ज़ारियातः १०-१४)

मसला १२०. कुछ काफिरों के चेहरों पर आग के शोले बरसाए जाएंगे।

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ • سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٍ وَتَغْشَى وُجُوهَهُمُ النَّارُ • (50-49:14)

"उस दिन तुम मुज्रिमों को देखोगे उनके हाथ और पांव ज़ंजीरों में जकड़े हुए होंगे तारकोल के लिबास पहने हुए होंगे और आग के शोले उनके चेहरों पर छाए जा रहे होंगे।" (सूरह इब्राहीमः ४९-५०)

मसला १२१. काफिर लोग अपने "नर्म व नाजुक और खूबसूरत चेहरे" आग से बचाने की केशिश करेंगे।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَن وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَن ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ (39:21)

"काश काफिर लोग उस वक्त का यकीन कर लेते जब वे अपने चेहरे आग से न बचा सकेंगे न ही अपनी पीठें आग से बचा सकेंगे और न ही वे (कहीं से) मदद किए जाएंगे" (सूरह अंबियाः ३९)

मसला १२२. काफिर जहन्नम का बदतरीन अज़ाब अपने चेहरे पर झेलेंगे।

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ (24:39)

"भला वह व्यक्ति जो क्यामत के दिन बदतरीन अज़ाब अपने चेहेर

Www.IslamicBooks.Website

पर झेलेगा (उससे ज़्यादा बदहाल कौन हो सकता है) ऐसे ज़लिमों से कहा जाएगा अब चखो मज़ा उस कमाई का जो तुम (दुनिया में) करते रहे।''

(सूरह जुमरः २४)

व्याख्या- मुज्रिम लोग सज़ा के वक्त अपने हाथों से चेहरे को बचाने की कोशिश करते हैं। लेकिन जहन्नमियों के जहन्नम में चूंकि हाथ गर्दनों से बंधे हुए होंगे लिहाज़ा वे हाथ आगे नहीं कर सकेंगे बल्कि फरिश्तों की बदतरीन सज़ा अपने चेहरे पर ही झेलेंगे।

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ السَّمُوْمِ وَالْيَحْمُوْمِ

सख्त ज़हरीली गर्म हवा और सख्त काले ज़हरीले धुएं का अज़ाब

(اعاذنا الله عزوجل منها بفضله و كرمه و احسانه انه علىٰ كل شى قدير)

मसला १२३. कुछ मुज्रिमों को ज़हरीली गर्म हवा के थपेड़ों और काले धुएं के मरगुलों के अज़ाब में फंसाया जाएगा।

وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ • فِيْ سَمُومٍ وَحَمِيْمٍ • وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ • لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيْمٍ • (44-41:56)

"और बाएं बाजू वाले, बाएं बाजू वालों के दुर्भाग्य का क्या पूछना, वे लौ की लपट और खौलते हुए पानी और काले धुएं के साय में होंगे जो ठंडा होगा न आरामदहे।" (सूरह वाकिआः ४१-४४)

व्याख्या- जहन्नमी, जहन्नम के अज़ाब से तंग आकर एक साय की तरफ दौड़ेंगे लेकिन जब वहां पहुंचेंगे तो मालूम होगा कि यह साया नहीं बल्कि जहन्नम की आग का सख्त सियाह धुआं है। (तफ्सीर अहसनुल बयान)

मसला १२४. काफिरों को जहन्नम में झुलसा देने वाली सख्त गर्म हवा कर अज़ाब दिया जाएगा।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْ أَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ • فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ • (27-26:52)

"(अह्ले ईमान कहेंगे) इससे पहले (दुनिया में) हम अपने घर वालों में (अल्लाह से) डरते हुए ज़िन्दगी बसर करते थे आखिरकार अल्लाह तआला ने हम पर फ़ज़्ल किया और हमें झुलसा देने वाली हवा के अज़ाब से बचा लिया।" (सूरह तूरः२६-२७)

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ شِدَّةِ الْبَرْدِ

सख्त सर्दी का अज़ाब

(اجارناالله تعالىٰ منها بفضلهٖ و كرمهٖ و احسانهٖ ان ربنا لغفوررحيم ودود كريم)

मसला १२५. ''ज़महरीर'' जहन्नम का एक तबका है जिसमें जहन्नमियों को सख्त सर्दी का अज़ाब दिया जाएगा।

فَوَقَاهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُوراً • وَجَزَاهُم بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيراً • مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْساً وَلَا زَمْهَرِيراً • (13-11:76)

''तो अल्लाह तआला जन्नतियों को उस दिन के शर से बचालेगा और उन्हें ताज़गी और सुकून बख्शेगा और उनके सब्र के बदले में उन्हें जन्नत ओर रेशमी लिबास प्रदान करेगा जहां वे ऊंची मसनदों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। न उन्हें धूप की गर्मी सताएगी न ज़महरीर की सर्दी।'' (सूरह दहर: ११-१३)

عن ابى هريرة رضى الله عنه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال (اذا كان يوم حار القى الله سمعه وبصره الىٰ اهل السمآء واهل الارض 'فاذا قال العبد لا الٰه الا الله ما اشد حرا هٰذااليوم؟ اللهم اجرنى من حر نار جهنم قال الله لجهنم ان عبدا من عبادى قد استجار بى منك 'وانى اشهدك انى قد اجرته واذا كان يوم شديدالبرد 'القى الله سمعه وبصره الىٰ اهل السمآء واهل الارض فاذا قا ل العبد لا الٰه الاالله ما اشر بردا هٰذااليوم ؟ اللهم اجرنى من برد زمهرير جهنم قال الله لجهنم ان عبدا من عبادى قد استجار بى من زمهريرك ' فانى اشهدك انى قد اجرته قالوا وما زمهرير جهنم؟

Www.IslamicBooks.Website

قال حيث يلقى الله الكافر فيتميز من شدة بردها بعضه من بعض)
رواه البيهقى (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "गर्मी के मौसम में सख्त गर्मी का दिन होता है तो अल्लाह तआला अपना कान और अपनी आंख आसमान वालों और ज़मीन वालों की तरफ लगा देते हैं जब कोई बन्दा कहता है ला इला-ह इल्लल्लाह आज के दिन सख्त गर्मी है या अल्लाह मुझे जहन्नम की आग से पनाह दे। तो अल्लाह तआला जहन्नम से फरमाता है "मेरे बन्दों में से एक बन्दे में तुझ से मेरी पनाह तलब की है मैं तुझे (यानी जहन्नम को) गवाह बनाता हूं कि मैंने उसे पनाह दे दी और जब सख्त सर्दी का दिन होता है तो अल्लाह तआला अपना कान और अपनी आंखें आसमान वालों और ज़मीन वालों की तरफ लगा देते हैं जब (कोइ) बन्दा कहता है ला इला-ह इल्लल्लाह आज के दिन कितनी सख्त सर्दी है या अल्लाह मुझे जहन्नम के तबके ज़महरीर की सर्दी से पनाह दे तो अल्लाह तआला जहन्नम से फरमाता है बेशक मेरे बन्दों में से एक बन्दे ने मुझ से तेरे (तबके) ज़महरीर से पनाह तलब की है पस मैं तुझे गवाह बनाता हूं मैंने उसे पनाह दे दी।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "(या रसूलल्लाह सल्ल०!) जहन्नम का (तबका) ज़महरीर क्या है?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "जब अल्लाह तआला काफिर को उसमें डालेगा तो सख्त सर्दी से ही काफिर उसे पहचान जाएगा (कि यह ज़महरीर का अज़ाब है) सर्दी और गर्मी दोनों जहन्नम के अज़ाब हैं।" इसे बैहकी ने रिवायत किया है।

(अन निहाया फिल फितन, जुज़ २, हदीस ३०७१)

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ الْهَوْنِ فِی النَّارِ

जहन्नम में ज़िल्लत और रूसवाई का अज़ाब

(اجارنااللہ تعالٰی منھا بفضلہٖ وکرمہٖ واحسانہٖ وھو اجودالا جودین واکرم الا کرمین)

मसला १२६. काफिरों को जहन्नम में ज़लील और रूसवा किया जाएगा।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِى الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ۝

(20:46)

"जिस दिन काफिर जहन्नम के सामने ला खड़े किए जाएंगे तो उनसे कहा जाएगा तुम अपने हिस्से की नेमतें दुनिया की ज़िन्दगी में खत्म कर चुके हो उनसे फायदा उठा लिया अतः आज तुम्हें तुम्हारी अवज्ञाकारी और अकारण घमण्ड करने के जुर्म में रूसवाकुन अज़ाब दिया जाएगा।"

(सूरह अहकाफः १२०)

मसला १२७. जहन्नमी, जहन्नम में गधे की तरह ऊंची नीची आवाज़ें निकालेंगे।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُونَ (100:21)

"जहन्नमी वहां इस तरह गधे की सी आवाज़ें निकालेंगे कि कान

Www.IslamicBooks.Website

पड़ी आवाज़ सुनाई न देगी।" (सूरह अंबियाः १००)

मसला १२८. बहुत से काफिरों को ज़लील करने के लिए उनकी नाक दागी जाएगी।

سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ (16:68)

"हम अंकरीब उसकी सूंड (नाक) पर दाग लगाएंगे।" (सूरह कलमः १६)

मसला १२९. जहन्नमियों के चेहर काले सियाह होंगे।

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ • (60:39)

"जिन लोगों ने अल्लाह तआला पर झूठ बांधा है उनके चेहरे कयामत के दिन काले होंगे। क्या जहन्नम में घमण्डों के लिए काफी जगह नहीं है?" (सूरह ज़ुमरः ६०)

मसला १३०. बहुत से काफिरों के चेहरे धूल से अटे होंगे।

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ • تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ • أُولَئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ • (42-40:80)

"उस दिन कुछ चेहरों पर खाक उड़ रही होगी और सियाही छाई हुई होगी वे यही काफिर और फाजिर लोग होंगे।"

(सूरह अबसः ४०-४२)

मसला १३१. कुछ काफिरों को पेशानी के बालों से पकड़कर घसीटा जाएगा।

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعاً بِالنَّاصِيَةِ • نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ

(16-15:96)

Www.IslamicBooks.Website

"हरगिज़ नहीं, अगर वह बाज़ न आया तो हम उसकी पेशानी के बाल पकड़कर घसीटेंगे वह पेशानी जो झूठी और सख्त खताकार है।"

(सूरह अलकः १५-१६)

मसला १३२. बहुत से काफिरों को जहन्नम में मुंह के बल घसीटा जाएगा।

व्याख्या- आयत मसला १३५ के तहत देखें।

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ الظُّلُمَاتِ فِی النَّارِ

जहन्नम में सख्त अंधेरे और तारीकी का अज़ाब

(اجارناالله تعالٰی منها بفضله وکرمه انه هو العزیز الغفور الودود الرحیم الکریم)

मसला १३३. काफिरों को जहन्नम में डाल कर उसके दरवाज़े इस कद्र सख्ती से बन्द कर दिए जाएंगे कि जहन्नमी सदियों तक सख्त अंधेरे और तारीकी में आग का अज़ाब झेलते रहेंगे, कहीं से रोशनी की मामूली सी किरण भी न देख पाएंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ • عَلَيْهِمْ نَارٌ مُؤْصَدَةٌ •

(20-19:90)

"और जिन लोगों ने हमारी आयतों को मानने से इंकार किया वे भाग्यहीन लोग हैं (कयामत के दिन) उन पर जहन्नम की आग होगी। दरवाज़े बन्द की हुई।" (सूरह बलदः १९-२०)

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ • نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ • الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ • إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ • فِیْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ •

(9-5:104)

"और तुम क्या जानो चकना चूर कर देने वाली जगह क्या है? अल्लाह की आग, खूब भड़काई हुई है जो दिलों तक पहुंचेगी, वह उन पर दरवाज़े बन्द की हुई है। (इस हालत में कि वे) ऊंचे-ऊंचे खम्बों में (घिरे हुए होंगे)।" (सूरह हुमज़हः ५-९)

मसला १३४. जहन्नम की आग अपने आप में तारकोल से ज़्यादा

Www.IslamicBooks.Website

अंधेरी और सियाह है जिसमें हाथ को हाथ तक सुझाई नहीं देगा।

عن ابی هریرة رضی اللہ عنه انه قال اترونها حمراء كناركم هٰذهٖ ؟ لهی اسود من القار. رواه مالک (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि वह फरमाते हैं "क्या तुम लोग जहन्नम की आग को दुनिया की आग की तरह समझते हो? (हरगिज़ नहीं) जहन्नम की आग तो तारकोल से ज़्यादा सियाह है इसे मालिक ने रिवायत किया है। (किताबुल जामेअ, बाब माजा, फि सफतुल जहन्नम)

व्याख्या- पक्की सड़क तामीर करने के लिए सियाह रंग का पदार्थ जिसे उर्दू में "तारकोल" पंजाबी में "लुक" अंग्रेज़ी में "Bitchumen" कहते हैं वही अरबी में "कार" कहलाता है।

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ السَّحْبِ فِی النَّارِ عَلَی الْوُجُوْہِ

मुंह के बल चलाए जाने और घसीटे जाने का अज़ाब

(اعاذنا اللہ تعالٰی منھا بمنہ و کرمہٖ وفضلہٖ انہ جواد کریم ملک بر رؤوف رحیم)

मसला १३५. फरिश्ते काफिरों को मुंह के बल जहन्नम में घसीटेंगे।

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ

(48:54)

"उस दिन (काफिर) मुंह के बल आग में घसीटें जाएंगे, उस दिन उनसे कहा जाएगा कि चखो जहन्नम की आग का मज़ा।"

(सूरह कमरः ४८)

मसला १३६. बहुत से मुज्रिमों को कब्र से ही मुंह के बल उठाकर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

मसला १३७. मुंह के बल उठाने वाले काफिर अंधे, गूंगे और बहरे भी होंगे।

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى وُجُوهِهِمْ عُمْيًا وَبُكْمًا وَصُمًّا
مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا (97:17)

"(गुमराह लोगों को) हम कयामत के दिन अंधे, गूंगे और बहरे करके मुंह के बल उठाएंगे, उनका ठिकाना जहन्नम है जब कभी उसकी आग धीमी होने लगेगी हम उसे और भड़का देंगे।"

(सूरह बनी इसराईलः ६७)

Www.IslamicBooks.Website

मसला १३८. कुछ काफिरों को फरिश्ते ज़ंजीरों में बांधकर घसीटेंगे।

إِذِ الْأَغْلَالُ فِيْ أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ • فِي الْحَمِيْمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ (72,71:40)

"तौक और ज़ंजीरें काफिरों की गर्दनों में होंगी और (जब पानी मांगेगे तो पीने के लिए) वे खौलते पानी की तरफ घसीटें जाएंगे और फिर (वापस) जहन्नम की आग में झोंक दिए जाएंगे।"

(सूरह मोमिनः ७१-७२)

मसला १३९. काफिर के सर पर खौलता हुआ पानी डालने के लिए फरिश्ते उसे घसीटकर जहन्नम के बिल्कुल बीच में ले जाएंगे।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيْمِ • ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ (48,47:44)

"(अल्लाह तआला फरिश्तों को हुक्म देगा) पकड़ो इसे घसीटते हुए जहन्नम के बीचो बीच ले जाओ और फिर इस के सर पर खौलता हुआ पानी का अज़ाब उडेल दो।" (सूरह दुखानः ४७-४८)

मसला १४०. कुछ मुज्रिमों को पेशानी के बालों से पकड़कर और कुछ को पांव से पकड़ कर घसीटा जाएगा।

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيْمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْأَقْدَامِ • فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ (42,41:55)

"मुज्रिम वहां अपने चेहरों से पहचान लिए जाएंगे और उन्हें पेशानी के बालों और पांव से पकड़ कर घसीटा जाएगा, (उस वक्त) तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे।"

(सूरह रहमानः ४१-४२)

मसला १४१. अबू जहल को फरिश्ते पेशानी के बालों से पकड़ कर

Www.IslamicBooks.Website

जहन्नम में घसीटेंगे।

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعاً بِالنَّاصِيَةِ • نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ

(16,15:96)

"हरगिज़ नहीं, अगर वह बाज़ न आया तो हम उसकी पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे उस पेशानी को जो झूठी और सख्त खताकार है।" (सूरह अलक:१५-१६)

मसला १४२. दिखावे और घमण्ड की इबादत करने वालों को मुंह के बल घसीटकर जहन्नम में डाला जाएगा।

व्याख्या- हदीस मसला २६६ के तहत देखें।

मसला १४३. अल्लाह तआला मुज्रिमों को मुंह के बल उठाने और मुंह के बल चलाने पर इसी तरह कादिर है जिस तरह दुनिया में उन्हें दोनों पांवों पर उठाने पर कादिर है।

عن انس بن مالک رضی الله عنه ان رجلا قال یا رسول الله صلی الله علیه وسلم کیف یحشر الکافر علٰی وجهه یوم القیٰمة ؟قال (ألیس الذی امشاه علٰی رجلیه فی الدنیا قادر علٰی ان یمشیه علٰی وجهه یوم القیٰمة)قال قتادة بلٰی و عزة ربنا! رواه مسلم (۱)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल० कयामत के दिन काफिर को मुंह के बल कैसे उठाया जाएगा?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "वह ज़ात जिसने उसे दुनिया में दोनों पांवों पर चलाया क्या वह इस बात पर कुदरत नहीं रखती कि कयामत के दिन उसे मुंह के बल चलाए।" हज़रत कतादा रज़ि० ने यह हदीस सुनकर कहा "हमारे परवरदिगार की इज़्ज़त की कसम! बेशक वह ऐसी ताकत ज़रूर रखता है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ الْإِرْهَاقِ فِي النَّارِ

आग के पहाड़ पर चढ़ाने का अज़ाब

(اعاذنا الله تعالیٰ منها بفضله و كرمه ومنه وهو العزيز الغفور يفعل ما يشاء)

मसला १४४. जहन्नम में काफिरों को आग के पहाड़ पर चढ़ाने का अज़ाब दिया जाएगा।

سَأُرْهِقُهُ صَعُوداً (17:74)

''मैं उसे अंकरीब एक मुश्किल चढ़ाई चढ़ाऊंगा।'' (सूरह मुद्दस्सिर: १७)

मसला १४५. ''सऊद'' जहन्नम में एक पहाड़ का नाम है जिस पर काफिर सत्तर साल की मुद्दत में चढ़ेगा फिर उससे नीचे गिरेगा और दोबारा सत्तर साल की मुद्दत में चढ़ेगा और यूं लगातार इसी अज़ाब में फंसा रहेगा।

عن ابی سعيد رضى الله عنه عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال (واد فى جهنم يهوى فيه الكافر اربعين خريفا قبل ان يبلغ قعرة وقال الصعود جبل من نار يصعد فيه سبعين خريفا ثم يهوى به كذلك فيه ابدا) رواه ابو يعلىٰ (١) (صحيح)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया ''जहन्नम में एक वादी का नाम ''वील'' है जिसकी तह तक पहुंचने से पहले काफिर चालीस साल तक उसमें गिरता चला जाएगा। और सऊद जहन्नम में एक पहाड़ का नाम है जिस पर काफिर सत्तर साल (की अवधि) में चढ़ेगा फिर उससे उतरेगा। काफिर हमेशा इसी (अज़ाब में यानी चढ़ने और उतरने) में फंसा रहेगा।'' इसे अबू यला ने रिवायत किया है। (मुसनद अबू याला, जुज़ २, हदीस १३७८)

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ الْوَثَاقِ بِعَمُوْدِ النَّارِ

आग के खम्बों से बांधने का अज़ाब

(اجا رنا الله تعالٰی منها باسمآئه الحسنٰی وصفاته العلیا انه علیٰ مایشآء قدیر)

मसला १४६. बहुत से मुज्रिमों को जहन्नम में लम्ब-लम्बे खम्बों के साथ बांध दिया जाएगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ • نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ • الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ • إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ • فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ •

(4,9:104)

"तुम क्या जानो वह चकना चूर कर देने वाली जगह कया है? अल्लाह की आग है, खूब भड़काई हुई जो दिलों पर चढ़ती चली जाएगी उन्हें बड़े-बड़े खम्बों में (बांध कर) ऊपर से बंद कर दी जाएगी।"

(सूरह हुमज़हः ४-९)

मसला १४७. कुछ मुज्रिमों को बड़ी सख्ती के साथ बांधा जाएगा।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ (25)وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ (26,25:89)

"उस दिन अल्लाह जो अज़ाब देगा वैसा अज़ाब देने वाला कोई नहीं और अल्लाह जैसा बांधेगा वैसा बांधने वाला कोई नहीं।"

(सूहर फज्रः २५-२६)

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ الْمَقَامِعِ وَالْمَطَارِقِ فِي النَّارِ

जहन्नम में लोहे के हथौड़ों और गुरूज़ों से मारे जाने का अज़ाब

(اجا رنا الله تعالٰی منها بفضله و کرمه ومنه و هو المنان بدیع السموت والارض ذوالجلا ل و الا کرام لااله الا هو)

मसला १४८. लोहे के भारी भरकम हथौड़ों और गुरूज़ों से मुज्रिमों के सर कुचले जाएंगे।

وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۝ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيْدُوا فِيْهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيْقِ (22,21:22)

"काफिरों के लिए (जहन्नम में) लोहे के गुरूज़ और हथौड़े होंगे जब कभी घबरा कर जहन्नम से निकलने की कोशिश करेंगे तो फिर इसी में वापस धकेल दिए जाएंगे (और उन्हें कहा जाएगा) अब जलने की सज़ा का मज़ा चखो।" (सूरह हज: २१-२२)

मसला १४९. जहन्नम में काफिरों को सज़ा देने के लिए लोहे के गुरूज़ इस कद्र भारी होंगे कि पूरी धरती के सारे इंसान ओर जिन्न मिलकर भी एक गुरूज़ नहीं उठा सकेंगे।

عن ابی سعید ن الخدری رضی الله عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم قال(لو ان مقمعا من حدید وضع علٰی الارض واجتمع علیه الثقلان ما اقلوه من الارض) رواه ابو یعلٰی (۱) (صحیح)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम

Www.IslamicBooks.Website

सल्ल० ने फरमाया "अगर जहन्नम में काफिरों को मारने वाला लोहे का एक गुरूज़ ज़मीन पर रख दिया जाए और सारे इंसान और जिन्न इकट्ठे हो जाएं तब भी उसे नहीं उठा सकते।" इसे अबू याला ने रिवायत किया है। (मुसनद अबू याला, जुज़ २, हदीस १३८४)

Www.IslamicBooks.Website

اَلْحَيَاتُ وَالْعَقَارِبُ فِى النَّارِ

जहन्नम में सांपों और बिच्छुओं का अज़ाब

(اعاذنااللہ تعالیٰ منها بمنہٖ وفضلہٖ بیدہ الخیروھو علیٰ کل شئی قدیر)

मसला १५०. जहन्नम के सांप ऊंट के बराबर होंगे जिनके एक बार डसने का असर चालीस सालों तक बाकी रहेगा।

मसला १५१. जहन्नम के बिच्छू खच्चर के बराबर होंगे जिनके एक बार डसने का असर चालीस साल तक बाकी रहेगा।

عن عبداللہ بن الحارث بن جز رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم (ان فی النار حیات کا مثال البخت تلسع احدا ھن لسعۃ فیجد حموتھا اربعین خریفا وان فی النار عقارب مثال البغال الموکفۃ تلسع احدا ھن لسعۃ فیجد حموتھا اربعین خریفا) رواہ احمد (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़ रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "जहन्नम में बख्ती ऊंट (ऊंटों की एक किस्म) के बराबर सांप होंगे उनमें से एक सांप के काटने से जहन्नमी चालीस साल तक ज़हर का असर महसूस करता रहेगा। जहन्नम में बिच्छू खच्चरों के बराबर होंगे उनमें से एक बिच्छू के काटने से चालीस साल तक जहन्नमी ज़हर का असर महसूस करता रहेगा।" इसे अहमद ने रिवायत किया है। (मिश्कातुल मुसाबिह किताबुल फतन, बाब सफतुन नार)

Www.IslamicBooks.Website

मसला १५२. जहन्नम में इंतिहाई ज़हरीले गंजे सांप होंगे जो ज़कात अदा न करने वालों के गले में तौक बनाकर डाले जाएंगे।

व्याख्या- हदीस मसला १६६ के तहत देखें।

मसला १५३. जहन्नमियों के अज़ाब में वृद्धि के लिए जहन्नमी बिच्छुओं के डंक लम्बी खजूरें के बराबर बढ़ा दिए जाएंगे।

عن عبدالله بن مسعود رضی الله عنه فی قول الله عزوجل (زدناهم عذابا فوق العذاب)قال زیدواعقارب انیابها کا لنخل الطوال. رواه الطبرانی (ا) (صحیح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि०, अल्लाह तआला के इर्शाद "हम उनके अज़ाब में और अधिक अज़ाब की वृद्धि करेंगे। (सूरह नहलः ८८) की व्याख्या में फरमाते हैं कि (जहन्नमियों के अज़ाब में वृद्धि के लिए) बिच्छुओं के डंक लम्बी खजुरों के बराबर बढ़ा दिए जाएंगे।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है। (मुज्मउज़्ज़वाइद, जुज़ १०१)

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابُ تَكْبِيرِ الْأَبْدَانِ

जिस्मों को बड़ा करने का अज़ाब

मसला १५४. जहन्नम में काफिर का एक दांत उहुद पहाड़ के बराबर होगा।

मसला १५५. जहन्नम में काफिर की खाल की मोटाई तीन दिन की मुसाफत के बराबर होगी।

عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم ضرس الكافر اوناب الكافر مثل احد وغلظ جلده مسيرة ثلاث. رواه مسلم (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "काफिर का दांत उसकी केचली (जहन्नम में) उहुद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई तीन दिन की मुसाफत के बराबर होगी।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल जन्नत व सफहा नईमहा बाब जहन्नम)

मसला १५६. कुछ काफिरों की दाढ़ उहुद पहाड़ से भी बड़ी होगी और उनका बाकी जिस्म भी इसी हिसाब से बड़ा होगा।

عن ابی سعيد ن الخدری رضی الله عنه عن النبی صلی الله عليه وسلم قال (ان الكافر ليعظم حتى ان ضرسه لا عظم من احد) رواه ابن ماجه (٢) (صحيح)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "जहन्नम में काफिर का जिस्म बहुत बड़ा बना दिया

Www.IslamicBooks.Website

जाएगा, यहां तक कि उसकी एक दाढ़ उहुद पहाड़ से भी बड़ी होगी।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुज्जुहुद, बाब सफतुन नार- २/३४८६)

मसला १५७. जहन्नम में काफिरों के दोनों कन्धों के बीच का फासिला तेज़ रो सवार की तीन दिन की मुसाफत के बराबर होगा।

عن ابی هریرة رضی الله عنه یرفعه قال(ما بین منکبی الکافر فی النار مسیرة ثلاثة ایام للراکب المسرع) رواه مسلم (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया "काफिर के दोनों कंधों के बीच तेज़तर सवार के तीन दिन की मुसाफत के बराबर फासला होगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल जन्नत बाब जहन्नम)

मसला १५८. कुछ काफिरों के कान और कंधे के बीच ७० साल का फासला होगा और उनके जिस्म में खून और पीप की वादियां बह रही होंगी।

व्याख्या- हदीस मसला २१ के तहत देखें।

मसला १५९. जहन्नम में काफिर की खाल की मोटाई ४२ हाथ (६३ फिट) होगी एक दांत उहुद पहाड़ के बराबर होगा और उसके बैठने की जगह मक्का और मदीना के बीच मुसाफत के बराबर होगी (४१० किलोमीटर)

عن ابی هریرة رضی الله عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم قال (ان غلظ جلد الکافر اثنان و اربعین ذراعاوان ضرسه مثل احد وان مجلسه من جهنم ما بین مکةوالمدینة)

رواه الترمذی (۲) (صحیح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल०

Www.IslamicBooks.Website

ने फरमाया "(जहन्नम में) काफिर की खाल की मोटाई ४२ हाथ होगी एक दांत उहुद पहाड़ के बराबर होगा और उसके बैठने की जगह मक्का और मदीना के बीच फासले के बराबर होगी।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (अबवाब सफा जहन्नम, बाब अज़्म अहलुन्नार)

मसला १६०. जहन्नमियों को एक बाजू "बैज़ा" पहाड़ के बराबर और उनकी एक रान "वरकान" पहाड़ के बराबर होगी।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (ضرس الکافر یوم القیٰمة مثل احد وعرض جلدهٖ سبعون ذرعا و عضده مثل البیضاء و فخذه مثل ورقان ومقعده فی النار ما بینی وبین الربذة) رواه احمد والحاکم (ا) (صحیح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "कयामत के दिन काफिर की दाढ़ी उहुद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई ७० हाथ (लगभग एक सौ फिट) उसका बाजू "बैज़ा" पहाड़ के बराबर और रान "वरकान" पहाड़ के बराबर होगी उसके बैठने की जगह इतनी होगी जितना मेरे और रब्ज़ा (गांव) के बीच फासला है।" इसे अहमद और हाकिम ने रिवायत किया है। (सिलसिला अहादीस सही लिल अलबानी, हदीस ११०५)

व्याख्या- मुख्तलिफ अहादीस में जहन्नमियों के हालात मुख्तलिफ बयान फरमाए गए हैं कहीं खाल की मोटाई ४२ हाथ (लगभग ६३ फिट) कहीं खाल की मोटाई ७० हाथ (लगभग १०० फिट) बयान की गई है। यह फर्क जहन्नमियों के गुनाहों और जुर्मों के मुताबिक होगा।

मसला १६१. कुछ काफिरों का जिस्म इतना बड़ा कर दिया जाएगा कि वे विशाल और व्यापक जहन्नम के एक कोने में समा जाएंगे।

عن الحارث بن قیش رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (ان من امتی من یعظم النار حتیٰ یکون احد زوایاها)

Www.IslamicBooks.Website

رواه ابن ماجه (٢) (صحيح)

हज़रत हारिस बिन कैस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "मेरी उम्मत में से कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्हें जहन्नम (में डालने) के लिए इतना बड़ा कर दिया जाएगा कि वे जहन्नम का एक कोना होंगे (यानी एक कोने मे समा जाएंगे)।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़ुहुद, बाब सफतुन नार- २/३४६०)

Www.IslamicBooks.Website

عَذَابٌ غَيْرُ مَعْرُوْفٍ
कुछ नामालूम अज़ाब

मसला १६२. काफिरों के गुनाहों के जुर्मों के मुताबिक उन्हें कुछ ऐसे नामालूम अज़ाब भी दिए जाएंगे जिनका ज़िक्र न कुरआन मजीद में किया गया है न अहादीस मुबारका में।

وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ (58:38)

"और इसी किस्म के कई और अज़ाब भी होंगे।"

(सूरह सादः ५८)

मसला १६३. कुछ काफिरों को बहुत "दर्दनाक अज़ाब" दिया जाएगा।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيْمٌ (11:45)

"जिन लोगों ने अपने रब की आयतों से कुफ्र किया है उनके लिए बला का दर्दनाक अज़ाब है।।" (सूरह जासियाः ११)

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيْعاً وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ

(36:5)

"जिन लोगों ने कुफ्र किया है अगर उनके पास सारी ज़मीन की दौलत हो और इतनी ही उसके साथ और भी, और वे चाहें कि कयामत के दिन उसे फिदये में देकर अज़ाब से बच जाएं तब भी उनसे वह दौलत कुबूल नहीं की जाएगी ऐसे लोगों के लिए बड़ा दर्दनाक अज़ाब है।"

(सूरह माइदाः ३६)

Www.IslamicBooks.Website

मसला १६४. कुछ काफिरों को बहुत "बड़ा अज़ाब दिया जाएगा।

وَلاَ يَحْزُنكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُونَ فِيْ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَن يَضُرُّواْ اللّهَ شَيْئاً يُرِيْدُ اللّهُ أَلاَّ يَجْعَلَ لَهُمْ حَظّاً فِيْ الآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْم

(176:3)

"(ऐ मुहम्मद!) कुफ्र की राह में दौड़ धूप करने वालों की सरगर्मियां तुम्हें दुखी न करें, ये लोग अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकते अल्लाह तआला का इरादा यह है कि इनके दिलए आखिरत में कोई हिस्सा न रखे और ऐसे लोगों के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।" (सूरह इमरानः १७६)

मसला १६५. कुछ काफिरों को "सख्त अज़ाब" दिया जाएगा।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُواْ بِآيَاتِ اللّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْد (4:3)

"जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को मानने से इंकार किया उनके लिए सख्त अज़ाब होगा।" (सूरह आले इमरानः ४)

وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ (10:35)

"जो लोग बुरी बुरी चालें चलते हैं उनके लिए सख्त अज़ाब है।" (सूरह फातिरः १०)

Www.IslamicBooks.Website

بَعضُ الْمَاثِمِ وَعقُوبَتِهَا الْخَاصَّةِ فِى النَّارِ

जहन्नम में कुछ गुनाहों के खास अज़ाब

(اعاذنا الله تعالىٰ منهن بفضلهٖ و كرمهٖ ومنهٖ لا اله الا هو رب العرش العظيم لا

يسئل عما يفعل)

मसला १६६. ज़कात अदा न करने वालों को ज़हरीले गंजे सांपों के डसने का अज़ाब दिया जाएगा।

عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم (من اتاه الله ما لا فلم يؤد زكاته مثل له ماله يوم القيٰمة شجاعا اقرع،له زبيبتان ،يطوقه يوم القيٰمة ثم يا خذ بلهز متيه يعنى بشد قيه ثم يقول انا ما لك انا كنزك ثم تلا وتحسبن الذين يبخلون بمآ اٰتآ هم الله من فضلهٖ هو خير لهم بل هو شر لهم سيطوقون ما بخلوا بهٖ يوم القيٰمة الأية) رواه البخارى (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमया "जिसे अल्लाह तआला ने माल दिया, और उसने उसकी ज़कात अदा न की तो कयामत के दिन उनका माल गंजे सांप की शक्ल बनकर जिसकी आंखों पर दो नुकते (दाग) होंगे उसके गले का तौक हो जाएगा। फिर उसकी दोनों बाहें पकड़ कर कहेगा। मैं तेरा माल हूं। मैं तेरा खज़ाना हूं। फिर आप सल्ल० ने यह आयत तिलावत फरमाई तुर्जमा, "जिन लोगों को अल्लाह तआला ने अपने फज़्ल से माल दिया है और वह कंजूसी करते हैं वे अपने लिए यह कंजूसी बेहतर न समझें बल्कि उनके हक में बुरा है। शीघ्र ही कयामत के दिन यह कंजूसी उनके गले का तौक होने वाली है।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़कात, बाब मानेअ

Www.IslamicBooks.Website

ज़कात)

मसला १६७. ज़कात अदा न करने वालों को उनकी दौलत (यानी सोने चांदी) की तख्तियां बनाकर आग में गर्म करके पेशानियों, पीठों औरी पहलुओं को दागने का अज़ाब दिया जाएगा।

मसला १६८. जानवरों की ज़कात अदा न करने वालों को जानवरों के पांव तले कुचलने का अज़ाब दिया जाएगा।

عن ابی هريرة رضی الله عنه يقول قال رسول الله صلی الله عليه وسلم (ما من صاحب ذهب ولا فضة لا يؤدی منها حقها الا اذا كان يوم القيٰمة صفحت له صفائح من نار فا حمی عليها فی نار جهنم فيكوٰی بها جنبه وجبينه وظهره كلما ردت اعيدت له فی يوم كان مقداره خمسين الف سنة حتیٰ يقضٰی بين العباد فيرٰی سبيله اماالی الجنة واما الی النار قيل يا رسول الله صلی الله عليه وسلم فا لا بل قال ولا صاحب ابل لا يودی منها حقها ومن حقها حلبها يوم وردها الا اذا كان يوم القيٰمة بطح لها بقاع قرقر او فرما كانت لا يفقد منها فصيلا واحدا تطاء ه با خفا فها وتعضه با فواهها كلما مر عليه اولٰها رد عليه اخرٰها فی يوم كان مقداره خمسين الف سنة حتیٰ يقضٰی بين العباد فيرٰی سبيله اما الی الجنة واما الی النار قيل يا رسول الله صلی الله عليه وسلم فا لبقروالغنم قال ولا صاحب بقر ولا غنم لا يؤدی منها حقها الا اذا كان يوم القيٰمة بطح لها بقاع قرقر لا يفقد منها شيئا ليس فيها عقصاءء ولا جلحآء ولا غضبآء تنطحه بقرونها و تطاء ه با ظلافها كلما مر عليها اولٰها رد عليها اخرٰها فی يوم كان مقداره خمسين الف سنة حتیٰ يقضٰی بين العباد فيرٰی سبيله اما الی الجنة واما الی النار .... الحديث) رواه مسلم (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते है। कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया " जो व्यक्ति सोने और चांदी का मालिक हो लेकिन उसका हक (यानी ज़कात) अदा न करे, कयामत के दिन उस (सोने और चांदी) की

Www.IslamicBooks.Website

तख्तियों बनाकर उन्हें जहन्नम की आग में गर्म किया जाएगा। फिर उन तख्तियां से उनके पहलू, पेशानी और पीठ दागे जाएंगे। जब कभी (ये तख्तियां गर्म करने के लिए) आग में वापस लाई जाएंगी तो दोबारा (अज़ाब देने के लिए) लौटाई जाएंगी। (उनसे यह सुलूक) सारा दिन होता रहेगा जिसकी अवधि पचास हज़ार साल के बराबर है यहां तक कि इंसानों के फैसले हो जाएंगे और वे अपना रास्ता जन्नत की तरफ देख लेंगे या दोज़ख की तरफ। (सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०!) "फिर ऊंटों का क्या मामला होगा?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "जो व्यक्ति ऊंटों का मालिक हो और वह उनका हक (यानी ज़कात) अदा न करे और उनके हक से यह भी है कि पानी पिलाने के दिन दूध दूहे (और मसाकीन को पिलादे) वक कयामत के दिन एक खुले मैदान में औंधे मुंह लेटाया जाएगा और वह ऊंट बहंत स्वस्थ और मोटे होकर आएंगे उनमें से एक बच्चा भी कम न होगा। वे उसे अपनी खुरों (पांव) से रौंदेंगे। और अपने मुंह से काटेंगे। जब पहला ऊंट (अपने मालिक को रौंद कर) जाएगा तो दूसर आ जाएगा (जो उसे रौंदेगा) सारा दिन यूं ही होता रहेगा। जिसका अंदाज़ा पचास हज़ार साल है। यहां तक कि लोगों का फैसला हो जाएगा और वे अपना रास्ता जन्नत की तरफ देख लेंगे या जहन्नम की तरफ।" कहा गया "ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! गाय और बकरी के बारे में क्या इर्शाद है?" फरमाया "कोई गाय और बकरी वाला ऐसा नहीं होगा जो उनका हक (ज़कात) अदा न करे मगर जब कयामत का दिन होगा तो वह एक खुली जगह पर औंधे मुंह लिटाया जाएगा। और उन गाय और बकरियों में से कोई कम न होगी। (सब आएंगी) और उनमें से कोई सींग मुड़ी न होगी न बगैर सींगों के और न टूटे हुए सींगों वाली। वे उसे अपने सींगों से मारेंगी। और अपने खुरों से रौंदेंगी। जब पहली गुज़र जाएगी तो पिछली आ जाएगी। (यानी लगातार आती रहेंगी) दिन भर ऐसा होता रहेगा जिस की मुद्दत पचास हज़ार साल के बराबर है। यहां तक कि बन्दों के बीच फैसला हो

Www.IslamicBooks.Website

जाएगा और वे अपना रास्ता जन्नत की तरफ देख लेंगे या दोज़ख की तरफ।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।(किताबुज़्ज़कात२ बाब मानेअ ज़कात)

मसला १६६. रोज़ा खोरों को उल्टा लटका कर मुंह चीरने की सज़ा दी जाएगी।

عن ابی امامة الباهلی رضی الله عنه قال سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول (بینما انا نائم اتانی رجلان فا خذا بضبعی فاتیابی جبلا وعرا فقالا اصعد فقلت انی لا طیقه 'فقالا انا سنسهله لک فصعدت حتی اذا کنت فی سوآء الجبل اذا با صوات شدیدة 'قلت ما هذه الا صوات قالو هذاعوآء اهل النار 'ثم انطلق بی فاذا انا بقوم معلقین بعرا قیبهم مشققة اشداقهم تسیل اشداقهم دما 'قال قلت من هؤلآء قال الذین یفطرون قبل تحلة صومهم.....الحدیث) رواه ابن خزیمة وابن حبان (ا) (صحیح)

हज़रत अबू उमामा बाहली रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना "मैं सोया हुआ था और मेरे पास दो आदमी अए। उन्होंने मुझे बाजुओं से पकड़ा और मुझे एक मुश्किल चढ़ाई वाले पहाड़ पर लाए और दोनों ने कहा "इस पहाड़ पर चढ़ें।" मैंने कहा " मैं नहीं चढ़ सकता।" उन्होंने कहा "हम आपके लिए सुविधा पैदा कर देंगे।" तो मैं चढ़ गया यहां तक कि मैं पहाड़ की चोटी पर पहुंच गया जहां मैंने सख्त चीख व पुकार की आवाज़ें सुनीं मैंने पूछा "ये आवाज़ें कैसी हैं? उन्होंने बताया "यह जहन्नमियों की चीख व पुकार है" फिर वे मेरे साथ आगे बढ़े जहां मैंने कुछ लोगों को उल्टे लटके हुए देखे जिनके मुंह चिरे हुए हैं और उनसे खून बह रहा है मैंने पूछा "ये कौन लोग हैं?" उन्होंने जवाब दिया "ये वे लोग हैं जो रोज़ा वक्त से पहले इफ्तार कर लिया करते थे।" इसे इब्ने खज़ीमा और इब्ने हब्बान ने रिवायत किया है। (सही तगीब व तर्हीब, लिल अलबानी, जुज़ १, हदीस ६६५)

Www.IslamicBooks.Website

मसला १७०. इल्मे दीन (कुरआन व हदीस) छुपाने वाले को हजन्नम में आग की लगाम पहनाई जाएगी।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (من سئل عن علم ثم کتمه الجم یوم القیٰمة بلجام من النار.) رواه الترمذی (۲) (صحیح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते है। कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "जिस व्यक्ति से दीन का मसला पूछा गया और उसने छुपाया, कयसामत के दिन उसे आग की लगाम पहनाई जाएगी।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (अबवाबुल इल्म, बाब माजा फी कतमानुल इल्म-२/२१३५)

मसला १७१. दोगलापन इख्तियार करने वाले के मुंह में कयामत के दिन आग की दो ज़बानें डाली जाएंगी।

عن عمار رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (من کان له وجهان فی الدنیا کان له یوم القیٰمة لسانان من النار) رواه ابوداؤد (۱) (صحیح)

हज़रत अम्मार रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "जिसने दुनिया में दोरूखापन इख्तियार किया उसके लिए कयामत के दिन आग की दो ज़बानें होंगी।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। (किताबुल अदब, बाब जुल वजहीन-३/४०७८)

मसला १७२. झूठी अफवाहें फैलाने वाले व्यक्ति को जबड़े, नथने और आंखें गुद्दी तक छुरी से चीरने की सज़ा दी जाएगी।

मसला १७३. ज़ानी मर्दों और औरतों को नंगे बदन एक ही तंदूर में जलने की सज़ा दी जाएगी।

मसला १७४. सूदखोर को खून की नदी में गौते खाने और पत्थर

Www.IslamicBooks.Website

निगलने की सज़ा दी जाएगी।

عن سمرة بن جندب رضی الله عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم فی حدیث الرؤیا قال قالا لی (واما الرجل الذی اتیت علیه یشر شر شدقه الٰی قفاه ومسحره الٰی قضاه وعینه الٰی قفاه فانه الرجل یغدو من بیته فیکذب الکذبة الأفاق واما الرجال والنسآء العرآة الذی هم فی مثل بناء التنور فانهم الزناة والزوانی واما الرجل الذی اتیت علیه یسبح فی النهر ویلقم الحجر فانه اکل الربا) رواه البخاری (۲) (صحیح)

हज़रत समरा बिन जुंदुब रज़ि० सपने वाली हदीस में रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "(सपने में मेरे पूछने पर) जिब्रील अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम ने मुझे बताया कि (जो मनाज़िर आपको दिखाए गए हैं उनमें से) सबसे पहले जिस व्यक्ति पर आप का गुज़र हुआ और जिसके जबड़े, नथने और आंखें गुद्दी तक (लोहे के आले से) चीरी जा रही थीं वह व्यक्ति था जो सुबह के वक्त घर से निकलता था झूठी खबरें गढ़ता था जो (आनन फानन) सारी दुनिया में फैल जातीं थीं और वे नंगे मर्द और औरतें जिन्हें आपने तंदूर में (जलते) देखा ज़ानी मर्द और औरतें थीं और वह व्यक्ति जो (खून की) नदी में गौते खा रहा था ओर जिसके मुंह में बार-बार पत्थर डाले जा रहे थे, वह व्यक्ति था जो (दुनिया में) सूद खाता था।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुत्ताबीर)

मसला १७५. मय्यित पर रौना धोना और बैन करने वाली औरत (या मर्द) की कयामत के दिन गंधक का पायजामा और खुजली का कुर्ता पहनाया जाएगा।

عن ابی مالک الاشعری رضی الله عنه ان النبی صلی الله علیه وسلم قال (اربع فی امتی من امر الجاهلیة لا یترکونهن الفخر فی الاحساب والطعن فی الانساب والا ستسقآء با لنجوم والنیاحة وقال

Www.IslamicBooks.Website

النائحة اذا لم تتب قبل موتها تقام يوم القيمة وعليها سربال من قطران ودرع من جرب.) رواه مسلم (١)

हज़रत अबू मालिक अशरी रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "मेरी उम्मत में अज्ञानता काल के चार काम ऐसे हैं जिन्हें लोग नहीं छोड़ेंगे।

१. अपने हसब पर गर्व करना

२. दूसरों के हसब पर व्यंग करना

३. तारों से बारिश तलब करना

४. (मरने वालों पर) नौहा करना।

और रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "नौहा करने वाली औरत अगर करने से पहले तौबा नहीं करेगी तो उसे कयामत के दिन खड़ा करके गंधक का पाजामा और खुजली (खारिश) का कुर्ता पहनाया जाएगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल जनाइज़)

मसला १७६. कुरआन याद करके भुला देने वाले और इशा की नमाज़ पढ़े बगैर सोने वाले व्यक्ति को जहन्नम में लगातार पत्थरों से सर कुचलने की सज़ा दी जाएगी।

عن سمرة بن جندب رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم فى حديث الرؤياقال قالا لى (اماالرجل الاول الذى اتيت عليه يشلخ رأسه بالحجر فانه الرجال يا خذ القرآن فيرفضه وينام عن الصلاة المكتوبة) رواه البخارى (٢)

हज़रत समरा बिन जुंदुब रज़ि० सपने वाली हदीस में रिवायत करते हैं कि सपने में मेरे पूछने पर नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "जिब्रील अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम ने मुझे बताया कि (जो मनाज़िर आपको दिखाए गए हैं उनमें से) सबसे पहले जिस व्यक्ति

Www.IslamicBooks.Website

पर आप का गुज़र हुआ और जिसका सर पत्थर से कुचला जा रहा था यह वह व्यक्ति था जिसने दुनिया में कुरआन (सीख कर) भुला दिया था और इशा की नमाज़ पढ़े बगैर सो जाता था।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुत्ताबीर)

व्याख्या- हदीस शरीफ में यह व्याख्या भी है कि फरिश्ता आदमी के सर पर पत्थर मारता तो सर कुचलने के बाद पत्थर दूर लुढ़क जाता, जब फरिश्ता पत्थर लेकर वापस आता तो सर पहले की तरह सही सालिम हो जाता और फरिश्ता फिर पत्थर मारकर उसका सर कुचल देता यूं फरिश्ता उस आदमी को लगातार सज़ा दे रहा था।

मसला १७७. दूसरों को भालाई करने और बुराई से बचने की नसीहत करने वाले लेकिन खुद अमल न करने वाले की जहन्नम में सज़ा

عن اسامة رضی الله عنه قال سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول (یجاء با لرجل یوم القیٰمة فیلقٰی فی النار فتندلق اقتابه فی النار فیدور کما یدور الحمار برحاه فیجتمع اهل النار علیه فیقولون یا فلان ما شأنک !ألیس کنت تامرنا با لمعروف وتنهانا عن المنکر !قال کنت آمرکم با لمعروف ولا اتیه 'و انهاکم عن المنکر واتیه.) رواه البخاری (۱)

हज़रत उसमान रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है कि "कयामत के दिन एक आदमी लाया जाएगा और उसे आग में डाल दिया जाएगा उसकी अंतड़ियां (पेट से बाहर) आग में होंगी वह अपनी अंतड़ियों को लिए इस तरह घूमेगा जिस तरह बैल (कोल्हू की) चक्की के गिर्द घूमता है। जहन्नमी उसके आस पास जमा हो जाएंगे और पूछेंगे "ऐ फला! तुम्हारा यह हाल कैसे हुआ? क्या तुम हमें नेकी करने और बुराई से बचे रहने की नसीहत नहीं किया करते थे?" वह व्यकित जवाब में कहेगा "मैं तुम्हें नेकी का हुक्म करता था लेकिन खुद नेकी नहीं करता था, तुम्हें बुराई से रोकता था लेकिन खुद नहीं

Www.IslamicBooks.Website

रूकता था।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबु बदाउल खल्क, बाब सफतुन नार)

मसला १७८. आत्महत्या करने वाला जिस तरीके से आत्महत्या करता है जहन्नम में वह लगातार उसी सज़ा में फंसा रहेगा।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال النبی صلی الله علیه وسلم (الذی یخنق نفسه یخنقها فی النار والذی یطعنها یطعنها فی النار.) رواه البخاری (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "जो व्यक्ति अपना गला घोंटकर मरे वह जहन्नम में भी अपना गला घौंटता रहेगा ओर जो व्यक्ति तीर (खंजर, पिस्तौल या बंदूक वगैरह) से अपने आपको मारे वह जहन्नम में भी अपने आपको तीर मारता रहेगा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल जनाइज़, बाब माजा फी कातिलुन्नफ्स)

मसला १७९. शराब पीने वाले को जहन्नम में जहन्नमियों का बदबूदार पसीना पिलाया जाएगा।

मसला १८०. दिखावे की इबादत करने वालों को मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डालीा जाएगा।

व्याख्या- हदीस मसला २६६ के तहत देखें।

मसला १८१. गीबत करने वाले जहन्नम में अपेन नाखुनों से अपने चेहरे ओर सीने का गोश्त नाचेंगे।

عن انس بن مالک رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (لما عرج بی مررت بقوم لهم اظفار من نحاس یخمشون وجوههم وصدورهم فقلت من هؤلاء یا جبریل؟ قال هؤلاء الذین یاکلون لحوم الناس ویقعون فی اعراضهم .) رواه ابو داؤد (۲) (صحیح)

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "मेराज के दौरान में मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ जिनके नाखुन सुर्ख तांबे के थे जिनसे वे अपने चेहरों और अपने सीनों को नोच नोच कर घायल कर रहे थे। मैंने पूछा "ऐ जिब्रील ये कौन लोग हैं?" हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलान ने बताया "ये वे लोग हैं जो दूसरों का गोश्त खाते थे (यानी उनकी गीबत करते थे) ओर उनकी इज़्ज़तों से खेलते थे।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। (किताबुल अदब, बाब फिल गीबत-३/४०८२)

Www.IslamicBooks.Website

تَعلِيقَاتُ الْقُرآنَ عَلىٰ اَهْلِ النَّارِ

जहन्नमियों पर कुरआन मजीद की आलोचना

मसला १८२. कुरआन मजीद का कयामत पर ईमान न रखने वालों के लिए सम्मानित व्यक्ति की उपाधि।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ • ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ • ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ • إِنَّ هَذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ • (50,47:44)

"पकड़ लो इसे और रगेदते हुए ले जाओ, इसे जहन्नम के बीच और उंडेल दो इसके सर पर खैलता पानी का अज़ाब (और कहो इसे) चख उस (अज़ाब) का मज़ा। बड़ा जबरदस्त सम्मानित था तू, यह वही चीज़ है जिसके आने में तुम लोग शक किया करते थे।"

(सूरह दुखनः ४७-५०)

मसला १८३. रसूले अकरम सल्ल० को जादूगर कहकर इस्लाम की दावत ठुकराने वालों को जहन्नम में ले जाते डुए एक व्यंग भरा सवाल! फरमाइए, यह आग जादू है या आंजनाब को कछ नज़र नहीं आ रहा ह?"

يَوْمَ يُدَعُّونَ إِلَى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا • هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ • أَفَسِحْرٌ هَذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ • اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ

(16,13:52)

Www.IslamicBooks.Website

"जिस दिन उन्हें धक्के मार मार कर जहन्नम की आग की तरफ ले जाया जाएगा उस दिन उन्हें कहा जाएगा "यह वही आग है जिसे तुम झुठलाया करते थे अब बताओ यह जादू है या तुम्हें नज़र नहीं आ रहा? जाओ अब इसके अंदर झुलसो, सब्र करो या न करो तुम्हजारे लिए बराबर है (और याद रखो) तुम्हें वैसा ही बदला दिया जा रहा है जेसा तुम अमल करते थे।" (सूरह तूरः १३-१६)

मसला १८४. काफिरों को आग पर तपाते हुए जहन्नम के दारोगा का फरमान "इसी अज़ाब को हुजूर दुनिया में तलब फरमारहे थे अब इस का खूब मज़ा लीजिए।"

قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ • الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ • يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ • يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ • ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ (14,10:51)

"(कयामत के बारे में) गुमान से काम लेने वाले मारे गए वे जो गफलत में मदहोश हैं पूछते हैं आखिर जज़ा का दिन कब आएगा? वे उस दिन आएगा जब ये लोग आग पर तपाए जाएंगे तो उनसे कहा जाएगा अब चखो मज़ा अपने फितने का यह वही चीज़ है जिसके लिए तुम (दुनिया में) जल्दी मचा रहे थे।"

(सूरह ज़ारियातः १०-१४)

मसला १८५. जहन्नम की तरफ जाते हुए काफिरों पर दारेगा जहन्नम का एक मीठा व्यंग "आप हज़रात तो बड़े आज्ञापलक लोग हैं।

احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ • مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ • وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ • مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ • بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ • (26,22:37)

"इकट्ठा करो इन ज़ालिमों को, इनके साथियों को और उन सबको जिनकी ये अल्लाह के अलावा इबादत करते थे। फिर इन सब को

Www.IslamicBooks.Website

जहन्नम की राह दिखाओ और हां ज़रा ठहराओ इन्हें, उनसे कुछ पूछना है (ज़रा बताओ तो) आखिर क्या वजह है कि तुम एक दसूरे की मदद नहीं कर रहे? (जबकि दुनिया में तुम एक दूसरे की मदद करने के दावे किया करते थे) और आज तो (ये सब के सब) बड़े आज्ञापालक बने हुए हैं। (यानी बिला चूं व चरा जहन्नम की राह ले रहे हैं)।'' (सूरह साफ्फातः २२-२६)

Www.IslamicBooks.Website

مُجَادَلَةُ الْكُبَرَآءِ وَاَتْبَاعِهِمُ الضَّآلِّيْنَ فِى النَّارِ

जहन्नम में गुमराह आलिमों, पीरों और उनके मानने वालों के झगड़े

मसला १८६. गुमराह होने वाले आलिमों और पीरों, फकीरों से उनके मानने वाले जहन्नम में कहेंगे "अब हमारा कुछ तो अज़ाब कम करो।" वे जवाब देंगे "यहां हम सब एक ही जैसे हैं। तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकते।"

وَإِذْ يَتَحَاجُّونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاء لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعاً فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا نَصِيْباً مِّنَ النَّارِ • قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيْهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَاد

(48,47:40)

"जब ये लोग जहन्नम में एक दूसरे से कहेंगे (दुनिया में) हम तुम्हारे मानने वाले थे। अब क्या तुम यहां जहन्नम की आग की तकलीफ के कुछ हिस्से से हमें बचा लोगे? बड़ा बनने वाले जवाब देंगे, हम सब यहां एक ही हाल में हैं। अल्लाह बंदों के बीच फैसले कर चुका है। (उस फैसले के खिलाफ अब कुछ नहीं हो सकता)।" (सूरह मोमिनः ४७-४८)

मसला १८७. पीर जहन्नम में जाते हुए अपने मुरीदों को देखकर कहेंगे "भाग्यहीन मुरीदों की ये फौज भी जहन्नम में ही जाएगी।" मुरीद अपने पीरों की गुफ्तगू सुनकर नफरत से जवाब देंगे "बदबख्त! तुम भी जहन्नम में ही जा रहे हो।" ऐ अल्लाह! हमें जहन्नम में पहुंचाने वालों को खूब सज़ा चखा।

هَـذَا فَـوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ لَا مَرْحَباً بِهِمْ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ • قَالُوا

Www.IslamicBooks.Website

بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَباً بِكُمْ أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا فَبِئْسَ الْقَرَارُ • قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَزِدْهُ عَذَاباً ضِعْفاً فِي النَّارِ (61,59:38)

"(जहन्नम में जाने वाले गुमराह पीर अपने मुरीदों को आते देखकर आपस में कहेंगे मुरीदों की) ये फौज भी तुम्हारे साथ ही अज़ाब का शिकार होने वाली है इनके लिए कोई स्वागत नहीं । अब ये आग में झुलसने वाले हैं। वे (मुरीद सुनकर) जवाब देंगे तुम भी आग में झुलसे जाने वाले हो तुम्हारे लिए भी कोई स्वागत नहीं। तुम ही यह अंजाम हमारे आगे लाए हो। कैसा बुरा ठिकाना है फिर वे अल्लाह से विनती करेंगे, ऐ हमारे रब! जिसने हमें इस अंजाम से दो चार किया उसे आग का दोहरा अज़ाब दे।" (सूरह स्वादः ५९-६१)

मसला १८८. गुमराह करने वाले लिडरों के लिए जहन्नम में उनके पैरोकारों की लानत और दोहरे अज़ाब की विनती।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَا • وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلَا • رَبَّنَا آتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْناً كَبِيراً •

(68,66:33)

"जिस दिन उनके चेहरे आग पर उलट पलट किए जाएंगे उस वक्त वे कहेंगे काश हमने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की होती। और फरियाद करेंगे ऐ हमारे रब! हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों की इताअत की उन्होंने हमें सीधे रास्ते से गुमराह कर दिया ऐ हमारे रब! अब उन्हें दोहरा अज़ाब दे और उन पर सख्त लानत कर।"

मसला १८९. जहन्नम में पहुंचने के बाद गुमराह उलमा और गुमराह अवाम का आपस में झगड़ा।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءلُونَ • قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ • قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ • وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم

Www.IslamicBooks.Website

مِّن سُلْطَانٍ بَلْ كُنتُمْ قَوْماً طَاغِينَ • فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا إِنَّا لَذَائِقُونَ • فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا غَاوِينَ • فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ • (33,27:37)

''(गुमराह उलमा और अवाम) एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर सवाल जवाब करेंगे (अवाम) कहेंगे कि तुम हमारे पास आकर कसमें खाते थे (कि हम तुम्हारी हक की तरफ रहनुमाई कर रहे हैं गुमराह उलमा) कहेंगे तुम तो खुद ही ईमान लाने वाले नहीं थे हमारा तुम पर कोई ज़ोर नहीं था। तुम लोग खुद ही उद्दंडी थे। आखिरकार हम (सब) अपने रब के उस फरमान के हकदार हो गए कि हम अज़ाब का मज़ा चखने वाले हैं चूंकि हम खुद गुमराह थे अतः तुम्हें भी गुमराह किया। अर्थात उस दिन वे सब (गुमराह करने वाले और गुमराह होने वाले) अज़ाब में (एक दूसरे के) साथी होंगे।''

(सूरह साफ्फातः २७-३३)

मसला १६० हजन्नम में मुश्रिक अपने ''उस्तादों'' को मक्कारी का ताना दोंगे जबकि ''उस्ताद'' अपनी बेज़ारी का इज़हार करेंगे।

وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ • قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَى بَعْدَ إِذْ جَاءكُم بَلْ كُنتُم مُّجْرِمِينَ • وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَن نَّكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَندَاداً وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ • (33,31:34)

''काश तुम देखो उनका हाल जब ये ज़ालिम अपने रब के हुजूर खड़े होंगे उस वक्त ये एक दूसरे पर इल्ज़ाम धरेंगे। जो लोग दुनिया में

Www.IslamicBooks.Website

दबाकर रखे हुए थ (यानी पैरोकार) बड़े बनने वालों (यानी अपने सरदारों) से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम मोमिन होते। सरदार अपने पैरोकारों को जवाबद देंगे "क्या हमने तुम्हें उस हिदायत से रोका था जो तुम्हारे पास आई थी? नहीं बल्कि तुम खुद ही मुजरिम थे।" कमज़ोर लोग बड़ा बनने वालों से कहेंगे, नहीं नहीं बल्कि यह तो रात व दिन की मक्कारी थी। जब तुम हमसे कहते थक कि हम अल्लाह से कुफ्र करें और दूसरों को उसका शरीक ठहराएं आखिर जब ये लोग (यानी दोनों गिरोह) अज़ाब देखेंगे तो अपने दिलों में पछताएंगे और हम उनके गले में तौक डाले देंगे। लोगों को (कयामत के दिन) वैसा ही बदला मिलेगा जैसा वे (दुनिया में) अमल करते रहे।" (सूरह सबाः ३१-३३)

मसला १६१. जहन्नम में मुरीद अपने गुमराह पीरों, फकीरों से विनती करेंगे "हमें अल्लाह के अज़ाब से बचाओ" पीर जवाब में कहेंगे "यहां अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई नहीं।"

وَبَرَزُواْ لِلّهِ جَمِيعاً فَقَالَ الضُّعَفَاء لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُواْ إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعاً فَهَلْ أَنتُم مُّغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللّهِ مِن شَيْءٍ قَالُواْ لَوْ هَدَانَا اللّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ سَوَاء عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِن مَّحِيصٍ •

(21:14)

जब ये सारे लोग अल्लाह के हुजूर बे-नकाब होंगे तो उनमें से जो लोग दुनिया में कमज़ोर थे (यानी पैरीवी करने वाले थे) वे उन लोगों से जो बड़े बने हुए थे (यानी रहनुमा) उनसे कहेंगे "दुनिया में हम तम्हारे पैरोकार थे अब क्या तुम अल्लाह के अज़ाब से हमें बचाने के लिए कुछ कर सकते हो?" वे जवाब देंगे "अगर अल्लाह ने हमें निजात की कोई राह दिखाई होती तो हम तुम्हें भी निजत की राह दिखा देते। अब हमारे लिए बराबर है चाहे चीखें चिल्लाएं या सब्र करें, हमें बचाने वाला कोई नहीं।" (सूरह इब्राहीमः २१)

Www.IslamicBooks.Website

مَكَالِمَاتُ الْعِبْرَةِ
शिक्षाप्रद संवाद

मसला १६२. दारोगा जहन्नमः क्या तुम्हारे पास अल्लाह के रसूल नहीं आए थे?''

काफिरः आए थे लेकिन हमने स्वयं ही जहन्नम का अज़ाब मोल लिया।''

दारोगा जहन्नमः तो फिर उन दरवाज़ों से दाखिल होकर जहन्नम में तशरीफ ले जाएं।''

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى جَهَنَّمَ زُمَراً حَتَّى إِذَا جَاؤُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاء يَوْمِكُمْ هَذَا قَالُوا بَلَى وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ (71:39)

''(फैसले के बाद) काफिर गिरोह दर गिरोह जहन्नम की तरफ हांके जाएंगे। जब वे हजन्नम के करीब पहुचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे। जहन्नम के दरबान उनसे कहेंगे ''क्या तुम्हारे पास स्वयं तुम्हारे लोगों में से ऐसे रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाते और इस दिन के आने से डराते? वे जवाब देंगे ''हां आए थे लेकिन अज़ाब का फैसला काफिरों पर हक साबित होकर रहा।'' कहा जाएगा ''दाखिल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में यहां अब तुम्हे हमेंशा रहाना है घमंड करने वालों के लिए बहुत ही बुरी जगह है।''

(सूरह जुमरः ७१)

Www.IslamicBooks.Website

मसला १६३. दारोगा जहन्नमः तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था?"

काफिरः "आया था लेकिन हमने उस झूठला दिया। काश! हम उसकी बात गौर से सुनते और आग से बच जाते।"

दारोगा जहन्नमः लानत है तुम पर, अब ऐतराफ जुर्म का फायदा?"

كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ • قَالُوا بَلَى قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ • وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ • فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِّأَصْحَابِ السَّعِيرِ (11,8:67)

"हर बार जब कोई गिरोह जहन्नम में डाला जाएगा, दरबान उनसे सवाल करेंगे "तुम्हारे पास कोई खबरदार करने वाला नहीं आया था?" वे जवाब देंगे "हां खबरदार करने वाला आया था मगर हमने उसे झुठला दिया और कहा अल्लाह ने कुछ भी नाज़िल नहीं किया और तुम लोग ज़बरदस्ती गुमराही में पड़े हुए हो (तब जहन्नमी हसरत से) कहेंगे काश हम (दुनिया में गौर से बात) सुनते या समझते तो आज इस भड़कती आग के सज़ावारों में शामिल न होते।" इस तरह वे अपने जुर्मों का एतराफ करेंगे (जवाब में दरबार कहेंगे) "लानत है इन जहन्नमियों पर!" (सूरह मुल्कः ८-११)

मसला १६४. दारोगा जहन्नमः तुम्हारे मुश्किलकुशा और हाजत रवा कहां हैं?"

मुश्रिकः "अफसोस! उनकी मुश्किलकुशाई और हाजत रवाई तो बेकार और व्यर्थ साबित हुई।

إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ • فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ • ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ • مِن

Www.IslamicBooks.Website

دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُو مِن قَبْلُ شَيْئًا •

(74,71:40)

"जब मुश्रिकों की गर्दनों में तौक और ज़ंजीरें होंगी और वे (जहन्नम के) खौलते हुए पानी में घसीटें जाएंगे और जहन्नम की आग में जलाए जाएंगे तो उनसे पूछा जाएगा जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा शरीक समझते थे वे कहां हैं? मुश्रिक जवाब देंगे वे तो हमसे गुम हो गए। (यानी अब नज़र ही नहीं आ रहे) बल्कि (यूं लगता है जैसे) उससे पहले हम किसी को पुकारते ही न थे। (सूरह मोमिनः ७१-७४)

मसला १६५. काफिर (अपने कानों, आंखों और खाल से मुखातिब होकर): "तुमने अल्लाह की अदालत में हमारे खिलाफ गवाही क्यों दी?"

कान, आंख और जिल्द : "हमें उसी अल्लाह ने बोलने का हुक्म दिया जिसने हमें पैदा किया इस लिए हमें गवाही दी।"

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاء اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ • حَتَّى إِذَا مَا جَاؤُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ • وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدتُّمْ عَلَيْنَا قَالُوا أَنطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ •

(21,19:41)

"जिस दिन अल्लाह तआला के (सारे) दुश्मन (काफिर और मुश्रिक) आग की तरफ ले जाए जाएंगे और अगलों को पिछलों के आने तक रोक लिया जाएगा यहां तक सारे (अल्लाह के दुश्मन) वहां (आग के ऊपर) पहुंच जाएंगे तो उनके कान, उनकी आंखें और उनकी जिस्म की खालें उनके (गुनाहों) पर गवाही देंगी कि वे दुनिया में क्या कुछ करते रहे फिर वे (अल्लाह के दुश्मन) अपने जिस्म की खालों से कहेंगे तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी? वे जवाब देंगी हमें उसी अल्लाह ने बोलने की ताकत दी है जिसने हर चीज़ को बोलने की ताकत दी है उसी ने तुम्हें

Www.IslamicBooks.Website

पहली बार पैदा किया अब उसी तरफ तुम वापस लाए जा रहे हो।''

(सूरह हा०मीम०सज्दाः १६-२१)

मसला १६६. जन्नती (जहन्नमियों से) : ''अल्लाह तआला ने हमारे साथ किए हुए सारे वायदे पूरे कर दिये क्या तुम्हारे साथ किए हुए वायदे भी पूरे हो गए?''

जहन्नमीः ''हां हमारे साथ किए हुए वायदे भी पूरे हो गए।

दारोगा जहन्नम : ''लानत है आखिरत का इंकार करने वालों पर और इस्लाम का रास्ता रोकने वालों पर।''

وَنَادَى أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقّاً فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقّاً قَالُواْ نَعَمْ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ اللّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ • الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجاً وَهُم بِالآخِرَةِ كَافِرُونَ • (45,44:7)

''(जन्नत में दाखिल होने के बाद) जन्नती, जहन्नमियों को पुकार कर कहेंगे हमारे रब ने हम से जो वायदे किए थे वे सारे के सारे सच साबित हुए क्या तुमने भी उन वायदों को पा लिया जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे साथ किए थे? वे जवाब देंगे ''हां'' तब दोनों गिरोंहों के बीच एक पुकारने वाला (फरिश्ता) पुकारेगा अल्लाह की लानत उन ज़ालिमों पर जो लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते थे। उस (रास्ते) को टेढ़ा करना चाहते थे और आखिरत का इंकार करते थे।'' (सूरह आराफः ४४-५५)

मसला १६७. दुनिया में एक साथ ज़िन्दगी बसर करने वाले मुनाफिकों और मोमिनों के बीच निम्नलिखित शिक्षाप्रद संवाद होंगे।

मुनाफिकः ''इस अंधेरे में ज़रा हमें भी अपने नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लेने दो।''

मोमिनः ''यह नूर हासिल करने के लिए दोबारा दुनिया में जाओ

Www.IslamicBooks.Website

(अगर जा सकते हो)।"

इस इंकार पर मुनाफिकों की दो बारा विनम्र विनती।

मुनाफिकः "क्या दुनिया में हम तुम्हारे साथ न रहते थे?"

मोमिनः तुम हमारे साथ तो रहते थे लेकिन अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के बारे में भ्रम का शिकार थे, मुसलमानों को धोखा देते रहे अतः तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है।"

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُوراً فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِن قِبَلِهِ الْعَذَابُ • يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ قَالُوا بَلَى وَلَكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّى جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ • فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَأْوَاكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ • (15,13:57)

"कयामत के दिन मुनाफिक मर्द और औरतें मोमिनों से कहेंगे ज़रा हमारी तरफ देखा ताकि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ फायदा उठा सकें उनसे कहा जाएगा कि पीछे (यानी दुनिया में) लौट जाओ और वहां से (अपने लिए) रोशनी ढूंढ कर लाओ। फिर उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा उस दरवाज़े के अन्दर रहमत (यानी जन्नत) होगी और बाहर अज़ाब (यानी जहन्नम) मुनाफिक (दोबारा) मोमिनों से पुकार कर कहेंगे क्या (दुनिया में) हम तुम्हारे साथ न थे? मोमिन जवाब देंगे हां, मगर तुमने अपने आपको (कपट के) फितने में डाला, और अवसर वादी रहे, (अल्लाह और उसके रसूल के बारे में) शक में पड़े रहे और झूठी आशाएं (इस्लाम और मुसलमानों को दुनिया से मिटाने की) तुम्हें फरेब देती रहीं यहां तक कि अल्लाह तआला का फैसला (यानी मौत) आ गया, आखिर वक्त तक वह बड़ा धोखाबाज़ (यानी शैतान) तुम्हें अल्लाह तआला के मामले में धोखा देता रहा अतः आज न

Www.IslamicBooks.Website

तुम से कोई नज़राना कबूल किया जएगा न काफिरों से, तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है वही तुम्हारा साथी है और बदतरीन अंजाम।''

(सूरह हदीदः १३-१५)

मसला १६८. अल्लाह तआला का सीधे काफिरों से संवाद।

अल्लाह तआलाः ''क्या मेरी आयतें तुम्हारे पास नहीं आयी थीं?''

काफिरः ''या अल्लाह! हम वास्तव में गुमराह थे एक बार हमें यहां से निकाल दे दोबारा कुफ्र किया तो हम सज़ावार होंगे।

अल्लाह तआलाः ''दूर हो जाओ, यहां से निकलने के बारे में मुझ से बात न करो, ज़रा यह बताओ तुम कितने दिनों ज़िन्दा रहे?''

काफिरः ''बस एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा।''

अल्लाह तआलाः ''इतनी अल्प अवधि के लिए भी तुम अक्ल से काम न ले सके और यह समझ बैठे कि हमारे पास कभी नहीं पलटोगे।''

• أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَى عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ • قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْماً ضَالِّينَ • رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ • قَالَ اخْسَؤُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ • إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ • فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّى أَنسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ • إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ • قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ • قَالُوا لَبِثْنَا يَوْماً أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ • قَالَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلاً لَّوْ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ • أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثاً وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ • (115,105:23)

''क्या मेरी आयतें तुम्हें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं और तुम लोग (जवाब में) इन्हें झुठलाते रहे? वे कहेंगे ऐ हमारे रब! हमारी बदबख्ती हम

Www.IslamicBooks.Website

पर गालिब आ गई हम वास्तव में गुमराह थे "ऐ हमारे रब! हमें एक बार यहां से निकाल दे फिर ऐसा जुर्म करे तो ज़ालिम होंगे।" अल्लाह तआला जवाब देगा दूर हो जाओ मेरे सामने से पड़े रहो इसी में और मुझ से बात न करो, तुम वही लोग हो कि मेरे कुछ बन्दे जब कहते थे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान लाए हमें माफ फरमा, हम पर रहमत कर तू सब रहम करने वालों से ज़्यदा रहम फरमाने वाला है, तो तुमने उनका मज़ाक उड़ाया यहां तक कि उनकी ज़िद में तुम्हें यह भी भुला दिया कि मैं भी कोई हूं और तुम उन पर हंसते रहे आज उनके उस सब्र का फल मैंने यह दिया है कि वही कामयाब हैं। फिर अल्लाह तआला उनसे पूछेगा बताओ ज़मीन में तुम कितने साल रहे? वे कहेंगे एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा हम वहां ठहरे, शुमार करने वालों से पूछ लीजिए। इर्शाद होगा "थोड़ी ही देर ठहरे होना! काश तुमने यह उस वक्त जाना होता? क्या तमने यह समझ रखा था कि हमने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है और तुम्हें हमारी तरफ कभी पलटना ही नहीं है।" (सूरह मोमिनः १०५-११५)

मसला १६६. अल्लाह तआला का काफिरों से एक और सीधा संवाद।

अल्लाह तआला : "क्या मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना सच है या नहीं?"

काफिरः "क्यों नहीं बिल्कुल सच है।"

अल्लाह तआलाः "तो अपने इंकार का मज़ा चखो।"

काफिरः अफसोस कयामत के बारे में हमने सख्त गलती की।"

وَلَوْ تَرَى إِذْ وُقِفُواْ عَلَى رَبِّهِمْ قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُواْ بَلَى وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُواْ الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ • قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُواْ بِلِقَاء اللّهِ حَتَّى إِذَا جَاءتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُواْ يَا حَسْرَتَنَا عَلَى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَى ظُهُورِهِمْ أَلاَ سَاء

Www.IslamicBooks.Website

مَا يَزِرُونَ • (31,30:6)

"काश तुम वह मंज़र देख सको जब ये काफिर अपने रब के हुजूर खड़े किए जाएंगे उस वक्त उनका रब उनसे पूछेगा, क्या यह (मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना) हकीकत नहीं है?" काफिर कहेंगे "हां ऐ हमारे रब बिल्कुल हकीकत है अल्लाह तआला इर्शाद फरमाएगा, तो फिर अपने इंकार के बदले में अज़ाब का मज़ा चखो। नुकसान में पड़े गए वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मुलाकात को झुठलाया और जब वह घड़ी अचानक आ जाएगी तो कहेंगे "हाय अफसोस कयामत के माममले में हमसे कैसी गलती हुई और उनका हाल यह होगा कि अपनी पीठों पर अपने गुनाहों का बोझ लादे हुए होंगे बहुत ही बुरा बोझ है जो ये उठाएंगे।"
(सूरह अनआमः ३०-३१)

मसला २००. जन्नती और जहन्नमी के बीच एक संवाद।

जन्नतीः "तुम्हें कौन सी चीज़ जहन्नम में ले गई?"

जहन्नमीः हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे, मिस्कीन को खाना नहीं खिलाते थे, अल्लाह और उसूल का मज़ाक उड़ाने वालों के साथ मिलकर हम भी मज़ाक उड़ाते थे और बदले के दिन को झुठलाते थे।"

فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءلُونَ • عَنِ الْمُجْرِمِينَ • مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرَ • قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ • وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِينَ • وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ • وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّينِ • حَتَّى أَتَانَا الْيَقِينُ • (47,40:74)

(जन्नती) जन्नत में जहन्नमी से सवाल करेंगे तुम्हें कौन सी चीज़ जहन्नम में ले गई? वे कहेंगे हम नमाज़ पढ़ने वालों में से नहीं थे, मिस्कीन को खाना नहीं खिलाते थे और हक के खिलाफ बातें बनाने वालों के साथ मिलकर बातें बनाते थे, बदले के दिन को झुठ करार देते थे यहां तक कि हमें मौन आ गई।" (सूरह मुद्दस्सिरः ४०-४७)

Www.IslamicBooks.Website

मसला २०१. अल्लाह तआला और उसके वलियों के बीच एक शिक्षाप्रद संवाद।

अल्लाह तआलाः ''क्या तुमने मेरे बंदों को गुमराह किया था या ये खुद गुमराह हुए?''

अल्लाह के वलीः ''सुब्हानल्लाह! हम तरे अलावा किसी दूसरे को अपना हाजतरवा और मुश्किलकुशा कैसे बना सकते थे, तूने इन्हें धन दौलत दिया जिसे पाकर ये स्वयं ही गुमराह हुए।''

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْماً بُوراً ۝ (18,17:25)

''कयामत के दिन अल्लाह तआला मुशिरकों को और उनके माबूदों को भी घेर लाएगा जिन्हें ये अल्लाह को छोड़कर माबूद समझ रहे हैं फिर उनसे पूछेगा ''क्या तुमने मेरे इन बंदों को गुमराह किया था या ये स्वयं ही गुमराह हो गए थे?'' वे कहेंगे ''पाक है आप की ज़ात, हमारी तो यह मजाल न थी कि आपके सिवा किसी दूसरे को अपना संरक्षक बनाएं, आपने इन्हें और इनके बाप दादा को खूब सामाने जिन्दगी दिया ये (तेरा) फरमान भूल गए और हलाकतज़दा होकर रह।'' (सूरह फुरकानः १७-१८)

मसला २०२ दारोगा जहन्नम से जहन्नमी के कुछ शिक्षाप्रद सवाल व जवाब।

عن عبدالله بن عمرو فی قولہٖ عزوجل (ونادوا یا مٰلک لیقض علینا ربک)قال یخلّٰی عنهم اربعین عا ما لا یجیبهم ثم اجابهم (انکم ماکثون)(الزخرف:۷۷)فیقولون (ربنا اخرجنا منها فان عدنا فانا ظٰلمون)قال فیخلّٰی عنهم مثل الدنیا ثم اجابهم (اخسؤا فیها ولا تکلمون)(المومنون:۱۰۸)قال فواللہ ما ینبس القوم بعد هٰذه

الكلمة ان كان الا الزفير والشهيق. رواه الحاكم (١) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (बिन आस रज़ि०) अल्लाह तआला के इर्शाद "जहन्नमी जहन्नम के दारोगा "मालिक" से विनती करेंगे कि "तेरा रब हमारा काम तमाम ही कर देता तो अच्छा है।" (सूरह अहज़ाबः ७७) के बारे में फरमाते हैं कि (जहन्नमियों की इस विनती के जवाब में) दारोगा जहन्नम "मालिक" विनती का कोई जवाब नहीं देगा। (चालीस साल के बाद) दारोगा उन्हें यह जवाब देगा "तुम इसी जहन्नम में रहोगे।" (सूरह ज़ुख्रूफः ७७) फिा जहन्नमी (सीधे) कहेंगे "ऐ हमरे परवरदिगार! हमें (एक बार) इस जहन्नम से निकाल दे अगर हम दोबारा ऐसा करें तो ज़ालिम होंगे।" (सूरह मोमिनूनः १०७) अल्लाह तआला उनकी बात से इसी तरह मुंह मोड़ लेगा जिस तरह उन्हें दुनिया में अल्लाह तआला की बात से मुंह मोड़ लिया था। फिर अल्लाह तआला उन्हें जवाब इर्शाद फरमाएगें "दूर हो जाओ मेरे सामने से, फिर अल्लाह तआला उन्हें जवाब इर्शाद फरमाएंगे "दूर हो जाओ मेरे सामने से पड़े रहो इसी में और मुझ से बात न करो।" (सूरह मोमिनूनः १०८ अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० फरमाते हैं) अल्लाह तआला की कसम उसके वाद उनके होंठ बन्द हो जाएंगे और सिर्फ उनकी चीख व पुकार की आवाज़ें बाकी रह जाएंगी।" इसे हाकिम ने रिवायत किया है।(४/६४० तहक़ीक अब्दु लकादिर अता, प्रकाशन दारूल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत)

Www.IslamicBooks.Website

اَلْاَمَانِیُّ الذَّائِفَةُ

नाकाम हसरतें

मसला २०३. पानी की कुछ बूंदों की हसरत नामुराद।

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ • الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ نَنسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ •

(51,50:7)

"जहन्नमी जहन्नतियों को पुकारेंगे कुछ थोड़ा सा पानी हम पर डाल दो या जो रिज़्क अल्लह ने तुम्हें दिया है उसी में से कुछ फेंक दो वे जवाब देंगे कि अल्लाह तआला ने काफिरों पर ये दोनों चीज़ें हराम कर दी हैं जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया था और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी (की रंगिनियों) ने धोखे से डाले रखा (तो अल्लाह तआला फरमाता है कि) आज हम भी उन्हें उसी तरह भुला देंगे जिस तरह वे उस दिन की मुलाकात को भूले रहे और हमारी आयतों का इंकार करते रहे।" (सूरह आराफः ५०-५१)

मसला २०४. रोशनी की एक किरण हासिल करने की हसरत नाकाम।

व्याख्या- आयत मसला १६७ के तहत देखें।

मसला २०५. जहन्नम के अज़ाब में सिर्फ एक दिन की कमी की विनती और दारोगा जहन्नम की डांट।

Www.IslamicBooks.Website

وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْماً مِّنَ الْعَذَابِ • قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُم بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا بَلَى قَالُوا فَادْعُوا وَمَا دُعَاء الْكَافِرِيْنَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ • (50,49:40)

"जहन्नम में पड़े हुए लोग जहन्नम के कारिन्दों से अर्ज़ करेंगे "अपने रब से दुआ करो कि वह हमारे अज़ाब में सिर्फ एक दिन के लिए ही कमी कर दे, वे पूछेंगे "क्या तुम्हारे पास रसूल स्पष्ट अहकाम लेकर नहीं आए थे? वे कहेंगे "हां" जहन्नम के कारिन्दे जवाब देंगे फिर खुद ही दुआ करो और (याद रखो) काफिरों की दुआ तो अकारत ही जाने वाली है।" (सूरह मोमिनः ४६-५०)

मसला २०६. मौत की तमन्ना और उसमें नाकामी।

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ قَالَ إِنَّكُم مَّاكِثُونَ • (لَقَدْ جِئْنَاكُم بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ • (78,77:43)

(जहन्नमी, दारोगा जहन्नम को) पुकारेंगे ऐ मालिक (दारोगा जहन्नम का नाम) अब तो तेरा रब हमारा काम तमाम ही कर दे तो अच्छा है। वह जवाब देगा, "तुम यूं ही (जहन्नम में) पड़े रहोगे हम (यानी अल्लाह के संदेशवाहक) तुम्हारे पास हक लेकर आए थे मगर तुम में से अकसर को हक ही नागवार था।" (सूरह ज़ुख्रूफः ७७-७८)

मसला २०७. जहन्नम का अज़ाब देखकर काफिर पछताएगा "काश! मैंने इस ज़िन्दगी के लिए कुछ आगे भेजा होता।"

وَجِيْءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى • يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي • فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ • وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ • (26,23:89)

"और जिस दिन जहन्नम सामने लाई जाएगी उस दिन इंसान को समझ आएगी लेकिन उस वक्त समझाने का क्या फायदा? काफिर कहेगा काश! मैंने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए कुछ आगे भेजा होता फिर उस

Www.IslamicBooks.Website

दिन अल्लाह तआला जो अज़ाब देगा वैसा अज़ाब देने वाला कोई नहीं और अल्लाह जैसा बांधेगा वैसे बांधने वाला कोई नहीं।''

(सूरह फज्रः २३-२६)

मसला २०८. गुमराह करने वाले पीरों, दुर्वेशों और आलिमों को जहन्नम में अपने पावों तले रौंदने की हसतर नाकाम।

ذَلِكَ جَزَاء أَعْدَاء اللَّهِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاء بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ • وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ • (29,28:41)

''अल्लाह के दुश्मनों का बदला यह आग है जिसमें हमेशा हमेशा के लिए उनका घर होगा यह बदला है इस बात का कि उन्होंने हमारी आयतों का इंकार किया वहां (आग में) काफिर कहेंगे ''ऐ हमारे रब! जिन्नों और इंसानों में से जिन-जिन ने हमें गुमराह किया है हमें ज़रा दिखादे ताकि हम उन्हें अपने पावों तले रौंदे ताकि वे खूब ज़लील व ख्वार हों। (सूरह हा०मीम०सज्दाः २८-२९)

मसला २०९. आग को देखकर दुनिया की ज़िन्दगी में अक्ल और सोच समझ से काम लेने की हसरत।

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ • فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقاً لِّأَصْحَابِ السَّعِيرِ • (11,10:67)

''(जब काफिर जहन्नम की हौल नाक आवाज़ें सुनेगे तो) कहेंगे ''काश! हम सुनते या समझते होते तो आज इस भड़कती हुई आग के सज़ावारों में शामिल न होते।'' इस तरह वे अपने कुसूर का स्वयं एतेराफ करेंगे।'' लानत है उन जहन्नमियों पर (सूरह मुल्कः १०-११)

मसला २१०. काफिर आग को देखकर इच्छा करेगा ''काश मैं

Www.IslamicBooks.Website

मिट्टी होता।''

إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ عَذَاباً قَرِيباً يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ تُرَابا • (40:78)

हमने लोगों को उस अज़ाब से डरा दिया है जो करीब आ गया है। जिस दिन आदमी वह सब कुछ देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है उस दिन काफिर पुकार उठेगा ''काश मैं मिट्टी होता।''

(सूरह नबाः ४०)

मसला २११. एक और नाकाम हसरत ''काश मैंने रसूल की बात मानी होती और काश फलां फलां को दोस्त न बनाया होता।''

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلاً • يَا وَيْلَتَى لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلاناً خَلِيلاً • لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءنِي وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنسَانِ خَذُولا •

(29,27:25)

''उस दिन ज़ालिम अपने हाथों को चबा-चबा कर कहेगा ''ऐ काश! मैंने रसूल की राह अपनाई होती, हाय अफसोस! मैंने फलां व्यक्ति को दोस्त न बनाया होता उसने तो मुझे नसीहत आ जाने के बाद गुमराह कर दिया शैतान वास्तव में इंसान को धोखा देने वाला है।''

(सूरह फुरकानः २७-२९)

मसला २१२. आग में चलने के बाद काफिर इच्छा करेंगे ''काश! हमने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की इताअत की होती।''

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولا • (66:33)

''जिस दिन उनके चेहरे आग पर उलट पलट दिए जाएंगे उस

Www.IslamicBooks.Website

वक्त वे कहेंगे काश हमने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की होती।" (सूरह अहज़ाबः ६६)

मसला २१३. अपने गुनाहों का एतेराफ करने के बाद जहन्नम से निकलने की हसरत नाकाम।

قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ • ذَلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ • (12,11:40)

"वे (काफिर जहन्नम में) कहेंगे ऐ हमारे रब! तूने हमें वास्तव में दो बार मौत और दोबार ज़िन्दगी दी अब हम अपने गुनाहों का एतेराफ करते हैं क्या यहां से निकलने का कोई रास्ता है? (जवाब में इर्शाद होगा) यह हालत जिसका तुम शिकार हो इसी वजह से है कि जब अकेले अल्लाह की तरफ बुलाया जाता था तो तुम मानने से इंकार करते थे और जब दूसरों को उसके साथ शरीक किया जाता तो तुम मान लेते थे अब फैसला अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर के हाथ में है।" (सूरह मोमिनः ११-१२)

मसला २१४. मुजरिम अपनी औलाद, बीवी, भाई खानदान यहां तक कि धरती की सारी सृष्टि को जहन्नम में डालने के बदले स्वयं जहन्नम से बचना चाहेगा लेकिन यह हसरत पूरी न हो सकेगी।

يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ • وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ • وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ • وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ • كَلَّا إِنَّهَا لَظَى • نَزَّاعَةً لِّلشَّوَى • (16,11:70)

"मुजरिम चाहेगा कि उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए अपनी औलाद को, अपनी बीवी को, अपने भाई को अपने करीब तरीन खानदान को जो उसे (दुनिया में) पनाह देने वाला था और धरती के सब लोगों को बदले में दे दे और उसे निजात मिल जाए। हरगिज़ नहीं, वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी जो गोश्त पोस्त चाट जाएगी।"

Www.IslamicBooks.Website

(सूरह मआरिजः ११-१६)

मसला २१५. काफिर ज़मीन के वज़न के बराबर सोना सदका करके जहन्नम के अज़ाब से बचना चाहेगा लेकिन उस वक्त यह इच्छा पूरी न हो सकेगी।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَباً وَلَوِ افْتَدَى بِهِ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ • (91:3)

"बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया और कुफ्र की हालत में मरे उनमें से कोई व्यक्ति अपने आपको अज़ाब से बचाने के लिए ज़मीन के बराबर सोना बदले में दे दे तो भी उसे कुबूल न किया जाएगा ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है और उनके लिए कोई मददगार नहीं हैं।"

(सूरह आले इमरानः ६१)

عن انس بن مالک رضی الله عنه قال (یقال للکافر یوم القیٰمة أرایت لو کان لک ملأ الارض ذهبا اکنت تفتدی به) فیقول نعم فیقال له (قد سئلت ایسر من ذٰلک.) رواه مسلم (۱)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "कयामत के दिन काफिर से पूछा जाएग अगर तेरे पास धरती के बराबर सोना होता (जहन्नम से बचने के लिए) फिदये में दे दोगे?" वह कहेगा "हां !" फिर उसे कहा जाएगा "(दुनिया में) तुमसे इसकी निस्बत कहीं ज़्यादा आसान बात का मुतलबा किया गया था (यानी कालिमा तौहीद का इकरार जिसे तुमने पुरा नहीं किया)।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताब सफतुल मुनाफिकीन, बाब फिलकुफ्फार)

मसला २१६. अज़ाब देखकर मुश्रिकों के अपने ठहराए हुए शरीकों के बारे में हसरत "काश हमें एक बार दुनिया में भेजा जाए और हम भी उन पेशवाओं से इसी तरह इज़हार बेज़ारी करें जिस तरह आज ये हमसे

Www.IslamicBooks.Website

कर रहे हैं।"

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ • وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّؤُوا مِنَّا كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ • (167,166:2)

"(कयामत के दिन) वही पेशवा, जिनका दुनिया में अनुसरण किया गया था, अज़ाब को सामने देखकर अपने मानने वालों से इज़हार बेज़ारी करेंगे दोनों के (आपसी प्यार व मुहब्बत के) ताल्लुकात का सिलसिला खत्म हो जाएगा तो मानने वाले कहेंगे काश हम एक बार फिर दुनिया में जाते और हम भी उन से इसी तरह इज़हार बेज़ारी करते जैसे इन्होंने (आज हमारे साथ) की। अल्लाह तआला मुश्रिकों के आमाल इस तरह उनके सामने लाएगा कि वे सारे आमाल उनके लिए हसरत का कारण व नदामत बन जाएंगे लेकिन वे आग से निकलने की कोई राह नहीं पाएंगे।"

(सूरह बकरहः १६६-१६७)

मसला २१७. आग का अज़ाब देखकर काफिर के दिल में पैदा होने वाली हसरतें।

"अफसोस! मैं अल्लाह की जनाब में गुस्ताखियां न करता।"

"अफसोस! मैं अल्लाह और उसके रसूल का मज़ाक न उड़ाता।"

"अफसोस! मैं भी हिदायत हासिल करने की कोशिश करता।"

"अफसोस! मैं भी परहेज़गार बनकर रहता।"

"अफसोस! एक मौका और मिल जाए तो मैं नेक बनकर दिखाऊं।"

وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ • أَن تَقُولَ نَفْسٌ يَا حَسْرَتَىٰ عَلَىٰ

Www.IslamicBooks.Website

مَا فَرَّطتُ فِي جَنبِ اللَّهِ وَإِن كُنتُ لَمِنَ السَّاخِرِينَ • أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ • أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ • بَلَى قَدْ جَاءتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ • (59,55:39)

"और अनुसरण करो अपने रब की भेजी हुई किताब के बेहतरीन पहलू की इससे पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आजाए और तुम्हें खबर भी न हो। ऐसा न हो कि बाद में कोई व्यक्ति कहे "अफसोस! मेरी इस गलती पर जो मैं अल्लाह की जनाब में करता रहा अफसोस मैं भी मज़ाक उड़ाने वालों में शामिल था।" या यूं कहे "काश अल्लाह ने मुझे हिदायत बख्शी होती तो मैं भी परहेज़गारों में होता।" या अज़ाब देखकर कहे "काश! मुझे और मौका और मिल जाए और मैं भी नेक अमल करने वालों में शामिल हो जाऊं।" और उस वक्त उसे जवाब मिलेगा "क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास आ चुकी थीं फिर तूने उन्हें झुठलाया और तकब्बुर किया और तू (खुद ही) काफिरों में से था।"

(सूरह ज़ुमर: ५५-५६)

मसला २१८. अंजाम नज़र आने के बाद काफिर की हसरत "हाय अफसोस मेरा आमाल नामा मुझे न दिया जाता", "हाय अफसोस दुनिया की मौत ही मरे लिए फैसलाकुन होती।"

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ • وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ • يَا لَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ • (27,25:69)

"और जिसका आमाल नामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा वह कहेगा "काश मरा आमाल नामा मुझे न दिया गया होता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है काश मेरी (दुनिया की) मौत ही फैसला कुन होती।" (सूरह हाक्कह: २५-२७)

मसला २१९. अफसोस ! मैं अल्लह के सयाथ शरीक न करता।

Www.IslamicBooks.Website

عن ابی هريرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم (كل اهل النار يرٰی مقعده من الجنة فيقول لو ان الله هدانی فيكون عليهم حسرة وكل اهل الجنة يرٰی مقعده من النار فيقول لولا ان الله هدانی فيكون له شكرا ثم تلا رسول الله صلی الله عليه وسلم (ان تقول نفس يا حسرتا علٰی ما فرطت فی جنب الله) رواه الحاكم (ا) (صحيح)

हज़रत अब हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "हर जहन्नमी जन्नत में अपनी जगह देखता है और कहता है काश अल्लाह मुझे हिदायत देता (तो मैं जन्नत में होता) और वह (देखना) उसके लिए हसरत का कारण बनेगा और हर जन्नती हजन्नम में अपनी जगह देखता है और कहता है अगर मुझे अल्लाह हिदायत न देता (तो मैं इस जगह होता) और वह (देखना) उसके लिए शुक्र का कारण बनता है फिर रसूले अकरम स्लल० ने यह आयत तिलावत फरमाई "(कयामत के दिन) कोई आदमी यह न कहे "अफसोस मेरी इस गलती पर जो मैं अल्लह की जनाब में करता रहा" (सूरह जुमरः ५६) इसे हाकिम ने रिवायत किया हे। (सिलसिला अहादीस सही अल अलबानी, जुज़ ५, हदीस २०३४)

Www.IslamicBooks.Website

اَمْنِيَّةُ اَهْلِ النَّارِ فِیْ طَلَبِ فُرْصَةٍ

जहन्नमियों का एक और मौका मिलने की ख्वाहिश करना

मसला २२०. काफिर आग को देखकर हक का एतेराफ करेंगे और नेक अमल करने के लिए दोबारा दुनिया में लौटने की इच्छा करेंगे।

يَوْمَ يَاْتِیْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَا اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِیْ كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوْا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ •

(53:7)

"जिस दिन वह अंजाम (आग का अज़ाब) सामने आ गया तो वही लोग जिन्होंने पहले उसे नज़रअंदाज़ दिया था कहेंगे कि वास्तव में हमारे रब के रसूल हक लेकर आए थे फिर क्या अब हमें कुछ सिफारिशी मिलेंगे जो हमारे हक में सिफररिश करें या हमें दोबारा वापस ही भेज दिया जाए ताकि जो कुछ हम पहले करते थे उसके विपरीत अच्छे अमल करके दिखाएं उन्होंने अपने आपको खसारे में डाल दिया औ वे सारे झूठ जो उन्होंने गढ़ रखे थे उनसे गुम हो गए।" (सूरह आराफः ५३)

मसला २२१. जहन्नम से निकलने और आगे नेक अमल करने की विनती पर दारोगा जहन्नम का खरा खरा जवाब "ज़ालिमों का यहां कोई मददगार नहीं।"

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا رَبَّنَا اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِیْ كُنَّا

Www.IslamicBooks.Website

نَعْمَلْ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمُ النَّذِيرُ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ • (37:35)

"काफिर जहन्नम में चीख चीख कर कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमें यहां से निकाल ले ताकि हम नेक अमल करें उन आमाल से भिन्न जो पहले करते रहे थे (उन्हें जवाब में कहा जाएगा) क्या हमने तम्हें इतनी उमर न दी थी जिसमें कोई सबक लेना चाहता तो ले सकता था और तुम्हारे पास खबरदार करने वाला (पैगम्बर) भी आ चुका था अब मज़ा चखो, (उस अज़ाब का) ज़ालिमों का यहां कोई मददगार नहीं।"

मसला २२२. जहन्नम में मुश्रिकों का एतेराफे जुर्म और दूसरा मौका मिलने पर मोमिन बनकर रहने की तमन्ना।

فَكُبْكِبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ • وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ • قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ • تَاللَّهِ إِن كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ • إِذْ نُسَوِّيكُم بِرَبِّ الْعَالَمِينَ • وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ • فَمَا لَنَا مِن شَافِعِينَ • وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ • فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ • (102,94:26)

"औंधे मुंह जहन्नम में डाल दिए जाएंगे गुमराह लोग, उनके उपास्यों और इबलीस के सारे के सारे लश्कर, उसमें ये सब आपस में झगड़ा करेंगे और गुमराह लोग (अपने उपास्यों से) कहेंगे, अल्लह की कमस हम तो खुली गुमराही में पड़े हुए थे जब तुम्हें रब्बुल आलमीन के बराबर समझ रहे थे और वे लोग वास्तव में मुजरिम थे जिन्होंने हमें गुमराह किया अब (यहां) न हमारा कोई सिफारिशी है न कोई सच्चा दोस्त काश हमें एक बार फिर पलटने का मौका किल जाए तो हम मोमिन बनकर रहें।" (सूरह शुअराः ९४-१०२)

मसला २२३. अल्लाह अताला के समक्ष नदामत और खिजालत के साथ काफिर ईमान लाने के वायदे पर दोबारा दुनिया में भेजे जाने की

Www.IslamicBooks.Website

विनती करेंगे जवाब में इर्शाद होगा "अपनी करतूतों के बदले में हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो।"

وَلَوْ تَرَى إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُو رُؤُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحاً إِنَّا مُوقِنُونَ • وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَاهَا وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ • فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاء يَوْمِكُمْ هَذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ •

(14,12:32)

"काश तुम देखो वह वक्त जब ये मुजरिम सर झुकाए अपने रब के हुजुर खड़े होंगे (और कह रहे होंगे) ऐ हमारे रब! हमने खूब देख लिया और सुन लिया अब हमें वापस भेज दे ताकि हम नेक अमल करें अब हमें यकीन आ गया है (जवाब में इर्शाद होगा) अगर हम चाहते तो पहले ही हर नफ्स को इसकी हिदायत दे देते मगर मेरी वह बात पूरी हो गई जो मैंने कही थी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों सबसे भर दूंगा पस अब मज़ा चखो अपनी उस हरकत का कि तुमने आज के दिन की मुलाकात को फरामोश कर दिया हमने भी अब तुम्हें फरामोश कर दिया है अब अपनी करतूतों के बदले में हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो।" (सूरह सज्दाः १२-१४)

मसला २२४. आग का अज़ाब देखकर काफिर एक मौका और मिलने और नेक बनकर ज़िन्दगी बसर करने की ख्वाहिश करेंगे जो पूरी नहीं होगी।

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ • بَلَى قَدْ جَاءتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ . (59,584:39)

"(कहीं ऐसा न हो कि कयामत के दिन) कोई व्यक्ति अज़ाब

Www.IslamicBooks.Website

देखकर कहे काश मुझे एक मौका और मिल जाए और मैं भी नेक अमल करने वालों में शामिल हो जाऊं (और उस वक्त उसे यह जवाब मिले) क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास आ चुकी थीं फिर तूने उन्हें झुठलाया, घमंड किया और तू काफिरों में से था।" (सूरह जुमरः ५८-५९)

मसला २२५. जहन्नमी अल्लाह तआला के हुजूर ईमान लाने के वायदो पर जहन्नम से निकालने की विनती करेंगे जवाब में अल्ललाह तआला की तरफ से ज़बरदस्त डांट पड़ेगी।

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْماً ضَالِّيْنَ • رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ • قَالَ اخْسَؤُوا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ • إِنَّهُ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ • فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيّاً حَتَّى أَنسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنتُم مِّنْهُمْ تَضْحَكُونَ • (110,106:23)

"जहन्मी कहेंगे ऐ हमारे परवरदिगार! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया वास्तव में हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब! अब हमें यहां से निकाल दे दोबारा ऐसा कुसूर करें तो हम ज़ालिम होंगे।" अल्ललाह तआला इर्शाद फरमाएगा "दूर हो जाओ मेरे सामने से, इसी में और मुझसे बात न करो, तुम वही लोग हो कि मेरे कुछ बंदे जब कहते थे कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हमें माफ फरमा दे हम पर रहम कर तू सब रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है। तो तुमने उनका मज़ाक बना लिया यहां तक कि उनकी ज़िद ने तुम्हें यह भी भुला दिया कि मैं भी कोई हूं और तुम उन पर हंसते रहे।"

(सूरह मामिनः १०६-११०)

मसला २२६. आग का अज़ाब देखकर आफिर कुछ क्षणों की मोहलत तलब करेंगे ताकि ईमान ले आएं लेकिन उनकी विनती रद करदी जाएगी।

Www.IslamicBooks.Website

وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخِّرْنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُم مِّن قَبْلُ مَا لَكُم مِّن زَوَالٍ • (44:14)

"ऐ मुहम्मद! काफिरों को उस दिन से डराओ जब अज़ाब उन्हें आ लेगा और ये ज़ालिम कहेंगे। "ऐ हमारे रब! हमें थोड़ी सी मोहलत और दे दे हम तेरी दावत कुबूल करेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे (मगर उन्हें साफ-साफ जवाब दे दिया जाएगा) क्या तुम वही लोग नहीं हो जो उससे पहले कसमें खा खाकर कहते थे कि हम पर तो कभी पतन आता ही नहीं।" (सूरह इब्राहीमः ४४)

मसला २२७. जहन्नम के किनारे खड़े काफिरों की आरजू "काश एक बार दुनिया में फिर वापस भेज दिया जाए।"

وَلَوْ تَرَى إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ • (27:6)

"काश तुम वह मंज़र देख सको जब काफिर जहन्नम के किनारे खड़े किए जाएंगे और वे कहेंगे काश कोई सूरत ऐसी होती हम दुनिया में फिर वापस भेजे जाएं और अपने रब की निशानियों को न झुठलाएं और ईमान लाने वालों में शामिल हो जाएं।" (सूरह अनआमः २७)

मसला २२८. जहन्नम का अज़ाब देखकर दोबारा दुनिया में जाने की ख्वाहिश।

وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَى مَرَدٍّ مِّن سَبِيلٍ • وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَاشِعِينَ مِنَ الذُّلِّ يَنظُرُونَ مِن طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ.

(45,44:42)

Www.IslamicBooks.Website

"तुम देखोगे जब ज़लिम जो अपने सामने अज़ाब पाएंगे तो कहेंगे क्या अब (दुनिया में वापस) पलटने का कोई रास्ता नहीं? और तुम देखोगे जब ये लोग जहन्नम के सामने लाए जाएंगे तो ज़िल्लत के मारे झुके जा रहे होंगे और जहन्नम को नज़र बचा बचाकर कन अखियों से देखेंगे। (यानी जहन्नम को नज़रें भरकर देखने की हिम्मत नहीं कर पाएंगे) उस वक्त ईमान वाले कहेंगे सत्य में वे लोग घाटे में रहे। जिन्होंने आज कयामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाल दिया खबरदार रहो! ज़ालिम लोग मुस्तकिल अज़ाब में फंसे रहेंगे।"

(सूरह शूराः ४४-४५)

मसला २२६. अज़ाबे अलीम में फंसे मुजरिमों की विनती "ऐ हमारे रब! एक बार अज़ाब हटा ले हम ईमान लाते हैं।"

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ • أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ • ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ • إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلاً إِنَّكُمْ عَائِدُونَ • يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنتَقِمُونَ • (16,10:44)

"ऐ हमारे परवरदिगार! हम से अज़ाब दूर फरमादे हम ईमान लाते हैं उन लोगों की गफलत कहां दूर होती है? उनका हाल तो यह है कि उनके पास रसूल मोबीन आया लेकिन उन्होंने (उस रसूल से भी) मुंह मोड़ लिया और कहा यह तो सिखाया पढ़ाया दीवाना है अब अगर हम कुछ अज़ाब हटा भी दें तो तुम लोग फिर वही कुछ करोगे जो पहले (दुनिया में) कर रहे थे जिस दिन हम तुम्हें बुरी तरह पकड़ेंगे उस दिन खूब बदला लेंगे।" (सूरह दुखानः १२-१६)

मसला २३०. हज़ात इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बाप आज़र हजन्नम को देखकर कहेगा "ऐ इब्राहीम! आज मैं तेरा आज्ञापालन करता हूं लेकिन उस वक्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाप को भी दूसरा

Www.IslamicBooks.Website

मौका नहीं दिया जाएगा और जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

عـن ابـی هـریـرة رضی الله عنه عن النبی صلی الله علیه و سلم قـال (یـلـقٰـی ابـراهیـم اباه آزر یوم القیٰمة وعلٰی وجه آزر قترة وغبرة یـقـول لـه ابـراهیـم الـم اقـل لک لا تـعـصـنی فیقول ابوه فـالیوم لا اعـصیک فیـقـول ابـراهیـم یا رب انک وعـدتنی ان لا تخزینی یوم یبـعثون فای خزی اخزٰی من ابی الابعد؟ فیقول الله تعالٰی انی حرمت الـجنة عـلی الکٰفرین ثم یقال یا ابراهیم ماتحت رجلیک فینظر فاذا هو ضبع ملتطخ فیوخذ بقوائمه فیلقٰی فی النار) رواه البخاری (۱)

हज़रत अब हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमायाः हज़रत हब्राहीम अलैहिस्सलाम कयामत के दिन अपने बाप आज़र को इस हाल में देखेंगे कि उसके मुंह पर सियाही और गर्दो गुबार जमा होगा चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहसस्लाम कहेंगे "मैंने दुनिया में तुम्हें कहा नहीं था कि मेरी अवज्ञा न करो?" आज़र कहेगा "अच्छा आज मैं तुम्हारी अवज्ञा नहीं करूंगा।" हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम (अपने रब से विनती करेंगे) " ऐ मेरे रब! तूने मुझसे वायदा किया था कि मुझे कयामत के दिन रूसवा नहीं करेगा लेकिन उससे ज़्यादा रूसवाई और क्या होगी कि मेरा बाप तेरी रहमत से महरूम है।" अल्लाह तआला इर्शाद फरमाएगा " मैंने जन्नत काफिरों पर हराम कर दी है।" फिर अल्लाह तआला फरमाएगा "ऐ इब्राहीम! तुम्हारे दोनों पांवों के नीचे क्या है?" हज़रत इब्राहीम अलैहस्सलाम देखेंगे कि गन्दगी में लत पत एक बिज्जू है जिसे (फरिश्ते) पांव से पकड़ कर जहन्नम में डाल देंगे।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताब बदाउल खल्क, बाब कौलुल्लाह तआला)

Www.IslamicBooks.Website

اِبْلِيْسُ فِى النَّارِ
इबलीस जहन्नम में

मसला २३१. जहन्नम में दाखिल होने के बाद इबलीस का अपने अनुयायियों से खिताब।

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا أَن دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَلُومُونِي وَلُومُوا أَنفُسَكُم مَّا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنتُم بِمُصْرِخِيَّ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِن قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ • (22:14)

"जब फैसला कर दिया जागा तो शैतान कहेगा "हकीकत यह है कि अल्लाह तआला ने जो तुमसे वायदे किए थे वे सब सच्चे थे और मैंने तुमसे जितने भी वायदे किए उनका उल्लंघन किया और (हां!) मेरा तुम पर कोई ज़ोर तो न था मैंने इसके सिवा कुछ नहीं किया कि अपने रास्ते की तरफ तुम्हें दावत दी, तुमने (स्वयं ही) मेरी दावत पर लब्बैक कही अब मुझे मलामत न करो बल्कि अपने आपको मलामत करो, यहां न तो मैं तुम्हारी फरियादरसी कर सकता हूं न तुम मेरी। इससे पहले जो तुमने मुझे अल्लाह का शरीक बना रखा था मैं उससे बरी हूं ऐसे ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब यकीनी है।" (सूरह इब्राहीमः २२)

मसला २३२. इबलीस का इबरतनाक अंजाम।

मसला २३३. कयामत के दिन सबसे पहले इबलीस को आग का लिबास पहनाया जाएगा।

Www.IslamicBooks.Website

عن انس بن مالک رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (اول من یکسٰی حلة من النار ابلیس فیضعها علٰی حاجبیه و یسحبها من خلفه و ذریته من بعده وهو ینادی یا ثبوراه و ینادون یا ثبورهم حتٰی یقفوا علی النار فیقول یا ثبوراه و یقولون یا ثبورهم فیقال لهم لا تدعوا الیوم ثبوراواحدا وادعوا ثبورا کثیرا) رواه احمد

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "(कयामत के दिन) सबसे पहले इबलीस को आग का लिबास पहनाया जाएगा वह उसे अपनी पेशानी पर रखकर पीछे से घसीटता फिरेगा उसकी औलाद (यानी उसके अनुयायी) उसके पीछे पीछे होंगे, इबलीस अपनी मौत और हलाकत को पुकारता फिर रहा होगा उसके अनुयायी भी मौत और हलाकत को पुकारेंगे यहां तक कि जब वह आग के ऊपर आ खड़े होंगे तो इबलीस कहेगा हाय मौत (उसके साथ) उसके अुनयायाी भी कहेंगे हाय मौत! उस वक्त उनसे कहा जाएगा आज एक मौत को नहीं, बहुत सी मौतों को पुकारो।" (सूरह फुरकानः १४) इसे अहमद ने रिवायत किया है। (इब्ने कसीर- ३/४१५)

Www.IslamicBooks.Website

اَلذِّكْرَ الْمَاضِيَةُ

अतीत की याद

मसला २३४. जहन्नम में एक नेक और सालेह दोस्त की याद और उसकी तलाश।

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى رِجَالاً كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ • أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ • إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ • (64,62:38)

"जहन्नमी आपस में कहेंगे क्या बात है (यहां) हम उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें हम दुनिया में बुरा समझते थे, हमने यूं ही उनका मज़ाक उड़ाया या (मुम्किन है) वे यहीं कहीं (हों लेकिन) नज़रों से ओझल हों? बेशक यह बात सच है कि जहन्नमियों में इस किस्म की बहसें होने वाली हैं।" (सूरह स्वादः ६२-६४)

मसला २३५. जहन्नम में एक गुमराह और बेदीन दोस्त की याद।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلاً • يَا وَيْلَتَى لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلاناً خَلِيلاً • لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءنِي وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنسَانِ خَذُولاً.

(29,27:25)

"उस दिन ज़ालिम अपने हाथों को चबा चबाकर कहेगा हाय अफसोस मैंने रसूल की राह इख्तियार की होती हाय अफसोस! मैंने फलां व्यक्ति को दोस्त न बनया होता उसने तो मुझे नसीहत आ जाने के बाद गुमराह कर दिया। शैतान सत्य में इंसान को धोखा देने वाला है।"

(सूरह फरकानः २७-२९)

Www.IslamicBooks.Website

اَلْاَعْمَالُ السَّائِقَةُ اِلَى النَّارِ خَلَّابَةٌ

जहन्नम में ले जाने वाले आमाल दिलफरेब हैं

मसला २३६. जहन्नम दिलफरेब और दिलकश से ढंपी है।

عن ابی هریرة رضی الله عنه عن رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (لما خلق الله الجنة والنار ارسل جبریل الی الجنة فقال انظر الیها والٰی ما اعددت لاهلها فیها، قال فجاء ها فنظر الیها والٰی ما اعد الله لاهلها فیها قال فرجع الیه قال فوعزتک لا یسمع بها احد الا دخلها فامر بها فحفت بالمکاره فقال ارجع الیها فانظر الیها والٰی ما اعددت لاهلها فیها، قال فرجع الیها، فاذا هی قد حفت بالمکاره، فرجع الیه، فقال وعزتک لقد خفت ان لا یدخلها احد قال اذهب الی النارفانظر الیها والٰی ما اعددت لاهلها فیها، فاذا هی یرکب بعضها بعضا، فرجع الیه، فقال وعزتک لا یسمع بها احد فیدخلها، فامر بها فحفت بالشهوات،فقال ارجع الیها فرجع الیها، فقال وعزتک لقد خشیت ان لا ینجو منها احد الا دخلها)

رواه الترمذی

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "जब अल्लाह तआला ने जन्नत और जहन्नम पैदा फरमाई तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को जन्नत की तरफ भेजा और फरमाया (जाओ और) जन्नत का नज़ारा करो और जो नेमतें मैंने जन्नतियों के लिए पैदा की हैं उन्हें देखो। जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और जन्नत और जन्नतियों के लिए पैदा की गई नेमतें देखीं और फिर अल्लाह तआला की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, तेरी इज़्ज़त की कसम! जो भी

Www.IslamicBooks.Website

इसके बारे में सुनेगा वह ज़रूर इसमें दाखिल होगा फिर अल्लाह तआला ने (फरिश्तों को) हुक्म दिया कि जन्नत को मुश्किलात और मसाइब से ढांप दिया जाए, तब अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सला को (दोबारा) हुक्म दिया कि फिर जाओ और जन्नत और जन्नतियों की लिए मैंने जो नेमतें तैयार की हैं उन्हें देखो। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम गए तो जन्नत मुश्किलात और मसाइब से ढांपी हुई थी चुनांचे अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, तेरी इज़्ज़त की कसम! मुझे डर है कि इसेमें कोई भी दाखिल नहीं हो सकेगा। फिर अल्लाह तआला ने हुक्म दिया अब जहन्नम की तरफ जाओ और उसे देखो और जो अज़ाब मैंने जहन्नमियों के लिए तैयार किए हैं उन्हें देखो कि (किस तरह) उसका एक हिस्सा दूसरे पर सवार है। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम (सब कुछ देखकर) वापस लौटे तो अर्ज़ किया तेरी इज़्ज़त की कसम ! कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो इसके बारे में सुने और फिर इसेमें दाखिल हो। अल्लाह तआला ने हुक्म दिया और जहन्नम को सुख वैभव और स्वादों से ढांप दिया गया तब अल्लाह तआला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को फरमाया दोबारा जाओ हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम दोगारा गए (सब कुछ देखा) और अर्ज़ किया तेरी इज़्ज़त की कसम मुझे डर है कि अब तो इससे कोई बच नहीं पाएगा हर कोई इसमें दाखिल होगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

(बिवाब सफतुल जहन्नम, बाब माजा- २/२०७५)

عن انس بن مالک رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (حفت الجنة بالمکاره و حفت النار بالشهوات) رواه مسلم

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "जन्नत नागवार चीज़ों से घेरी गई है और जहन्नम खुशगवार

Www.IslamicBooks.Website

चीज़ों से घेरी गई है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

(किताब जन्नह व सफतू नईमहा)

मसला २३७. दुनिया की रंगीनियों का अंजाम जहन्नम है।

عن ابی مالک ن الاشعری رضی الله عنه قال انی سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول (حلوة الدنیا مرة الآخرة و مرة الدنیا حلوة الآخرة) رواه احمد والحاکم (۲) صحیح

हज़रत अबू मालिक अशअरी रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है कि "दुनिया की मिठास आखिरत की कड़वाहट है और दुनिया की कड़वाहट आखिरत की मिठास है।" इसे अहमद और हाकिम ने रिवायत किया है। (सही अल जामेउस्सगीर लिल अलबानी-३१५०)

मसला २३८. अल्लाह तआल की अवज्ञा करने वाले कामों में बड़ी लज़्ज़त है।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (الدنیا سجن المومن وجنة الکافر) رواه مسلم

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "दुनिया मोमिन के लिए कैदखाना और काफिर के लिए जन्नत है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है (किताबुज़्ज़ुहद)

Www.IslamicBooks.Website

نِسْبَةُ اَهْلِ النَّارِ وَ الْجَنَّةِ مِنْ بَنِیْ آدَمَ

मानव जाति में से जहन्नमियों और जन्नतियों की निसबत

मसला २३६. हज़ार आदमियों में से नौ सौ निन्नान्वे आदमी जहन्नम में जाएंगे और सिर्फ एक आदमी जन्नत में जाएगा।

عن ابی سعید رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (یقول الله عز وجل یا آدم فیقول لبیک و سعدیک والخیر فی یدیک قال یقول اخرج بعث النار قال ومابعث النار؟قال من کل الف تسع مائةو تسعة وتسعین قال فذٰلک حین یشیب الصغیر(و تضع کل ذات حمل حملها و تری الناس سکاریٰ وما هم بسکاریٰ و لٰکن عذاب الله شدید) قال فاشتد ذٰلک علیهم قالوا یا رسول الله واینا ذک الرجل؟ فقال ابشروا فان من یاجوج وماجوج الف ومنکم رجل.....الحدیث) رواه مسلم

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : ''अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल (कयामत के दिन आदम अलैहिस्सलाम को मुखातिब करेके) फरमाएगा, ऐ आदम ! हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अर्ज़ करेंगे ''ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूं तेरी खिदमत में और तेरी इताअत में और भलाई तेरे ही हाथ में है।'' तब अल्लाह तआला फरमाएगा (बन्दों में से) ''आग की जमाअत अलग करो'' हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अर्ज़ करेंगे ''आग की जमाअत कितनी है?'' अल्लाह तआला इर्शाद फरमाएगा। ''हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे।'' आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया ''यही वह वक्त होगा जब बच्चा बूढ़ा हो जाएगा, हमल

Www.IslamicBooks.Website

वाली औरतों के हमल गिर जाएंगे और तू लोगों को मदहोश देखेगा हालांकि वे मदहोश नहीं होंगे बल्कि अल्लाह तआला का अज़ाब ही इतना सख्त होगा (कि लोग होश व हवाश खो बैठेंगे)" हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि यह सुनकर सहाबा किराम रज़ि० परेशान हो गए और अर्ज़ किया "या रसूलुललह सल्ल० फिर हममें से कौन सा (भाग्यशाली) आदमी होगा (जो जन्नत में जा सकेगा?)" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "सन्तुष्ट रहो याजूज माजूज (की तादाद इतनी ज़्यादा होगी कि उनमें से) एक हज़ार आदमी और तुम में से एक आदमी की गिनती उन्हीं से पूरी हो जागी। इसे मुसिल्म ने रिवायत किया है।

(किताबुल ईमान, बाब लिलबयान)

मसला २४०. हज़रत मुहम्मद सल्ल० की उम्मत के तिहत्तर फिरकों में से बहत्तर फिरके जहन्नम में जाएंगे सिर्फ एक फिरका जन्नत में जाएगा।

عن عوف بن مالک رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (افترقت الیهود علیٰ احدی وسبعین فرقة فواحدة فی الجنة و سبعون فی النار و افترقت النصریٰ علیٰ ثنتین وسبعین فرقة فاحدیٰ وسبعون فی النار و واحدة فی الجنة والذی نفس محمد بیدهٖ لتفترقن امتی علیٰ ثلاث وسبعین فرقة وواحدة فی الجنة وثنتان وسبعون فی النار) قال یا رسول الله صلی الله علیه وسلم من هم؟ قال (الجماعة) رواه ابن ماجه (ا) (صحیح)

हज़रत औफ बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि रसुलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः यहूदी ७१ फिरकों में तक्सीम हुए और उनमें से सिर्फ एक फिरका जन्नत में दाखिल हुआ बाकी ७० फिरके जहन्नम में गए, ईसाई ७२ फिरकों में तक्सीम हुए और ७१ फिरके जहन्नम में दाखिल हुए सिर्फ एक फिरका जन्नत में दाखिल हुआ उस ज़ात की कसम जिसके हाथ में

Www.IslamicBooks.Website

मुहम्मद सल्ल० की जान है, मेरी उम्मत ७३ फिरकों में तक्सीम होगी उनमें से सिर्फ एक फिरका जन्नत में जाएगा बाकी ७२ फिरके जहन्नम में जाएंगे।" अर्ज़ किया गया "या रसूलुल्लाह सल्ल० ! जन्नत में जाने वाले कौन लोग हैं?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "अलजमाअत"। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुल फितन, बाब इफ्तराकुल उमम)

Www.IslamicBooks.Website

كَثْرَةُ النِّسَآءِ فِى النَّارِ
जहन्नम में औरतों की कसरत

मसला २४१. जहन्नम में मर्दों की निसबत औरतो की तादाद ज़्याद होगी।

عن اسامة رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال (قمت على باب الجنة فكان عامة من دخلها المساكين واصحاب الجد محبوسون غير ان اصحاب النار قد امر بهم الى النار وقمت على باب النار فاذا عامة من دخلهاالنسآء) رواه البخارى (١)

हज़रत उसामा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमायाः "मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ उसमें दाखिल होने वालों की अधिक संख्या गरीब और मोहताज लोगों की थी। मालदार लोग (जन्नत के दरवाज़े पर ही) रोक लिए गए जबकि जहन्नम में जाने वाले मालदार लागों को पहले ही जहन्नम में जाने का हुक्म दे दिया गया था फिर मैं ने हजन्नम के दरवाज़े पर खड़ा हुआ जहन्नम में दाखिल होने वालों में अधिक संख्या औरतों की थी।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुन निकाह)

عن ابن عباس رضى الله عنهما قال قال رسو ل الله صلى الله عليه وسلم (اطلعت فى الجنة فرأيت اكثر اهلها الفقرآء واطلعت فى النار فرأيت اكثر اهلها النسآء) رواه الترمذى (٢) (صحيح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः मैनें जन्नत में देखा तो उनमें अधिक संख्या फुकरा

Www.IslamicBooks.Website

की थी और जहन्नम में देखा तो उनमें अधिक संख्या औरतों की थी।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (अबवाब सफतु जहन्नम, बाब माजा- २/२०६८)

मसला २४२. कुछ औरतें अपने शैहरों की एहसान फरामोश और नाशुक्री की वजह से जहन्नम में जाएंगी।

عن ابن عباس رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (رأیت النار فلم ار کالیوم منظرا قط ورأیت اکثر اهلها النسآء)قالو لم یا رسول الله قال؟(بکفرهن)قیل أیکفرن بالله ؟قال(یکفرن العشیر ویکفرن الاحسان لو احسنت الٰی احداهن الدهر ثم رأت منک شیئا قالت ما رأیت منک خیرا قط) رواه مسلم (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "आज मैंनं जहन्नम देखी है और उस जैसे मंज़र (इससे पहले) कभी नहीं देखा। मैंने जहन्नम में औरतों की अधिक संख्या देखी।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "या रसूलल्लाह सल्ल०! वह क्यों?"आप सल्ल० ने इर्शाद फरामया "वह उनकी नाशुक्री की वजह से।" अर्ज़ किया गया क्या वे अल्लाह की नाशुक्री करती हैं।" आपने इर्शाद फरमाया "अपने शौहर की नाशुक्री करती हैं और एहसान नहीं मानती। अगर तुम किसी औरत पर ज़माने भर के एहसान भी कर दो लेकिन जब भी उस (औरत) की मर्ज़ी के खिलाफ (कोई बात) हो जाए तो कहेगी "मैनं तो तुझसे कभी कोई भलाई देखी ही नहीं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल कसूफ)

मसला २४३. कुछ औरतें ज़्यादा लानत करने की वजह से जहन्नम में जाएंगी।

عن ابی سعید ن الخدری رضی الله عنه قال خرج رسول الله

Www.IslamicBooks.Website

صلى الله عليه وسلم فى اضحٰى او فطر الى المصلٰى فمر على النسآء فقال (يا معشر النسآء تصدقن فانى رأيتكن اكثر اهل النار) فقلن وبم يا رسول الله صلى الله عليه وسلم ؟قال (تكثرن اللعن وتكفرن العشير) رواه البخارى (٢)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ईदुल अज़हा या ईदुल फित्र के मौके पर ईदगाह तशरीफ ले गए रास्ते में आप सल्ल० का गुज़र औरतों पर हुआ तो आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "ऐ औरतो! सदका करो, मैंने जहन्नम में देखा है कि औरतों की तादाद ज़्यादा है।" औरतों ने अर्ज़ किया "या रसूलल्लाह सल्ल० उसकी क्या वजह है?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "तुम लानत बहुत ज़्यादा करती हो और अपने शौहर की नाशुक्री करती हो।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

(किताबुल हैज़, बाब तरकुल हाईज़ुल सोम)

मसला २४४. कुछ औरते बारीक, तंग और अर्ध नंग लिबास पहनने की वजह से जहन्नम में जाएंगी।

मसला २४५. कुछ औरते मर्दों को अपनी तरफ रिझाने और आकर्षित करने की वजह से हजन्नम में जाएंगी।

عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم (صنفان من اهل النار لم ارهما 'قوم معهم سياط كاذناب البقر يضربون بها الناس و نسآء كاسيات عاريات مميلات مائلات رؤوسهن كاسنمة البخت المائلة لا يدخلن الجنة ولا يجدن ريحها وريحها ليوجد من مسيرة كذٰا وكذا) رواه مسلم (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "जहन्नम में जाने वाली दो किस्में ऐसी हैं जो मैंने अभी तक (दुनिया में) नहीं देखीं उनमें से एक वे लोग जिनके पास बैल की दुमों की

Www.IslamicBooks.Website

तरह कोड़ें होंगे जिनसे वे लोगों को (यानी अपनी जनता को मारेंगे, दूसरी किस्म उन औरतों की है जो कपड़े पहनने के बावजूद नंगी होती हैं मर्दों को बहकाने वालियां और खुद बहकने वालियां, उनके सर बख्ती ऊंटों के कोहान की तरह (बालों में जुड़े लगाने की वजह से) एक तरफ झुके होंगे ऐसी औरतें जन्नत में जाएंगी न जन्नत की खुशबू सूंघ सकेंगी हालांकि जन्नत की खुशबू तवील मुसाफत से आती है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

(किताब सफतु मुनाफिकीन, बाब जहन्नम अआज़नल्लाहु मिन्हा)

Www.IslamicBooks.Website

اَلْمُبَشِّرُوْنَ بِالنَّارِ
आग की खुशखबरी पाने वाले

मसला २४६. अम्र बिन लहयी जहन्नम में है।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (رأیت عمروبن لحی بن قعمة بن خندف ابا بنی کعب هؤ لآء یجر قصبه فی النار) رواه مسلم (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "मैंने अम्र बिन लहयी बिन कमआ बिन खन्दुफ, बनू काअब के पूर्वज, को जहन्नम में इस हालत में देखा कि वह अपनी आंतें खीचं रहा था।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (कितबु सफतुल मुनाफिकीन, बाब जहन्नम अआज़नल्लाहु मिन्हा)

मसला २४७. "साइबा" बुत ईजाद करने वाला अम्र बिन आमिर खुज़ाई जहन्नम में है।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (رأیت عمر وبن عمار الخزاعی یجر قصبه فی النار وکان اول من سیب السوائب) رواه مسلم (۲)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया 'मैंने अम्र बिन आमिर खुज़ाई को जहन्नम में अपनी आंतें घसीटते देखा है यह वह व्यक्ति था जिसने सबसे पहले साइबा (बुत) ईजाद किया ।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (कितबु सफतुल मुनाफिकीन, बाब जहन्नम अआज़नल्लाहु मिन्हा)

Www.IslamicBooks.Website

मसला २४८. माले गनीमत की चादर चोरी करने के गुनाह में "करकरा" नामक आदमी जहन्नम में है।

व्याख्या- हदीस मसला २६५ के तहत देखें।

मसला २४९. बदर में कत्ल होने वाले कुरैश के चौबीस सरदार जहन्नम में हैं।

عن ابی طلحة رضی الله عنه ان النبی صلی الله علیه وسلم (امر یوم بدر باربعة وعشرین رجلا من صنادید قریش فقذفوا فی طوٰی من اطواء بدر خبیث مخبث فقام علٰی شفة الرکی فجعل ینادیهم بأسمائهم واسماء ابائهم یا فلان بن فلان ویا فلان بن فلان!ایسرکم انکم اطعتم الله ورسوله ؟فانا قد وجدنا ما وعدنا ربنا حقا فهل وجدتم ما وعد ربکم حقا؟) رواه البخاری (۱)

हज़रत अबू तलहा रज़ि० से रिवायत है कि बदर के दिन नबी अकरम सल्ल० ने कुरैश के चौबीस सरदारों को बदर के कुओं में से एक गलीज़ और बदबूदार कुएं में फेंकने का हुक्म दिया जिन्हें फेंक दिया गया। आप सल्ल० ने कुएं की मुडेर पर खड़े होकर तमाम सरदारों को उनके बापों के नाम समेत पुकारा, ऐ फलां बिन फलां! ऐ फलां बिन फलां! क्या अब तुम्हें यह बात अच्छी नहीं लगती कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की इताअत करते? हमसे हामरे रब ने जिस बात का वायदा किया था उसे हमने तो सच पाया क्या तुमने भी अपने रब के वायदे को सच पाया (यानी जहन्नम को)।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

(किताबुल जिहाद, बाबुद दुआ अलल मुश्रिकीन)

मसला २५०. अबू समामा अम्र बिन मालिक जहन्नम में है।

व्याख्या- हदीस मसला १ के तहत देखें।

मसला २५१. जंग अहज़ाब में शरीक कुफ्फार व मुश्रिकीन आग में

Www.IslamicBooks.Website

हैं।

عن علی رضی الله عنه قال لما کان یوم الاحزاب قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (ملأ الله بیوتهم وقبورهم نارا شغلونا عن الصلاة الوسطٰی حین غابت الشمس) رواه البخاری (۲)

हज़रत अली रज़ि० कहते हैं कि अहज़ाब के दिन रसूलुल्लाह सल्ल० ने (मुश्रिकीन के लिए) यूं बददुआ फरमाई "अल्लाह उनके घर और कब्रें आग से भर दे उन्होंने हमें बीच की नमाज़ (नमाज़ अस्र) ने पढ़ने दी याहं तक कि सूरज डूब गया।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

(किताबुल जिहाद, बाबुद दुआ अलल मुश्रिकीन)

Www.IslamicBooks.Website

اَلْمُخَلَّدُوْنَ فِی النَّارِ

हमेशा हमेशा के लिए जहन्नम में जाने वाले लोग

मसला २५२. मुश्रिक जहन्नम में जाएंगे।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِیْ نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِيْنَ فِيْهَا أُوْلَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّة • (6:98)

"बेशक अहले किताब में से जिन्होंने कुफ्र किया और मुश्रिक, जहन्नम की आग में जाएंगे जिसमें वे हमेशा हमेशा रहेंगे। ये लोग बदतरीन मख्लूक हैं।" (सूरह बय्यिना-६)

मसला २५३. काफिर जहन्नम में जाएंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُواْ وَكَذَّبُواْ بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خَالِدُون • (39:2)

"और वे लोग जिन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे आग में जाने वाले हैं जहां वे हमेशा रहेंगे।

(सूरह बकराः ३९)

मसला २५४. मुरतद जहन्नम में जागा।

وَمَن يَرْتَدِدْ مِنكُمْ عَن دِيْنِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُوْلَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِیْ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَأُوْلَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خَالِدُون • (217:2)

"तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा और कुफ्र की हालत में जान देगा उसके आमाल दुनिया और आखिरत में ज़ाया हो जाएंगे ऐसे

Www.IslamicBooks.Website

लोग आग वाले हैं उसमें हमेशा रहेंगे।''

मसला २५५. मुनाफिक जहन्नम में जाएंगे।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنَافِقِيْنَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِيْنَ فِيْهَا هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ • (68:9)

''मुनाफिक मर्दों औरतों ओर काफिरों के साथ अल्लाह ने जहन्नम की आग का वायदा कर रखा है जिसमें वे हमेशा रहेंगे यही (आग) उनके लिए काफी है उन परअल्लाह की लानत है और उनके लिए न टलने वाला अज़ाब।'' (सूरह तौबाः ६८)

मसला २५६. अहले किताब और दूसरे गैर मुस्लिमों से जो लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर ईमान नहीं लाएंगे वे भी जहन्नम में जाएंगे।

عن ابی هريرة رضی الله عنه عن رسول الله صلی الله عليه وسلم قال (والذی نفس محمد بيده لا يسمع بی احد من هٰذه الامة يهودی ولا نصرانی ثم يموت ولم يومن بالذی ارسلت به الا كان من اصحاب النار) رواه مسلم

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः ''उस ज़ात की कसम जिसके हाथर में मुहम्मद (सल्ल०) की जान है इस उम्मत (यानी मेरे बाद सारी औलादे आदम) में से कोई यहूदी या ईसाई (या कोई दूसरा गैर मुस्लिम) मेरे बारे में सुने और फिर जो चीज़ मैं देकर भेजा गया हूं (यानी कुरआन मजीद) उस पर ईमान न लाए और यूं ही मर जाए तो वह जहन्नमी है।इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाब वजूबुल ईमान)

Www.IslamicBooks.Website

وَارِدُوْ النَّارِ مُؤَقَّتاً

कुछ मुद्दत के लिए जहन्नम में जाने वाले लोग

(कुछ एकेश्वरवादी मुसलमान बड़े गुनाहों के वजह से जहन्नम में जाएंगे और अपने अपने गुनाहों की किस्म के मुताबिक जहन्नम में अपनी सज़ा भुगतने के बाद अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से निकाले जाएंगे)

मसला २५७. ज़कात अदा न करने वाले जहन्नम में जाएंगे।

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلاَ يُنفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ • يَوْمَ يُحْمَى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَـذَا مَا كَنَزْتُمْ لأَنفُسِكُمْ فَذُوقُواْ مَا كُنتُمْ تَكْنِزُوْن • (35,34:9)

"जो लोग सोना चांदी जमा करते है। और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दो एक दिन आएगा कि इसी सोने चांदी पर जहन्नम की आग दहकाई जाएगी और फिर उससे उन लोगों की पेशानियों को दागा जाएगा और कहा जाएगा यह है वह खज़ाना जो तुमने अपने लिए जमा किया अब अपनी जमा की हुई दौलत का मज़ा चखो। (सूरह तौबासः ३४-३५)

मसला २५८. मोमिन को जान बुझ कर कत्ल करने वाला लम्बी मुद्दत के लिए जहन्नम में जाएगा।

وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِناً مُّتَعَمِّداً فَجَزَآؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِداً فِيْهَا وَغَضِبَ اللّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَاباً عَظِيْما • (93:4)

"जिसने किसी मोमिन को जान बूझ कर कत्ल किया उसकी सज़ा जहन्नम है जिसमें वह हमेशा रहेगा उस पर अल्लाह का अज़ाब और

Www.IslamicBooks.Website

उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिए सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है।" (सूरह निसाः ९३)

عن ابی سیعد و ابی هریرة رضی الله عنهما عن رسول الله صلی الله علیه وسلم قالوا(لو ان اهل السمآء والارض اشترکوا فی دم مومن لاکبهم الله فی النار)رواه الترمذی

हज़रत अबू सईद और अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल्ल० ने फरमाया "अगर आसमान और ज़मीन में रहने वाली सारी मख्लूक (जिन्न व इंसान व फरिश्ते) एक मोमिन आदमी के कत्ल में शरीक हों तो अल्लाह तआला उन सबको मुंह के बल जहन्नम में डाल देगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (किताबुल दियात, बाब हकम फिददमा- २/११२८)

मसला २५९. कुफ्फार से जंग के दौरान लश्कर से भागने वाला जहन्नम में जाएगा।

وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلاَّ مُتَحَرِّفاً لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزاً إِلَى فِئَةٍ فَقَدْ بَاء بِغَضَبٍ مِّنَ اللّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ • (16:8)

"जिसने (कुफ्फार के मुकाबले से) पीठ फेरी, इल्ला यह कि जंगी चाल के तौर पर ऐसा करे या किसी दूसरी वजह (जैसे अपनी ही) फौज से जा मिलने के लिए ऐसा करे। उसने अल्लाह का गुस्सा मोल लिया उसका ठिकाना जहन्नम होगा जो बंहत ही बुरा ठिकाना है।

(सूरह अनफालः १६)

मसला २६०. यतीम का माल नाहक खाने वाला जहन्नम में जाएगा।

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَى ظُلْماً إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَاراً وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيراً • (10:4)

"जो लोग जुल्म के साथ यतीमों का माल खाते हैं वस्तुतः वे अपने

Www.IslamicBooks.Website

पेट आग से भरते हैं और (कयामत के दिन) वे जहन्नम की भड़कती हुई आग में ज़रूर डाले जाएंगे।" (सूरह निसाः १०)

मसला २६१. पाक दामन औरत पर तोहमत लगाने वाला जहन्नम में जागा।

"जो लोग पाक दामन, बेखबर मोमिन औरतों पर तोहमत लगाते हैं उन पर दुनिया और आखिरत में लानत की गई है और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।" (सूरह : नूर २३)

मसला २६२. फासिक फाजिर और बदकार लोग जहन्नम में जाएंगे।

وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ • يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ • وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِيْنَ • (16,14:82)

"निश्चय ही बदकार लोग हजन्नम में जाएंगे और बदले के दिन वे उसमें दाखिल होंगे और वे उस (जहन्नम) से हरगिज़ गायब नहीं हो सकेंगे।" (सूरह इंफितारः १४-१६)

मसला २६३. नमाज़ छोड़ने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن عبد الله بن عمرو بن العاص رضى الله عنهما عن النبى صلى الله عليه وسلم انه ذكر الصلاة يوما فقال(من حافظ عليها كانت له نورا و برهانا و نجاة يوم القيٰمة ومن لم يحافظ عليها لم يكن له نورا و لا برهانا ولا نجاة وكان يوم القيٰمة مع قارون و فرعون وهامان و ابى بن خلف) رواه ابن حبان (۱) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने एक दिन नमाज़ का ज़िक्र करते हुए फरमाया "जिस व्यक्ति ने नमाज़ की हिफाज़त की उसके लिए नमाज़ कायमत के दिन नूर, बुरहान और निजात का सबब होगी, जिसने नमाज़ की हिफाज़त न की उसके लिए न नूर होगा न बुरहान और न निजात। और कयामत के दिन उसका अंजाम कारून, फिरऔन, हामान और उबइ बिन खल्फ के

Www.IslamicBooks.Website

साथ होगा।" इसे इब्ने हब्बान ने रिवायत किया है। (सही इब्ने हब्बान, जुज़ अरबा, हदीस १४६७)

मसला २६४. रोज़ा न रखने वाले जहन्नम में जाएंगे।

व्याख्या- हदीस मसला १६६ के तहत देखें।

मसला २६५. हैसियत के बावजूद हज न करने वाले हजन्नम में जाएंगे।

عن عمر بن الخطاب رضی الله عنه انه قال لقد هممت ان ابعث رجالا الیٰ هٰذه الامصار فینظروا کل من کان له جدة ولم یحج لیضربوا علیهم الجزیةماهم بمسلمین ما هم بمسلمین.

رواه سعید فی سننه (حسن)

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं कि मैनं इरादा किया कुछ आदमियों को शहरों में भेजूं वे तहकीक करें कि जिन लोगों को हज की ताकत है और उन्होंने हज नहीं किया उन पर जिज़या मुकर्रर कर दूं ऐसे लोग मुसलमान नहीं हैं, ऐसे लोग मुसलमान नहीं हैं। इसे सईद ने अपनी सुनन में रिवायत किया है। (मुत्कीयुल अखबार, किताबुल मनासिक)

मसला २६६. दिखावा करने वाले जहन्नम में जाएंगे।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم(ان اول الناس یقضیٰ علیه یوم القیٰمة رجل استشهد،فاتی به فعرفه نعمه فعرفها، فقال ماعملت فیها؟قال قاتلت فیک حتی استشهدت.قال کذبت ولکنک قاتلت لان یقال جری،فقد قیل، ثم امر به فسحب علیٰ وجهه حتیٰ القی فی النار.ورجل تعلم العلم وعلمه، وقراء القرآن فاتی به فعرفه نعمه فعرفها، قال فما عملت فیها؟ قال تعلمت العلم وعلمته، وقرأت فیک القرآن قال کذبت ولٰکنک تعلمت العلم لیقال انک عالم ،وقرات القرآن لیقال هو قاری،فقد قیل،ثم امر به فسحب علیٰ وجهه حتیٰ القی فی النار، ورجل وسع الله علیه واعطاه من اصناف المال کله، فاتی به فعرفه نعمه فعرفها قال فما عملت فیها؟ قال ما ترکت من سبیل تحب ان

Www.IslamicBooks.Website

ينفق فيها الا انفقت فيها لک قال کذبت، ولکنک فعلت ليقال هو جواد فقد قيل، ثم امر به فسحب علىٰ وجهه ثم القى فى النار)

رواه مسلم

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "कयामत के दिन सबसे पहले एक शहीद लाया जाएगा। अल्लाह तआला उसे अपनी नेमतें गिनवाएगा और शहीद उन नेमतों का इकरार करेगा। अल्लाह तआला उससे पूछेगा तूने इन नेमतों का हक अदा किसे के लिए क्या अमल किया है? वह कहेगा। मैंने तेरी राह में जंग की, यहां तक कि शहीद हो गया। अल्लाह तआला इर्शाद फरमाएगा तू झूठ कहता है। तूने बहादुर कहलाने के लिए जंग की। सो दुनिया में तुझे बहादुर कहा गया। फिर (फरिश्तों को) हुक्म होगा और उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। उसके बाद वह आदमी लाया जाएगा जिसने खुद इल्म सीखा और दूसरों को भी सिखाया और कुरआन पढ़ा अल्लाह तआला उसे अपनी नेमतें याद दिलाएगा और वह (आलिम) उनका इकरार करेगा। तब अल्लाह तआला उससे पूछेगा। इन नेमतों का शुक्रिया अदा करने के लिए तूने क्या अमल किया? वे अर्ज़ करेगा। या अल्लाह मैंने इल्म सीखा, लोगों को सिखाया और तेरी खातिर लागों को कुरआन पढ़कर सुनाया। अल्लाह तआला फरमाएगा। तूने झूठ कहा तूने इल्म इसलिए सीखा ताकि लोग तुझे आलिम कहें और कुरआन इसलिए पढ़कर सुनाया कि लोग तुझे कारी कहें। सो दुनिया ने तुझे आलिम और कारी कहा फिर (फरिश्तों को) हुक्म होगा ओर उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। उसके बाद तीसरा आदमी लाया जाएगा जिसे दुनिया में सम्पन्नता और हर तरह की दौलत से नवाज़ा गया था। अल्लाह तआला उसे अपनी नेमतें जताएगा वह व्यक्ति उन नेमतों का इकरार करेगा। फिर अल्लाह तआला सवाल करेगा। मेरी नेमतों को पाकर तूने कया काम किया? वह कहेगा, या अल्लाह मैंने तेरी राह में उन तमाम जगहों पर माल खर्च किया जहां तुझे माल खर्च करना पसन्द था अल्लाह

Www.IslamicBooks.Website

तआला इर्शाद फरमाएगा तूने झूठ बोला है तूने माल सिर्फ इसलिए खर्च किया ताकि लोग तुझे दानी कहें और दुनिया ने तुझे दानी कहा। फिर (फरिश्तों को) हुक्म होगा और उसे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल इमरा, बाब मिन कातिलुर्रिया)

मसला २६७. नबी अकरम सल्ल० के नाम गलत बात मंसूब करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ام سلمة رضى الله عنها قالت سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول (من يقل على مالم اقل فليتبوأ مقعده من النار.)

رواه البخارى (١)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि मैंने नबी अकरम सल्ल० को फरमाते हुए सुना है "जिस व्यक्ति ने मेरी तरफ ऐसी बात मंसूब की जो मैंने नहीं कही वह अपनी जगह जहन्नम में बना ले। इसे बुखारी ने रिवायत किया है।(किताबुल इल्म, बाब असम)

मसेला २६८. घमंड करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ابى سعيد ن الخدرى وابى هريرة رضى الله عنهما قالا قال رسول الله صلى الله عليه وسلم (العز ازاره والكبرياء ردآء ه فمن ينازعنى عذبته) رواه مسلم (٢)

हज़रत अबू सईद खुदरी और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० दोनों से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "इज़्ज़त अल्लाह का अज़ार है और महानता उसीक चादर है जो व्यक्ति यह मुझसे छीनेगा मैं उसे अज़ाब दूंगा।" इसे मस्लिम ने रिवायत किया है।

(किताबुल बिर वस्सिला)

मसला २६९. सूदखोर जहन्नम में जाएगा।

मसला २७०. ज़ानी मर्द और औरत जहन्नम में जाएंगे।

Www.IslamicBooks.Website

व्याख्या- हदीस मसला १७३-१७४ के तहत देखें।

मसला २७१. शराब पीने वाला जहन्नम में जाएगा।

व्याख्या- हदीस मसला ६० के तहत देखें।

मसला २७२. आत्महत्या करने वाला जहन्नम में जाएगा।

व्याख्या- हदीस मसला १७८ के तहत देखें।

मसला २७३. तस्वीर बनाने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن عبد الله بن مسعود رضی الله عنه قال سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یقول(ان اشد الناس عذابا عند الله المصورون)

رواه البخاری

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि मैंने नबी अकरम सल्ल० को फरमाते हुए सुना है "(कयामत के दिन) तस्वीरें बनाने वालों को अल्लाह के यहां सबसे ज़्यादा सख्त अज़ाब होगा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल्लिबास, बाब अज़ाबुल मुसव्विरीन यममुल कियामह)

मसला २७४. सांसारिक तेज व माल और गर्व व घमंड के लिए दीन का ज्ञान सीखने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن کعب بن مالک رضی الله عنه قال سمعت النبی صلی الله علیه وسلم یقول (من طلب العلم لیجاری به العلمآء او لیماری به السفهآء ویصرف به وجوه الناس الیه ادخله الله النار.)

رواه الترمذی (۲) (حسن)

हज़रत काअब बिल मालिक रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है "जो व्यक्ति इल्म (दीन) हासिल करे १. उलमा से गर्व हासिल करेन के लिए या २. बे इल्म लोगों से झगड़ा करने के लिए या ३. (बड़े) लोगों के चेहरे अपनी तरफ (झूठी शोहरत की खातिर) मुतव्वजह करने के लिए। अल्लाह उन्हें आग में दाखिल फरमाएगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

Www.IslamicBooks.Website

(किताबुल इल्म-२/२१२८)

मसला २७५. बैतुलमाल की रकमें हड़प करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن خولة الانصاريةرضى الله عنهاقالت سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول(ان رجالا يتخوضون فى مال الله بغير حق فلهم النار يوم القيٰمة) رواه البخارى

हज़रत खौला अंसारिया रज़ि० कहती हैं कि मैंने नबी अकरम सल्ल० को यह फरमाते हुए सुना है कि "जो लोग अल्लाह के माल में गड़बड़ी करते हैं वे कयामत के दिन आग में जाएंगे।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल जिहाद, बाब कौलुहु तआला)

मसला २७६. बुढ़ा ज़ानी झुठा बादशाह और घमंडी फकीर जहन्नम में जाएंगे।

عن ابى هريرة رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ثلاثة لا يكلمهم الله يوم القيٰمة ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم شيخ زان وملك كذاب وعائل مستكبر) رواه مسلم

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "कयामत के दिन तीन आदमियों से अल्लाह तआला न बात करेगा न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

१. बुढ़ा ज़ानी

२. झूठा बादशाह

३. घमंडी फकीर।"

इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला २७७. एहसान जतलाने वाला और झूठी कसम खाकर माल बेचने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ابى ذر رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال

Www.IslamicBooks.Website

(ثلاثة لا يكلمهم الله يوم القيٰمة ولا ينظر اليهم ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم قال فقراٰها رسول الله صلى الله عليه وسلم ثلاث مرات قال ابو ذر خابوا و خسروامن هم يا رسول الله؟قال المسبل المنان والمنفق سلعته بالحلف الكاذب) رواه مسلم

हज़रत अबूज़र रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "तीन आदमियों से अल्लाह तआला कयामत के दिन न बात करेगा न उनकी तरफ नज़रे करम करेगा न उनहें पाक करेगा बल्कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।" रसूल अकरम सल्ल० ने ये शब्द तीन मर्तबा इर्शाद फरमाए तो हज़रत अबूज़र रज़ि० ने अर्ज़ किया "नामुराद हुए और घाटे में पड़े वे लोग कौन हैं या रसूलुल्लाह सल्ल०?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "१. अज़ार (तहबन्द, शलवार वगैरह) टखनों से नीचे लटकाने वाला, २. एहसान जतलाने वाला और ३. झूठी कसम खाकर अपना माल बेचने वाला।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

(किताबुल ईमान)

मसला २७८. जानवर पर जुल्म करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن عبد الله رضى الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال(عذبت امراة فى هرة سجنتها حتىٰ ما تت فدخلت فيها النار لا هى اطعمتها وسقتها اذا هى حبستها ولا هى تركتها تاكل من خشاش الارض) رواه مسلم (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "एक औरत (जहन्नम में) अज़ाब दी गई एक बिल्ली को कैद करने के मामले में यहां तक कि वह बिल्ली मर गई और वह औरत जहन्नम में चली गई उस औरत ने बिल्ली को कैद करके न खाना दिया न पानी और न ही उसे आज़ाद किया कि वह ज़मीन के कीड़ें मकोड़े खा सकती।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

(किताबुल बिर वस्सिला)

Www.IslamicBooks.Website

मसला २७६. दूसरों पर जुल्म करने वाला और दूसरों के अधिकरों का हनन करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ابی هریرة رضی الله عنه عن رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (أتدرون ما المفلس؟) قالو المفلس فینا من لا درهم له ولا متاع فقال (المفلس امتی من یاتی یوم القیٰمة بصلاة وصیام وزکوٰة ویاتی وقد شتم هٰذا، وقذف هٰذا، واکل مال هٰذا، وسفک دم هٰذا، وضرب هٰذا، فیعطٰی هٰذا من حسناته، وهٰذا من حسناته فان فنیت حسناته قبل ان یقضٰی ما علیه اخذ من خطایاهم فطرحت علیه، ثم طرح فی النار.) رواه مسلم (۲)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने (सहाबा किराम रज़ि०) से पुछा "क्या तुम जानते हो निर्धन किसे कहते हैं?" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "निर्धन तो वही है जिसके पास पैसे न हों, न ही कोई सामान हो।" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "मेरी उम्मत का निर्धन वह है जो कयामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात जैसी नेकियां लेकर हाज़िर होगा लेकिन किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी को कत्ल किया होगा, किसी को मारा होगा, लिहाज़ा उसकी नेकियां दूसरे लोगों में बांट दी जाएंगी। अगर उसकी नेकियां खत्म हो गईं और मज़लूमों के अधिकार बाकी रह गए तो फिर हकदारों के गुनाह उसके हिसाब में डाल दिए जाएंगे और उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़ुल्म, बाब किसास)

मसला २८०. हराम खाने वाला, बेईमानी करने वाला, धोखा देने वाला, कंजूस या झूठा और अश्लील बातें करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن عیاض بن حمار المجاشعی رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (ذات یوم فی خطبته واهل النار خمسة الضعیف الذی لا زبر له الذین هم فیکم تبعا لا یبتغون اهلا ولا مالا والخائن الذی لا یخفٰی له طمع وان دق الا خانه ورجل لا یصبح ولا

Www.IslamicBooks.Website

یمسی الا هو یخادعک عن اهلک ومالک و ذکر البخل اولکذب و الشنظیر الفحاش.) رواه مسلم (۱)

हज़रत अय्याज़ बिन हमार मुजाशिअी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक दिन अपने खुतबे में इर्शाद फरमाया "आग में जाने वाले पांच किस्म के लोग हैं। पहले वे जाहिल लोग जिन्हें (हलाल व हराम में) कोई तमीज़ नहीं, दूसरे के पीछे (आंखें बन्द करके) चलने वाले घर वालों और माल व मनाल तक से बे फिक्र है दूसरा वह बेईमान व्यकित जिसे मामूली सी चीज़ की ज़रूरत महसूस होती है तो बेईमानी करने लगता है, तीसरा वह व्यक्ति जो तेरे अहल व माल में तुझे धोखा देने वाला है, फिर आप सल्ल० ने कंजूस या झूठे आदमी का ज़िक्र फरमाया और पांचवां वह व्यकित जो अश्लील बातें करने और गालियां बकने वाला है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है

(किताबुल अदब, बाब फि हसनुल खल्क)

मसला २८१. झगड़ालू और दुराचारी जहन्नम में जाएगा।

عن حارثة بن وهب رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (لا یدخل الجنة الجواظ ولا الجعظری)

رواه ابوداؤد (صحیح)

हज़रत हारिसा बिन वहब रिज़० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "झगड़ालू और दूराचानी आदमी जन्नत में नहीं जाएंगे।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। (किताबुल सफतुल मुनाफिकीन, बाब सिफात अहलुल जन्नत वन्नार)

मसला २८२. किसी सुनसान जगह में अपनी ज़रूरत से अधिक पानी के बावजूद किसी मुसाफिर को पानी न देने वाला और दुनिया के लालच में शासक की बैअत करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه

Www.IslamicBooks.Website

وسلم (ثلاث لا يكلمهم الله يوم القيٰمة ولا ينظر اليهم ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم رجل علىٰ فضل مآء با لفلاة يمنعه من ابن السبيل ورجل بايع رجلا بسلعة بعد العصر فحلف له با لله لا خذها بكذا وكذا فصدقه وهو علىٰ غير ذٰلک ورجل بايع اماما لا يبايعه الا لدنيا فان اعطاه منها وفٰى وان لم يعطهٖ منها لم يف.) رواه مسلم (۲)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "तीन आदमियों से अल्लाह तआला कयामत के दिन न बात करेगा न उनकी तरफ नज़रे करम करेगा न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

१. वह व्यक्ति जो जंगल में अपनी ज़रूरत से ज़्यादा पानी रखता हो और मुसाफिर को पानी लेने से रोक दे। (जबकि किसी दूसरी जगह भी पानी उपलब्ध न हो)

२. वह व्यक्ति जिसने असर के बाद माल बेचा और अल्लाह की कसम खाई कि मैंने यह माल इतने में खरीदा है, खरीदार ने सच समझ लिया (और माल खरीद लिया) यद्यपि (दुकानदार ने) वह माल उतने में नहीं खरीदा था।

३. वह व्यक्ति जिसने केवल दुनिया के लालच में शासक की बैअत की अगर शासक ने उसे दुनिया दी तो उससे वफा की अगर दुनिया न दी तो बे वफाई की।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला २८३. गैर मोहतात (विशेषकर दीन के मामले में) बात करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ابى هريرة رضى الله عنه انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول (ان العبد يتكلم با لكلمة ينزل بها فى النار ابعد ما بين المشرق وبين المغرب) رواه مسلم (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह

Www.IslamicBooks.Website

सल्ल० को फरमाते हुए सुना है कि "(कभी-कभी) बन्दा कोई ऐसी बात ज़बान से कह देता है कि मश्रिक व मग्रिब के बीच के फासले से भी ज़्यदा नीचे आग में जा गिरता है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है (किताबुज़्ज़ुहद, बाब हिफज़ुल्लिसान)

मसला २८४. कसम खाकर किसी दूसरे का हक मारने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ابی امامة یعنی الحارثی رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (من اقتطع حق امرء مسلم بیمینه فقد اوجب الله له النار و حرم علیه الجنة) فقال له رجل یا رسول الله صلی الله علیه وسلم! وان کان شیئا یسیرا قال(وان قضیبا من اراک) رواه مسلم

हज़रत अबू उमामा हारिसी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "जिसने कसम खाकर किसी मुसलामन आदमी का हक मार लिया अल्लाह तआला उस पर जहन्नम वाजिब कर देते हैं।" एक आदमी ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल० ! चाहे मामूली से हक हो?"आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "चाहे पीलू की एक टेहनी क्यों न हो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाब वईद)

मसला २८५. पायजामा, शलवार या तहबन्द टखनों के नीचे लटकाने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ابی هریرة رضی الله عنه عن النبی صلی الله علیه وسلم قال(ما اسفل من الکعبین من الازار ففی النار) رواه البخاری

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "तहबन्द का वह हिस्सा जो टखनों के नीचे होगा जहन्नम में जाएगा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

(किताबुत्तहारत, बाब गुस्ल)

मसला २८६. अच्छी तरह वुज़ु न करने वाला जहन्नम में जाएगा।

Www.IslamicBooks.Website

عن عبد الله ابن عمر رضی الله عنهما قال رأى رسول الله صلى الله علیه وسلم قوما يتوضئون و اعقابهم تلوح فقال(ويل للاعقاب من النار اسبغوا الوضوء) رواه ابن ماجه صحيح

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने कुछ लोगों को वुज़ू करते देखा उनकी एड़ियां (गीली न होने की वजह से) चमक नहीं थीं। आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "(सूखी) एड़ियों के लिए आग से हलाकत है वुजु अच्छी तरह किया करो।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुत्तहारत, बाब गुस्ल)

मसला २८७. हराम माल से परवरिश पाने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن جابر رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (كل جسد نبت من سحت فالنار اولیٰ به)

رواه الطبرانی صحيح

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "जो जिस्म हराम माल से पला आग उसे सबसे पहले जलाएगी।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है। (सहीह जामेउस्सगीर, अल लिलबानी, जिल्द ४, हदीस ४३६५)

मसला २८८. दिखावे और शोहरत का लिबास पहनने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن عبد الله بن عمر رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم(من لبس ثوب شهرة فی الدنيا البسه الله ثوب مذلة يوم القيٰمة ثم الهب فيه نارا) رواه ابن ماجه حسن

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "जिस व्यक्ति ने दुनिया में शोहरत और दिखावे के लिए कपड़े पहने अल्लाह तआला उसे कयामत के दिन ज़िल्लत का लिबास

Www.IslamicBooks.Website

पहनाएगा फिर उसमें आग लगा देगा।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुल्लिबास, बाब मिन लेस शोहरह मिनस्सियाब)

मसला २८६. जानते बुझते दीन का मसला छुपाने वाला या न बताने वाला जहन्नम में जाएगा।

व्याख्या- हदीस मसला १७० के तहत देखें।

मसला २६०. कत्ल के इरादे से एक दूसरे पर हमलाआवर होने वाले दोनों मुसलमान जहन्नम में जाएंगे।

عن أبی موسٰی رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (اذا التقی المسلمان بسیفهما فا لقاتل والمقتول فی النار قالوا یا رسول الله صلی الله علیه وسلم هٰذاالقاتل فما بال المقتول ؟قال (انه اراد قتل صاحبه) رواه ابن ماجه (۱) (صحیح)

हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरामया "जब दो मुसलमान एक दूसरे पर अपनी तलवार से हमलाआवर हों तो कातिल और मक्तूल दोनों आग में जाते हैं।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! कातिल का जहन्नमी होना तो सही है मक्तूल क्योंकर जहन्नम में जाएगा?" आप सल्ल० ने फरमाया "मक्तूल भी अपने साथी को कत्ल ही करना चाहता था।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुल फतन)

मसला २६१. धोखा और फरेब देने वाला व्यक्ति जहन्नम में जाएगा।

عن عبدالله بن مسعود رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (من غشنا فلیس منا والمکر والخداع فی النار) رواه الطبرانی (۲) (حسن)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरामया "जिसने धोखा किया वह हममें से नहीं और फरमाया

Www.IslamicBooks.Website

फरेब और धोखा आग में है।'' इसे तबरानी ने रिवायत किया है। (सिलसिला अहादीस सही, अल लिलबानी, जुज़ सालिस, हदीस १०५८)

मसला २६२. सोने के अंगूठी पहनने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ابن عباس رضی الله عنهما ان رسول الله صلی الله علیه وسلم رأی خاتما من ذهب فی ید رجل فنزعه فطرحه وقال (یعمد احدکم الٰی جمرة من نار فیجلعها فی یده) رواه مسلم (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक मर्द के हाथ में सोने की अंगूठी देखी आप सल्ल० ने उसके हाथ से वह अंगूठी उतारी और दूर फेंक दी फिर फरमाया ''तुममें से कोई व्यक्ति आग के अंगारे हाथ में लेना चाहता है तो वह (सोने) की अंगूठी पहन लेता है।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है (किताबुल्लिबास वज़्ज़िनत)

मसला २६३. सोने या चांदी के बर्तनों में खाने पीने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن ام سلمة رضی الله عنها قالت قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (من شرب فی اناء من ذهب او فضة فانما یجرجر فی بطنه نارا من جهنم) رواه مسلم (١)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरामया '' जिसने सोने या चांदी के बर्तन में (खाया) पिया उसने अपने पेट में जहन्नम की आग उतारी।'' इसे मुल्सिम ने रिवायत किया है। (किताबुल्लिबास वज़्ज़िनत)

मसला २६४. जो आदमी यह पसंद करे कि मेरे आने पर लोग ताज़िमन खड़े होकर मेरा इस्तकबाल करें वह जहन्नम में जाएगा।

عن ابی مجلز قال خرج معاویة رضی الله عنه فقام عبدالله بن الزبیر وابن صفوان رضی الله عنهما فقال اجلسا سمعت رسول الله

Www.IslamicBooks.Website

صلى الله عليه وسلم يقول (من سره ان يتمثل له الرجال قياما فليتبوأ من النار) رواه الترمذى (٢) (صحيح)

हज़रत अबू मिजलज़ से रिवायत है कि हज़रत मुआविया रज़ि० के आने पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज़रत सुफियान रज़ि० खड़े हो गए तो हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा "दोनों बैठ जाओ मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है जो व्यक्ति यह पसन्द करे कि लोग अदब से हाथ बांधें उसके सामने खड़े हों वह अपनी जगह जहन्नम में बना ले।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

(अबवाबुल इस्तीज़ान, बाब माजा-२/२२१२)

मसला २६५. माले गनीमत चोरी करने वाला जहन्नम में जाएगा।

عن عبدالله بن عمرو رضى الله عنه قال كان على ثقل النبى صلى الله عليه وسلم رجل يقال له كركرة فمات فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم (هو فى النار) فذهبوا ينظرون اليه فوجدوا عباءة قد غلها. رواه البخارى (٣)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० के ज़माने में एक आदमी को मालेगनीमत पर मुहाफिज़ मुकर्रर किया गया था जिसका नाम किर किरा था जब वह मर गया तो रसूलेअकरम सल्ल० ने फरमाया "वह आग में है।" सहाबा किराम रज़ि० ने (उसका सामान जाकर देखा तो उसमें माले गनीमत से चुराई हुई एक चादर पाई।) इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

(किताबुल जिहाद, बाब गुलूल)

मसला २६६. गीबत करने वाला जहन्नम में जाएगा।

व्याख्या- हदीस मसला १८१ के तहत देखें।

मसला २६७. लोगों की अधिक संख्या "ज़बान" और "शर्मगाह"

Www.IslamicBooks.Website

की वजह से जहन्नम में जाएगी।

عن ابی هریر ة رضی الله عنه قال سئل رسول الله صلی الله علیه وسلم عن اکثر ما یدخل الناس الجنة قال (تقوی الله وحسن الخلق) وسئل عن اکثر ما یدخل الناس النار قال(الفم والفرج) رواه الترمذی (ا) (حسن)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० से मालूम किया गया, कौन सा अमल सबसे ज़्यादा लोगों के जन्नत में जाने का सबब बनेगा?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "तकवा और अच्छा अख्लाक।" फिर आप सल्ल० से अर्ज़ किया गया "कौनसा अमल सबसे ज़्यादा लोगों के आग में जाने का सबब बनेगा?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "मुंह और शर्मगाह" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

(किताबुल बिर फिस्सलाह, बाब माजा फी हसनुल खल्क)

Www.IslamicBooks.Website

كَلَامُ النَّارِ

जहन्नम की बातचीत

मसला २६८. जहन्नम अल्लाह तआला के हुक्म से बात करेगी।

अल्लाह ताआलाः "क्या तू भर गई है?"

जहन्नमः "कुछ और है?" (तो वह भी लाइए)

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ • (30:50)

"कयामत के दिन हम जहन्नम से पूछेंगे क्या तू भर गई है? और वह कहेगी क्या और कुछ है?" (सूरह काफः ३०)

मसला २६६. जहन्नम की आंखें होंगी जिनसे वह काफिरों को आते हुए दूर ही से देख लेगी।

إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظاً وَزَفِيراً • (12:25)

"जब जहन्नम काफिरों को दूर से (आते) देखेगी तो काफिर जहन्नम का गुस्से से चिल्लाना सुन लेंगे।" (सूरह फुरकानः १२)

मसला ३००. जहन्नम की आंखें हैं जिनसे वह देखेगी, दो कान है जिसे वह सुनेगी और ज़बान है जिससे वह बात करेगी।

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (یخرج عنق من النار یوم القیٰمة له عینان تبصران واذنان تسمعان ولسان ینطق یقول انی وکلت بثلاثة بکل جبار عنید' وبکل من دعا مع الله الٰها اٰخر و با لمصورین)

رواه الترمذی (۱) (صحیح)

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "कयामत के दिन जहन्म से एक गर्दन निकलेगी उसकी दो आंखें होगी जिससे वह देखेगी, दो कान होंगे जिनसे वह सुनेगी और ज़बान होगी जिससे बोलेगी और कहेगी मैं तीन आदमियों को अज़ाब देने के लिए मुसल्लत की गई हूं।

१. अल्लाह के मुकाबला में सर्कश और उससे बैर रखने वाला।

२. अल्लाह के साथ किसी दूसरे को पुकारने वाला।

३. तस्वीरें बनाने वाला।"

इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (अबवाब सफतुल जहन्नम, बाब सफतुन नार-२/२०८३)

Www.IslamicBooks.Website

قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا

अपने आपको और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ

मसला ३०१. अल्लाह तआला ने तमाम अहले ईमान को जहन्नम की आग से बचने और अपने घर वालों को बचाने का हुक्म दिया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيْكُمْ نَاراً وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ • (6:66)

"ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो! बचाओ अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से जिसका ईधन इन्सान और पत्थर हैं जिस पर अत्यंत तेज़ तर्रार और कठारे फरिश्ते मुकर्रर होंगे जो कभी अल्लाह के हुक्म की अवज्ञा नहीं करते और जो हुक्म भी दिया जाता है उसे पूरा करते हैं।" (सूरह तहरीमः ६)

मसला ३०२. तमाम अंबिया किराम ने अपनी अपनी उम्मतों को जहन्नम के अज़ाब से बचने की ताकीद फरमाई।

(अ) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحاً إِلَى قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَـهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ • (59:7)

"हमने नूह अलैहि० को उसकी कौम की तरफ भेजा उसने कहा "ऐ बिरादराने कौम! अल्लाह की बंदगी करो उसके अलावा तुम्हारे कोई

Www.IslamicBooks.Website

उपास्य नहीं, मैं तुम्हारे हक में एक हौलनाक अज़ाब के दिन से डरता हूं।" (सूरह आराफः ५९)

(ब) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَاناً مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضاً وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ • (25:29)

"इब्राहीम अलैहि० ने कहा तुमने दुनिया की ज़िंदगी में अल्लाह को छोड़कर बुतों को अपने बीच मुहब्बत का ज़रिया बना लिया है मगर कयामत के दिन तुम एक देसरे का इंकार करोगे और एक दूसरे पर लानत करोगे और तुम्हारा ठिकाना आग होगा जहां कोई भी तुम्हारा मददगार नहीं होगा।" (सूरह अन्कबूतः २५)

(स) हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتْ النُّذُرُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّيَ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ • (21:46)

"ज़रा उन्हें आद के भाई (हूद) का किस्सा सुनाओ जब उसने अहकाफ (जगह का नाम) में अपनी कौम को खबरदार किया और ऐसे खबरदार करने वाले इससे पहले भी गुज़र चुके थे और इसके बाद भी आते रहे (उन्होंने खबरदार किया) कि अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो मुझे तुम्हारे हक में एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।"

(सूरह अहकाफः २१)

(द) हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम

وَإِلَى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْباً قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُواْ اللّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ وَلاَ تَنقُصُواْ الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ إِنِّيَ أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّيَ

Www.IslamicBooks.Website

أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ • (84:11)

"और मदयन वालों की तरफ हमने उनके भाई शुऐब अलैहि० को भेजा उसने कहा "ऐ मेरी कौम के लोगो! अल्लाह की बंदगी करो उसके अलावा तुम्हारा कोई माबूद नहीं और नाप तौल में कमी न करो, आज मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूं मगर मुझे डर हैं कल तुम पर ऐसा दिन आएगा जिसाक अज़ाब सबको घेर लेगा।" (सूहर हूदः ८४)

(द) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكَ وَالسَّلَامُ عَلَى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى • إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَى مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّى • (48,47:20)

"मूसा अलैहि० ने फरमाया "(ऐ फिरऔन!) हम तेरे पास पालनहार की निशानी लेकर आए हैं सलामती उसके लिए है जो सीधे रास्ते का अनुसरण करे और जो झुठलाए और मुंह मोड़े उसके लिए (आग का) अज़ाब है।" (सूरह ता०हा०: ४७-४८)

(म) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ • (72:5)

"और मसीह अलैहि० ने कहा "ऐ बनी इस्राईल! अल्लाह की बंदगी करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी। जिसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराया उस पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी और उसका ठिकाना जहन्नम है और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।"

(सूरह माइदाः ७२)

(न) अन्य अंबिया व रसूल अलैहिस्सलाम

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا

Www.IslamicBooks.Website

خَوفٌ عَلَيهِم وَلا هُم يَحزَنُونَ • وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ • (49,48:6)

"और नहीं भेजते हम रसूल मगर इसलिए कि नेक अमल करने वालों को वह अच्छे अंजाम की खुशखबरी दें और बुरे अमल करने वालों को अज़ाब से डराएं फिर जो लोग उनकी बात मान लें और अपने व्यवहार में सुधार कर लें उनके लिए न भय होगा न वह दुख उठाएंगे और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाएं उन्हें उनकी अवज्ञा की वजह से अज़ाब आकर रहेगा।" (सूरह अनआमः ४८-४६)

(प) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ أَن تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَى وَفُرَادَى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ • (46:34)

"ऐ मुहम्मद सल्ल०! उनसे कहो मैं तुम्हें बस एक बात की नसीहत करता हूं अल्लाह के लिए तुम अकेले अकेले और दो दो मिलकर अपना दिमाग लड़ाओ और सोचो तुम्हारे साहब (मुझ) में आखिर कौन सी बात उन्माद की है? वह तो एक सख्त अज़ाब के आने से पहले तुम्हें खबरदार करने वाला है।" (सूरह सबाः ४६)

मसला ३०३. रसूले अकरम सल्ल० ने अपने निकटतम रिश्तेदारों को सब से पहले आग से बचने की ताकीद फरमाई।

عن ابی هريرة رضی الله عنه قال لما نزلت هٰذه الأية (وانذر عشيرتک الاقربين) دعا رسول الله صلی الله عليه وسلم قريشا فاجتمعوا فعم وخص فقال (يا بنی كعب بن لوی انقذوا انفسكم من النار يا بنی مرة بن كعب انقذوا انفسكم من النار يا بنی عبد شمس انقذوا انفسكم من النار'يا بنی عبد المناف انقذوا انفسكم من النار'يا بنی هاشم انقذوا انفسكم من النار'يا بنی عبد المطلب انقذوا

Www.IslamicBooks.Website

انفسکم من النار 'یا فاطمة انقذی نفسک من النار 'فانی لا املک لکم من الله شیئا غیر ان لکم رحما سابلها ببلا لها) رواہ مسلم (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि जब यह आयत उतरी "और डराओ अपने निकट संबंधियों को" (सूरह शुअराः २४१) तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने कुरैश के लोगों को बुला भेजा वे सब इकट्ठे हुए तो आप सल्ल० ने (पहले) सबको सामान्य रूप से डराया फिर (अलग अलग नाम लेकर) खास को डराया और फरमाया "ऐ काअब बिन लुवय की औलाद अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ, ऐ मुर्रा बिन काअब की औलाद! अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ, ऐ हाशिम के बेटो! अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ, ऐ अब्दुल मुत्तलिव की औलाद! अपने आपको जहन्नम की आग से अचाओ और ऐ फातिमा (बिन्ते मुहम्मद सल्ल०) अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ अल्लाह के मुकाबले में (कयामत के दिन) मैं तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकूंगा अलबत्ता (दुनिया में) तुमसे मेरा जो रिशत है उसे जोड़ता रहूंगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ३०४. हर मुसलमान मर्द, औरत को आग से बचने की हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए।

عن عدی بن حاتم رضی الله عنه قال ذکر رسول الله صلی الله علیه وسلم النار فاعرض واشاح 'ثم قال (اتقو النار) ثم اعرض واشاح 'حتی ظننا انه کانما ینظر الیها ثم قال (اتقو النار ولو بشق تمرة فمن لم یجد فبکلمة طیبة) رواہ مسلم (۱)

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि० कहते हैं कि रसुलुल्लाह सल्ल० ने आग का ज़िक्र फरमाया और अपना चेहरा मुबारक दूसरी तरफ फेर लिया। आपने अपरा चेहरा मुबारक बहुत ज़्यादा फेरा और फरमाया "(ऐ लोगो) आग से बचो (यह इर्शाद फरमाकर) आपने दोबारा अपना चेहरा मुबारक फेर लिया, बहुत ज़्यादा फेरा यहां तक कि हमने सोचा कि शायद

Www.IslamicBooks.Website

आप सल्ल० आग की तरफ देख रहे हैं फिर आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "(लोगो!) आग से बचो चाहे खजूर का एक टुकड़ा ही सदका करके बचो, जो व्यक्ति (सदका करने के लिए) खजूर का टुकड़ा भी न पाए वह अच्छी बात कहकर ही अपने आपको जहन्नम की आग से बचाए।-- इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़कात)

मसला ३०५. "लोगो, जहन्नम की आग से दूर रहो।" लोगो, जहन्नम की आग से दूर रहो।"

عن ابی هریرة رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (ومثلی کمثل رجل استوقد نارا فلما اضآء ت ما حولها جعل الفراش وهٰذه الدواب التی فی النار یقعن فیها 'وجعل یحجزهن ویغلبنه فیتقحمن فیها قال فذٰلکم مثلی ومثلکم انا اخذ بحجز کم عن النار هلم عن النا ر فتغلبونی و تفحمون فیها) رواه مسلم (۲)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "मेरी मिसाल उस व्यक्ति की सी है जिसने आग जलाई फिर जब उसके गिर्द रोशनी हो गई तो पतंग और कीड़े जो आग में (मरे पड़ते हैं) आग में गिरने लगे और वह व्यक्ति उन्हें रोकने लगा लेकिन पतंगे उस पर गालिब आ गए और आग में गिरते चले गए यही मेरी और तुम्हारी मिसाल हैं मैं कमर से पकड़ पकड़ कर तुम्हें जहन्नम से बचा रहा हूं और आवाज़ दे रहा हूं (लोगो!) आग से दूर रहो, (लोगो!) आग से दूर रहो, लेकिन तुम मुझ पर गालिब आ गए और आग में चले गए।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल फज़ाइल)

मसला ३०६. अमीर, गरीब, मर्द औरत, आलिम जाहिल, आबिद, ज़ाहिद हर मुसलमान को हर कीमत पर जहन्नम की आग से बचने की चिंता करनी चाहिए।

عن عدی بن حاتم رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله

Www.IslamicBooks.Website

علیه وسلم (ثم لیقفن احدکم بین یدی الله لیس بینه وبینه حجاب ولا ترجمان یترجم له ثم لیقولن له الم اوتک مالا؟فلیقولن بلٰی ثم لیقولن الم ارسل الیک رسولا؟ فلیقولن بلٰی فینظر عن یمینه فلا یرٰی الاالنار ثم ینظر عن شماله فلا یرٰی الا النارفلیتقین احدکم النار ولو بشق تمرة فان لم یجد فبکلمة طیبة) رواه البخاری(۱)

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि० कहते है। कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "(कयामत के दिन) तुममें से कोई व्यक्ति अल्लाह तआला के सामने इस हाल में खड़ा होगा कि अल्लाह तआला और उसके बीच कोई पर्दा होगा न अनुवादक, तब अल्लाह तआला बंदे से पूछेगा क्या मैंने तुझे (दुनिया में) माल नहीं दिया था। बंदा कहगा क्यों नहीं या अल्लाह! दिया था, फिर अल्लाह तआला इर्शाद फरमाएगा, क्या मैंने तेरी तरफ रसूल नहीं भेजा था? बंदा कहेगा क्यों नहीं या अल्लाह भेजा था, फिर बंदा अपनी दायीं तरफ देखेगा तो आग ही आग नज़र आएगी फिर बायीं तरफ देखेगा तो आग ही आग नज़र आएगी। अतः तुम्हें आग से ज़रूर बचना चाहिए चाहे खजूर की गुठली ही (सदके के रूप में) क्यों न हो

अगर वह भी न हो तो अच्छी बात कहकर ही जहन्नम की आग से बचो।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़कात)

मसला ३०७. रसूले अकरम सल्ल० ने उममत को आग से डराने का हक अदा कर दिया।

عن النعمان بن بشیر رضی الله عنه قال سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول (وانذرتکم النار' انذرتکم النار فما زال یقولها حتٰی لو کان فی مقامی هٰذا سمعه اهل السوق 'وحتٰی سقطت خمیصة کانت علیه عند رجلیه) رواه الدارمی (۲) (صحیح)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है "लोगा! मैनें तुम्हें आग से डरा दिया है,

Www.IslamicBooks.Website

मैंने तुम्हें आग से डरा दिया है।" नबी अकरम सल्ल० लगातार यही कालिमात इर्शाद फरमाते रहे (उस वक्त आपकी आवाज़ इस कद्र बुलन्द थी कि) अगर रसूलुल्लाह सल्ल० मेरी जगह पर होते तो बाज़ार वाले आपकी आवाज़ सुन लेते (आप इस कद्र बेखुदी में यह शब्द अदा फरमा रहे थे कि) आपकी चादर मुबारक कंधों से सरक कर आपके पांव मुबारक के पास गिर पड़ी" इसे दारमी ने रिवायत किया है।

(मिश्कातुल मसाबीह, लिल अलबानी, किताब अहवालुल कियामह)

عن جابر بن عبدالله رضی الله عنه فی حدیث حجة الوداع قال.....فخطب الناس وقال (انتم تسئالون عنی فما انتم قائلون ؟ قالو نشهد انک قد بلغت وادیت ونصحت فقال با صبعه السبابة یرفعها الی السمآء وینکتها الی الناس اللّٰهم اشهد اللّٰهم اشهد ثلاث مرات) رواه مسلم (۱)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से हज्जतुल विदाअ की हदीस में रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने (अरफात के मैदान में खुत्बा देते हुए) फरमाया "(कयामत के दिन) तुमसे मेरे बारे में सवाल किया जाएगा तुम लोग क्या जवाब दोगे?" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "हम

गवाही देते हैं कि आपने अल्लाह का पैगाम पहुंचा दिया, सचेत करने का हक अदा किया और (अपनी उम्मत की) पूरी पूरी भलाई की।" फिर आप सल्ल० ने अपनी शहादत की अंगुली आसमान की तरफ उठाई और लोगों की तरफ झुकाते हुए तीन बार फरमाया "ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०)

Www.IslamicBooks.Website

اَلنَّارُ وَالْمَلَائِكَةُ

जहन्नम और फरिश्ते

मसला ३०८. फरिश्तों के लिए जहन्नम का अज़ाब नहीं फिर भी वे अल्लाह के अज़ाब से डरते हैं।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِن دَآبَّةٍ وَالْمَلَآئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ • يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ • (50,49:16)

"ज़मीन और आसमानों में सारी की सारी जानदार मख्लूक और तमाम फरिश्ते अल्लाह के हुजूर सज्दारेज़ हैं और वे हरगिज़ सरकशी नहीं करते और अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते रहते हैं और जो उन्हें हुक्म दिया जाता है उसके मुताबिक काम करते हैं।"

(सूरह नहलः ४९-५०)

मसला ६०९. अल्लाह के डर और खौफ से फरिश्तों का रंग पीला पड़ा रहता है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَداً سُبْحَانَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ • لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ • يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَى وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ •

(28,26:21)

"मुश्रिक कहते हैं कि (फरिश्ते) अल्लाह की औलाद हैं यद्यपि वे तो उसके मुकर्रम बंदे हैं अल्लाह के हुजूर बढ़कर नहीं बोलते बल्कि उसके हक्म पर अमल करते हैं जो कि उनके सामने है उसे भी वह जानता है

Www.IslamicBooks.Website

और जो कुछ उनसे ओझल है उससे भी बाखबर है और फरिश्ते किसी की सिफारिश नहीं करते सिवाए उसके जिसके हक में अल्लाह उनकी सिफारिश सुनने पर राज़ी हो और फरिश्ते अल्लाह तआला से इस कद्र खाइफ रहते है। कि उनका रंग पीला पड़ा रहता है।"

(सूरह अंबियाः २६-२८)

Www.IslamicBooks.Website

اَلنَّارُ وَالْاَنْبِيَآءُ

जहन्नम और अंबिया किराम (अलैहिस्सलाम)

मसला ३१०. सय्यदुल अंबिया हज़रत मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के अज़ाब से बहुत ज़्यदा डरते थे।

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ • مَّن يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ • (16,15:6)

"(ऐ पैगम्बर) कहो, अगर मैं अपने रब की अवज्ञा करूं तो मुझे एक बड़े (खौफनाक) दिन के अज़ाब का डर है उस दिन जो (उसके) अज़ाब से बच गया उस पर अल्लाह ने बड़ा ही रहम फरमाया और अल्लाह के अज़ाब से बच जाना बहुत बड़ी कामयाबी है।

(सूरह अनआमः १५-१६)

मसला ३११. जहन्नम के ऊपर से गुज़रते हुए तमाम अंबिया किराम अल्लाह तआला से "रब्बि सल्लिम" (ऐ मेरे रब मुझे बचा ले) की विनती करेंगे।

عن ابی هريرة رضی الله عنه عن النبی صلی الله عليه وسلم قال (ويضرب الصراط بين ظهری جهنم فاكون انا وامتی اول من يجيزها ولا يتكلم يومئذ الا الرسل ودعوى الرسل يومئذ اللهم سلم سلم وفی جهنم كلاليب مثل شوک السعدان هل رايتم السعدان؟) قالوا نعم يارسول الله صلی الله عليه وسلم قال (فانها مثل شوک السعدان غير انه لا يعلم ما قدر عظمها الا الله تخطف الناس

Www.IslamicBooks.Website

باعمالهم فمنهم الموبق بعمله و منهم المخردل اوی المجازی او نحوه، الحدیث. رواه البخاری (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० नबी अकरम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "(कयामत के दिन) पुलिसिरात दोज़ख के ऊपर रख दिया जाएगा सबसे पहले मैं और मेरी उम्मत उससे पार होगी उस दिन रसूलों के अलावा किसी को बात करने का साहस न होगा और रसूलों की पुकार भी केवल यह होगी "या अल्लाह! मुझे बचा ले" या अल्लाह! मुझे बचाले" और जहन्नम में सादान के कांटों की भान्ति लोहे के बड़े-बड़े नुकीले आंकड़े होंगे सादान के कांटे कभी देखे हैं तुम लोगों ने? सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "हां या रसूलुल्लाह सल्ल०!" तो ये (लोहे के नुकीले आंकड़े) सादान के कांटों की तरह ही होंगे। हां अलबत्ता वे आंकड़े कितने बड़े-बड़े होंगे यह अल्लाह के सिवा कोई भी नहीं जानता। ये आंकड़े लोगों को उनके आमाल के मुताबिक जहन्नम में गिरा देंगे कोई तो अपने आमाल की वहज से बिल्कुल ही तबाह हो जाएगा। (यानी पुलसिरात पर कदम रखते ही जहन्नम में घसीट लिया जाएगा) कोई बड़ी मुश्किल से पुलसिरात को पार कर सकेगा या कुछ ऐसा ही कालिमा रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फरमाया।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुत्तौहीद , बाब कौलुल्लाहि तआला)

मसला ३१२. जहन्नम की भयानक आवाज़ें सुनकर तमाम मुकर्रब फ़रिश्ते और अंबिया यहां तक कि इब्राहीम अलैहि० भी अल्लाह तआला से अपनी सलामती की विनती करेंगे।

عن عبید ابن عمیر رضی الله عنه فی قوله تعالٰی (سمعوا لها تغیظا وزفیرا) قال ان جهنم لتزفر زفرة لا یبقٰی ملک مقرب ولا نبی مرسل الا خر لوجهه ترتعد فرائصه حتٰی ان ابراهیم علیه السلام لیجثو علٰی رکبتیه ویقول رب لا اسئلک الیوم الا نفسی.

Www.IslamicBooks.Website

ذکرہ ابن کثیر (۲)

हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ि० अल्लाह तआला के इर्शाद "जब काफिर जहन्नम का चीखना चिंगाढ़ना सुनेंगे" (सूरह फुरकान : १२) के बारे में फरमाते हैं कि जब जहन्नम गुस्से से झुरी झुरी लेगी तो तमाम मुकर्रब फरिश्ते और उच्च दर्जा अंबिया यहां तक कि हज़रत इब्राहीम अलैहि० घुटनों के बल गिर पड़ेंगे ओर विनती करेंगे "ऐ मेरे रब! आज मैं तुझसे अपने ज़ात की सलामती के अलावा कुछ नहीं मांगता।" इसे इब्ने कसीर ने रिवायत किया है। (इब्ने कसीर-३/४१५)

मसला ३१३. कयामुल लैल में रसूले अकरम सल्ल० ने अज़ाब की एक ही अयात बार बार पढ़कर सारी रात गुज़ार दी।

عن ابی ذر رضی اللہ عنہ قال قام رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حتٰی اصبح بایٰۃ الأیۃ (ان تعذبھم فانھم عبادک وان تغفرلھم فانک انت العزیز الحکیم) رواہ ابن ماجہ (۱) (حسن)

हज़रत अबूज़र रज़ि० फरमाते हैं एक रात रसूलुल्लाह सल्ल० ने कयाम फरमाया और सुबह तक एक ही आयत तिलावत फरमाते रहे "ऐ अल्लाह अगर तू इन्हें अज़ाब दे, तो वे तेरे गुलाम हैं (तू कर सकता है) अगर बख्श दे तो तू गालिब है और हिक्मत वाला भी।" (तूझे कोई पूछने वाला नहीं) इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताब इकामतिस्सलाह, बाब माजा फिल किरात फी सलातुल्लैल - १/१११०)

मसला ३१४. रसूल अकरम सल्ल० अपनी उम्मत के कुछ अफराद के जहन्नम में जाने के अंदेश से रोते रहे।

عن عبداللہ بن عمر وبن العاص رضی اللہ عنہ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم تلا قول اللہ تعالٰی فی ابراھیم (رب انھن اضللن کثیرا من الناس فمن تبعنی فانہ منی ومن عصانی فانک غفور الرحیم الأیۃ) وقال عیسٰی علیہ السلام (ان تعذبھم فانھم عبادک وان

Www.IslamicBooks.Website

تغفر لهم فانک انت العزیز الحکیم) فرفع یدیه وقال (اللّٰهم امتی امتی وبکی فقال الله عزوجل یا جبریل اذهب الٰی محمد وربک اعلم فسله ما یبکیک فاتاه جبریل علیه السلام فساله فاخبره وهو اعلم فقال الله عزوجل جبریل اذهب الٰی محمد فقل انا سنرضیک فی امتک ولا نسؤ ک) رواه مسلم (۲)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने वह आयत तिलावत फरमाई जिसमें हज़रत इब्राहीम अलैहि० का यह कौल है "ऐ मेरे परवरदिगार इन बुतों ने बहुत से लोगों को गुमराह किया अतः जो व्यक्ति मेरे पीछे चला वह मेरा (आज्ञापालक) है और जिसने मेरी अवज्ञा की (उसके लिए) तू बख्शने वाला मेहरबान है।" (सूरह इब्राहीमः ३६) और फिर वह आयत तिलावत फरमाई जिसमें हज़रत ईसा अलैहि० का कथन है "अगर तू इन्हें अज़ाब दे तो वे तेरे बन्दे हे। और अगर तू इन्हें माफ फरमा दे तो बेशक तू गालिब और हिक्मत वाला है।" (सूरह माइदाः ११८) उसके बाद आप सल्ल० ने अपने हाथ (अल्लाह तआला की बारगाह में) फैला दिए और अर्ज़ किया "या अल्लाह! मेरी उम्मत, या अल्लाह! मेरी उम्मत और रोने लगे।" अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया "ऐ जिब्रील! मुहम्मद सल्ल० के पास जाओ ओर पूछो कि आप क्यों रोते हैं? और ऐ जिब्रील तेरा रब तो जानता है (कि मुहम्मद सल्ल० क्यों रो रहे हैं) चुनांचे जिब्रील अलैहि० हाज़िर हुए और हज़रत मुहम्मद सल्ल० से मालूम किया (कि आप क्यों रो रहे हैं?) हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने रोने की वजह बताई और जिब्रील ने अल्लाह तआला को जाकर बताया हालांकि अल्लाह तो खूब जानने वाला है। तब अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया "ऐ जिब्रील मुहम्मद सल्ल० के पास जा और बता कि हम (यानी अल्लाह तआला) तुम्हारी उम्मत के मामले में तुम्हें खुश कर देंगे और नाराज़ नहीं करेंगे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाब दुआउन्नबी सल्ल०)

Www.IslamicBooks.Website

اَلنَّارُ وَالصَّحَابَةُ

जहन्नम और सहाबा किराम रज़ि०

मसला ३१५. हज़रत आइशा रज़ि० जहन्नम की आग याद आने पर रोती रहीं।

عن عائشة رضى الله عنها انها ذكرت النار فبكت فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم (ما يبكيك؟) قالت ذكرت النار فبكيت فهل تذكرون اهليكم يوم القيٰمة فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم (اما فى ثلاثة مواطن فلا يذكر احد احدا عند الميزان حتىٰ يعلم ايخف ميزانه ام يثقل وعند الكتاب حين يقال هاؤم اقرء وا كتابيه حتىٰ يعلم اين يقع كتابه فى يمينه ام فى شماله من ورآء ظهره وعند الصراط اذا وضع بين ظهرى جهنم) رواه ابوداؤد (ا)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि उन्हें (जहन्नम की) आग याद आई तो रोने लगीं रसूलुल्लाह सल्ल० ने मालूम किया "आइशा! क्यों रोती हो?" हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया "(या रसूलुल्लाह सल्ल०) जहन्नम की आग याद आने पर रोती हूं। क्या कयामत के दिन आप अपने घर वालों को भी याद रखेंगे?" रसूले अकरम सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "तीन जगहों पर कोई आदमी किसी दूसरे आदमी को याद नहीं करेगा।

१. तराजू के पास यहां तक कि पता चल जाए कि किसके आमाल का वज़न हल्का रहा है किसका बोझल।

२. कर्म पत्र मिलने के वक्त जब पुकारा जाएगा कि आओ अपना अपना कर्म पत्र पढ़ो यहां तक कि पता चल जाए कि किसका कर्म पत्र

Www.IslamicBooks.Website

दाएं हाथ में दिया जाता है और किसका बाएं हाथ में पुश्त के पीछे से और।

३. पुलसिरात से गुज़रते वक्त जब वह जहन्नम के ऊपर रखा जाएगा।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

(किताबुस्सुन्नह, बाब मीज़ान)

मसला ३१६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० और उनकी बीवी जहन्नम को याद करके रोते रहे।

عن قيس بن ابى حازم رحمه الله كان عبدالله بن رواحة واضعا راسه فى حجر امرأته فبكى فبكت امرأته فقال ما يبكيك ؟ قالت رأيتك تبكى فبكيت قال انى ذكرت قول الله عزوجل (وان منكم الا واردها) فلا ادرى اننجو ا منها ام لا ؟ رواه الحاكم (ا)

हज़रत कैस बिन अबी हाज़िम रह० अलै० कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० अपनी बीवी की गोद में सर रखे हुए थे कि (अचानक) रोने लगे, उनके साथ उनकी बीवी भी रोने लगी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने पूछा "तुम क्यों रो रही हो?" बीवी ने अर्ज़ किया "आप को रोते देखा तो मैं भी रोने लगी।" हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने फरमाया "मुझे अल्लाह तआला का यह फरमान याद आ गया "तुम में से कोई ऐसा नहीं जिसका जहन्नम से गुज़र न हो।" (सूरह मरयमः ७१) और मुझे मालूम नहीं कि (जहन्नम के ऊपर रखे पुलसिरात से गुज़रते हुए) हम बचेंगे या नहीं?" इसे हाकिम ने रिवायत किया है। (किताबुल अहवाल, हदीस ७३१)

मसला ३१७. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० जहन्नम को याद करके रोते रहे।

عن زياد بن ابى اسود رحمه الله قال كان عبادة بن الصامت رضى الله عنه علىٰ سور بيت المقدس الشرقى يبكى فقال بعضهم ما

Www.IslamicBooks.Website

يبكيک يا أبا الوليد؟ فقال من هاهنا اخبرنا رسول الله صلى الله عليه وسلم انه راى جهنم. رواه الحاكم (٢) (صحيح)

हज़रत ज़ियाद बिन असवद रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० बैतुल मक्दिस की मश्रिकी दीवार पर थे अचानक रोने लगे लोगों ने पूछा "ऐ अबुल वलीद (हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० की उपाधी) क्यों रो रहे हो?" हज़रत उबादा रज़ि० फरमाने लगे "यही वह जगह है जहां रसूले अकरम सल्ल० ने हमें बताया कि मैंने जहन्नम देखी है।" इसे हाकिम ने रिवायत किया है। (किताबुल अहवाल, हदीस १९०)

मसला ३१८. हज़रत उमर रज़ि० और अल्लाह के अज़ाब का खौफ।

كان عمر بن الخطاب رضى الله عنه يقول لو نادى مناد من السمآء (ايها الناس انكم داخلون الجنة كلكم اجمعون الا رجلا واحدا لخفت ان اكون هو) ولو نادى مناد (ايها الناس انكم داخلون النار الا رجلا واحدا لرجوت ان اكون هو. رواه ابو نعيم فى الحلية (١)

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० फरमाते थे "अगर आसमान से कोई पुकारने वाला पुकारे ऐ लोगो तुम सब जन्नत में दाखिल होगे सिवाए एक आदमी के तो मुझे डर है वह आदमी मैं न हूं और अगर आसमान से कोई पुकारने वाला पुकारे ऐ लोगो तुम सब जहन्नम में जाने वाले हो सिवाए एक आदमी के तो मैं उम्मीद रखता हूं वह (अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से) मैं हूंगा।" इसे अबू नईम ने हुलिया में रिवायत किया है। (अल्लहुम्मा सल्लिम, सफा-२०)

मसला ३१९. हज़रत आइशा रज़ि० जहन्नम की गर्म और ज़हरीली हवा का अज़ाब याद कर करके देर तक रोती रहीं।

Www.IslamicBooks.Website

عن عروة عن ابيه رضى الله عنهما قال كنت اذا غدوت ابدا ببيت عائشة رضى الله عنها اسلم عليها فغدوت يوما فاذا هى قائمة تقرء (فمن الله علينا و وقانا عذاب السموم) وتدعو وتبكى و ترددها فقمت حتٰى مللت القيام تذهبت الى السوق لحاجتى ثم رجعت فاذا هى قائمة كما هى تصلى و تبكى (٢)

हज़रत उर्वह रज़ि० अपने बाप (हज़रत ज़ुबैर रज़ि०) से रिवायत करते हैं कि मैं जब सुबह घर से निकलता तो पहले हज़रत आइशा रज़ि० के घर सलाम अर्ज़ करता, एक दिन मैं घर से निकला (और हस्बे मामूल सलाम करने हाज़िर हुआ) तो हज़रत आइशा रज़ि० (नमाज़ में) खड़ी थीं और कुरआन मजीद की आयत "अल्लाह ने हम पर एहसान किया और गर्म ज़हरीली हवा के अज़ाब से बचा लिया" (सूरह तूरः १२७) तिलावत फरमा रहीं थीं, हज़रत आइशा रज़ि० यह आयत बार-बार पढ़ती जा रही थीं और रोती जा रही थीं (इन्तिज़ार के लिए) खड़ा हो गया यहां तक कि मेरा जी भर गया और मैं किसी काम से बाज़ार चला गया वापस पलटा तो हज़रत आइशा रज़ि० अभी तक नमाज़ में खड़ी थीं और (वही आयत पढ़ पढ़कर) रोती जा रही थीं। (सफ्फतुस्फवा-२/२२६)

मसला ३२०. हज़रत उमर रज़ि० अज़ाब की आयत पढ़ कर इस कद्र रोए कि बीमार पड़ गए।

قرء عمر بن الخطاب رضى الله عنه سورة الطور حتٰى قوله تعالٰى (ان عذاب ربک لواقع) فبكٰى واشتد بكاء ه حتٰى مرض و عادوه (١)

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० सूरह तूर की तिलावत फरमा रहे थे जब वह इस आयत पर पहूंचे "बेशक तेरे रब का अज़ाब घटित होने वाला है।" (आयत-७) तो रोने लगे, बहुत रोए यहां तक कि बीमार पड़ गए और लोग आपकी इयादत के लिए आने लगे। (अल जवाबुल काफी-७७)

Www.IslamicBooks.Website

وكان فى وجهه خطان اسودان من البكاء(٢)

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० के चेहरे पर रोने की वजह से दो सियाह लकीरें पड़ गई थीं। (अज़्ज़ुहद लिल बैहकी-६७८)

मसला ३२१. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० लुहार की दुकान पर आग देखकर रोने लगे।

قال سعدبن الا خرم رحمه الله كنت امشى مع عبدالله بن مسعود رضى الله عنه فمر با لحدادين وقد اخرجو ا حديدا من النار فقام ينظر اليه ويبكى (٣)

हज़रत साअद बिन अखरम रह० फरमाते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० के साथ जा रहा था लुहार की दुकान से गुज़रे उन्होंने आग से (सुर्ख सुर्ख) लोहा बाहर निकाला तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० उसे देखने के लिए खड़े होगए और रोने लगे। (हुलियतुल औलिया-२/१३३)

मसला ३२२. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० जहन्नम याद करके बहुत रोए।

بكى معاذ رضى الله عنه بكاء شديدا فقيل له ما يبكيک ؟فقال لا ن الله عزوجل قبض قبضتين فجعل واحدة فى الجنة والا خرى فى النار فانا لا ادرى من اى الفريقين اكون؟ (٤)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० बहुत सख्त रोए उनसे पूछा गया "आप क्यों रो रहे हो?" हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फरमाया "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अपनी दो मुटिठयां (जीवों से) भरीं एक को जन्नत में डाला और दूसरी को जहन्नम में डाला मैं नहीं जानता मेरा ताल्लुक जन्नत वाले गिरोह से है या जहन्नम वाले गिरोह से।

(अज़्ज़ुहरूल फाइह, हदीस २१)

Www.IslamicBooks.Website

व्याख्या- याद रहे कि रसूले अकरम सल्ल० का इर्शाद मुबारक है "अल्लाह तआला ने जन्नत और जहन्नम को पैदा किया तो दोनों के लिए अलग-अलग लोग बनाए।" (मुस्लिम) इस हदीस की तरफ इशारा है।

मसला ३२३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को जहन्नमियों का पानी तलब करना याद आया तो रोने लगे।

عن سميرة الرياحى عن ابيه قال شرب عبدالله بن عمر مآء مبردا فبكى فاشتد بكاؤه فقيل له ما يبكيك؟قال ذكرت اٰية فى كتاب الله عزوجل (وحيل بينهم وبين ما يشتهون) فعرفت ان اهل النار لا يشتهون شيئا شهوتهم المآء وقد قال الله عزوجل (افيضوا علينا من المآء او مما رزقكم الله) (ا)

हज़रत समीर रयाही रह० अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने ठंडा पानी पिया तो रोने लगे और बहुत ज़्यादा रोए उनसे मालूम किया गया "आप क्यों इतना रोए हैं?" हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फरमाया "मुझे कुरआन मजीद की यह आयत याद आ गई "जहन्नमी जिस चीज़ की इच्छा कर रहे होंगे उसी वक्त वे उससे महरूम कर दिए जाएंगे।" (सूरह सबाः ५४) और मुझे मालूम है कि उस वक्त जहन्नमी कुछ नहीं चाहेंगे बस उनकी एक ही इच्छा होगी। पानी मिलने की। क्योंकि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इर्शाद फरमाया है "जहन्नमी अहले जन्नत से विनती करेंगे थोड़ा सा पानी हमें दे दो या जो रिज़्क अल्लाह ने तुम्हें दिया है उससे ही कुछ फेंक दो।" (हुलियतुल औलिया-२/१३३)

मसला ३२४. हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि० जहन्नम की कल्पना से हंसते नहीं थे।

سأل الحجاج سعيد بن جبير رضى الله عنه متعجبا بلغنى انك لم تضحك قط؟قال له كيف اضحك وجهنم قد سعرت

Www.IslamicBooks.Website

والاغلال قد نصبت و الزبانية قداعدت (٢)

हज्जाज (बिन यूसुफ) ने हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि० से हैरान हो कर पूछा "मझे पता चला है कि तुम हंसते नहीं हो?" हज़रत जुबैर रज़ि० ने फरमाया "मैं कैसे हंस सकता हूं जबकि जहन्नम भड़का दी गई है, तौक गाड़ दिए गए हैं और अल्लाह की फौज (जहन्नम के फरिश्ते) तैयार खड़ी है। (सफ्फतुस्फवा-३/३३३)

मसला ३२५. कोई मोमिन पुलसिरात पार करने से पहले-पहले निर्भय नहीं रह सकता।

قال معاذبن جبل رضی الله عنه ان المؤمن لا یسکن روعه حتیٰ یترک جسر جهنم وراءه (١)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० फरमाते हैं कि मोमिन आदमी पुलसिरात पार करने से पहले-पहले घबराहट से अम्न नहीं पा सकता। (अल फवाइद-१५२)

Www.IslamicBooks.Website

اَلنَّارُ وَالسَّلَفُ

जहन्नम और पूर्वज

मसला ३२६. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० जहन्नम में तौक और ज़नजीरों के ज़िक्र वाली आयत बार-बार पढ़कर सारी रात रोते रहे।

عمر بن عبدالعزيز رحمه الله كان يصلى ذات ليلة فقرء (اذا الاغلال فى اعناقهم والسلاسل يسحبون. فى الحميم ثم فى النار يسجرون.) فجعل يرددها ويبكى حتى اصبح (١)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० एक रात नमाज़ पढ़ रहे थे जब इस आयत पर पहुंचे "जब तौक और ज़ंजीरें उनकी गर्दनों में होंगी जिनसे पकड़कर वे खौलते पानी की तरफ घसीटे जाएंगे और फिर जहन्नम की आग में झोंक दिए जाएंगे।" (सूरह मोमिनः ७१-७२) तो बार-बार इसी आयत को पढ़ते रहे और रोते रहे यहां तक कि सुबह हो गई। (तंबिहुल गाफिलीन-२/६२०)

मसला ३२७. हज़रत रबीअ बिन खैसम रह० तन्दूर की आग देखकर बेहोश होगए।

عن ابى وائل رحمه الله خرجنا مع عبدالله بن مسعود رضى الله عنه ومعنا الربيع بن خيثم فمر عبدالله على أتون على شاطئ الفرات فلما راٰه عبدالله والنار تلتهب فى جوفه قرء هٰذه الأية (اذا رأتهم من مكان بعيد سمعوا لها تغيظا و زفيرا) فصعق يعنى الربيع وحملوه الى اهل بيته فرابطه عبدالله الى الظهر فلم يفق رضى الله عنه (٢)

हज़रत अबू वाइल रह० से रिवायत है कि हम अब्दुल्लाह बिन

Www.IslamicBooks.Website

मसऊद रज़ि० के साथ बाहर निकले हमारे साथ रबीअ बिन खैसम रह० भी थे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फरात के किनारे एक तन्दूर के पास से गुज़रे जब उसके अन्दर दहकती और भड़कती हुई आग देखी तो यह आयत तिलावत फरमाई "जब हजन्म काफिरों को दूर से देखेगी तो काफिर जहन्नम का चींखना चिंघाड़ना सुन लेंगे।" (सूरह फुरकानः १२) यह सुनकर रबीअ बिन खैसम रह० बेहोश होकर गिर पड़े लोग उन्हें चारपाई पर डालकर घर लाए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० उनके पास (सूबह से लेकर) जुहर तक बैठकर होश में लाने की कोशिश करते रहे लेकिन हज़रत रबीअ बिन खैसम रह० को होश न आया।

(इब्ने कसीर-३/४१५)

मसला ३२८. सारी दुनिया को आग से खबरदार करने की इच्छा।

قال مالک بن دینار رحمه الله لو استطعت ان لا انام لن أنم مخافة ان ینزل العذاب وانا نائم ولو وجدت اعوانا لفرقتهم ینادون فی سائر الدنیا کلها ایها الناس النار النار.

رواه ابو نعیم فی الحلیة (۱)

हज़रत मालिक बिन दीनार रह० फरमाते हैं कि अगर मेरे बस में होता कि मैं नींद न करूं तो मैं कभी न सोता इस डर से कि सोते में कहीं मुझ पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल न हो जाए और अगर मेरे पास मददगार होते तो मैं उन्हें सारी दुनिया में मुनादी करने के लिए भेज देता (जो कहते) "लोगो! आग से खबरदार हो जाओ, लोगो! आग से खबरदार हो जाओ।" इसे अबू नईम ने हुलिया में बयान किया है। (२/३६९)

मसला ३२९. हज़रत सुफियान सूरी रह० आखिरत के ज़िक्र पर इस कद्र डरे सहमे होते कि खून का पेशाब आने लगता।

قال موسی بن مسعود رحمه الله کنا اذا جلسنا الی الثوری رحمه الله کان النار قد احاطت بنا لما نرٰی من خوفه وفزعه وکان

Www.IslamicBooks.Website

سفيان اذا اخذ فى ذكر الآ خرة يبول الدم(٢)

हज़रत मूसा बिन मसऊद रह० फरमाते हैं कि जब हम सुफियान सूरी रह० की मजलिस में बैठते तो उन्हें डर और घबराहट की हालत में देखकर हमें यूं लगता जैसे आग ने हमें घेर रखा है, जब आखिरत का ज़िक्र होता तो सुफियान सूरी रह० को खून का पेशाब आने लगता। (अल अहया-१६८)

मसला ३३०. मौत, कब्र, कयामत और पुलसिरात का डर।

سئل عطاء السليمى رحمه الله ما هٰذا الحزن ؟قال ويحك الموت فى عنقى والقبر بيتى وفى القيٰمة موقفى وعلٰى جسر جهنم طريقى لا ادرى ما يصنع بى (١)

हज़रत अता सलीमी रह० से रंजीदा गमज़दा रहने की वजह पूछी गई तो फरमाने लगे, तू हलाक हो (क्या तूझे नहीं मालूम) मौत मेरी गर्दन में है, कब्र मेरा घर है, कयामत के दिन मुझे अल्लाह की अदालत में खड़े होना है। और जहन्नम के पुल (सिरात) से मुझे गुज़रना है और मैं नहीं जानता मेरे साथ क्या होने वाला है। (सफ्फतुस्फवा-३/३२७)

मसला ३३१. जहन्नम याद आने पर हज़रत मैसरह रह० की इच्छा "काश! मुझे मेरी मां न जनती।"

كا ابو ميسرة رحمه الله اذا اوٰى الٰى فراشهٖ قال يٰليت امى لم تلدنى ثم يبكى فقيل له ما يبكيك يا ابا ميسرة ؟قال اخبرنا انا واردوها ولم نخبر انا صادرون عنها (٢)

हज़रत अबू मैसरह रह० जब अपने बिस्तर पर जाते तो कहते "ऐ काश! मेरी मां मुझे न जनती" और रोने लगते, उनसे कहा गया "ऐ अबू मैसरह! क्यों रोते हो?" हज़रत अबू मैसरह फरमाते "हमें यह तो मालूम है कि हमको जहन्नम के ऊपर से गुज़रना है लेकिन यह इल्म नहीं कि निजात होगी या नहीं?" (इब्ने कसीर-३/१७८)

Www.IslamicBooks.Website

मसला ३३२. जहन्नम की याद ने उमर भर के लिए हंसी खत्म कर दी।

عن الحسن البصری رحمه الله قال قال رجل لا خیه هل اتاک انک وارد النار ؟قال نعم،قال فهل اتاک انک صادر عنها؟قال لا، قال ففیم الضحک ؟قال فما رأی ضاحکا حتٰی لحق الله (۳)

हज़रत हसन बसरी रह० कहते हैं एक नेक आदमी ने अपने भाई से मालूम किया "क्या तुझे मालूम है कि तेरा गुज़र जहन्नम के ऊपर से होने वाला है?" उसने कहा "हां" उनसे फिर पूछा "क्या तुझे मालूम है कि तू वहां बच निकलेगा?" भाई ने जवाब दिया "नहीं" तब उस नेक आदमी ने कहा "फिर यह हंसी केसी?" चुनांचे मौत तक उस व्यक्ति के होंटों पर कभी हंसी नहीं आई। (इब्ने कसीर-३/१७६)

मसला ३३. हज़रत बुदैल बिन मैसरह रह० कयामत के दिन प्यास की सख्ती के खौफ से इस कद्र रोए कि खून के आंसू बहने लगे।

بکی بدیل بن مسیرة رحمه الله حتٰی قرحت ما قیه ،فکان یعاتب فی ذٰلک فیقول انما ابکی من طول العطش یوم القیٰمة (۱)

हज़रत बुदैल बिन मैसरह रह० इस कद्र रोते कि आंखों से पीप और खून बहने लगता, हमेशा आखिरत के भय से रंजीदा और दुखी रहते और कहते "मैं कयामत के दिन प्यास की सख्ती से रोता हूं।" (सफ्फतुस्फवा-३/२६५)

मसला ३३४. हज़रत मुहम्मद बिन मुनकदिर रह० जब जहन्नम के भय से रोते तो आंसू अपने चेहरे और दाढ़ी पर मल लेते।

کان محمد بن المنکدر رحمه الله اذا بکٰی مسح وجهه و لحیته بدموعه و یقول بلغنی ان النار لا تاکل موضعا مسته الدموع (۲)

हज़रत मुहम्मद बिन मुनकदिर रह० जब (आग के भय से) रोते तो

Www.IslamicBooks.Website

आंसू अपने चेहरे और दाढ़ी पर मल लेते और फरमाते "मुझे पता चला है कि (अल्लाह के डर से) बहने वाले आंसू जिस-जिस जगह लगें गे उसे आग नहीं जलाएगी।" (अल अहया-४/१७२)

मसला ३३५. अता सलीमी रह० अपने हमसाए के तन्दूर की आग देखकर बेहोश होगए।

دخل العلاء بن محمد علٰی عطاء السلیمی رحمه الله وقد غشی علیه فقال لا مرأته ام جعفر ما شان عطاء فقالت سجرت جا رتنا التنور فنظر الیه وخر مغشیا علیه (۳)

हज़रत अला बिन मुहम्मद रह० अता सलीमी रह० के घर आए तो उन्हें बेहोशी की हालत में पाए उनकी बीवी उम्मे जाफर से पूछा "अता सलीमी को क्या हुआ है?" बीवी ने कहा "हमारे हमसाए ने तन्दूर दहकाया, अता सलीमी उसे देखकर बेहोश होकर गिर पड़े।"
(सफ्फतुस्फवा-३/३२६)

मसला ३३६. हज़रत हसन बसरी रह० का आग के डर से रोना।

وعند ما بکی الحسن فقیل له مایبکیک ؟قال اخاف ان یطرحنی غدا فی النار ولا یبالی (۱)

हज़रत हसन बसरी रह० को रोते देखकर पूछा गया "आप क्यों रो रहे हो?" उन्होंने जवाब दिया "मुझे डर है कहीं अल्लाह तआला कयामत के दिन मुझे आग में न फेंक दे और अल्लाह को तो किसी की परवाह नहीं।" (सफ्फतुस्फवा-३/२३३)

मसला ३३७. यज़ीद बिन हारून रह० की दोनों आंखें रो रोकर अंधी हो गईं।

قال الحسن بن عرفة رحمه الله رأیت یزید بن هارون رحمه الله من احسن الناس عینین ثم رأیته بعین واحد ثم رایته اعمٰی فقلت یا

Www.IslamicBooks.Website

ابا خالد ما فعلت العينان الجميلتان ؟قال ذهب بهما بكاء الاسحار (٢)

हसन बिन अरफा रह० कहते हैं कि मैंने यज़ीद बिन हारून रह० को देखा कि लोगों में से उनकी आखें सबसे ज़्यादा खूबसूरत थीं। एक ज़माने के बाद देखा तो उनकी एक ही आंख थी। (एक खत्म हो चुकी थी) फिर कुछ ज़माने के बाद देखा तो दोनों आखें खत्म हो चुकी थीं। मैंने पूछा "ऐ अबू खालिद! तुम्हारी खूबसूरत आंखों को क्या हुआ?" कहने लगे "आह सहरगाही में चली गईं।" (तज़्किरातुल हुफ्फाज़-३/७६०)

मसला ३३८. मरने से पहले ईमान छिन जाने का डर।

قال عبدالرحمٰن بن مهدى رحمه الله بات سفيان رحمه الله عندى فلما اشتد به الامر جعل يبكى فقال له رجل يا ابا عبدالله اراك كثير الذنوب فرفع شيئا من الارض وقال والله لذنوبى اهون عندى من ذاانى اخاف عن اسلب الايمان قبل ان اموت (١)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन मेहदी रह० कहते हैं कि हज़रत सुफियान रह० ने रात मेरे पास गुज़ारी जब ज़्यदा परेशान हुए तो रोने लगे एक आदमी उनसे पूछा "ऐ अबू अब्दुल्लाह! क्या कसरते गुनाहों की वजह से रो रहे हो?" हज़रत सुफियान रह० ने ज़मीन से एक तिनका उठाया और फरमाने लगे "वल्लाह! गुनाहों का मामला मेरे नज़दीक इस तिनके से भी ज़्यदा हल्का है मुझे तो डर यह है कहीं मौत से पहले मेरा ईमान न छिन जाए।" (सफ्फतुस्फवा-३/१५०)

मसला ३३९. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० इशा की नमाज़ के बाद अल्लाह के भय से रोने लगते यहां तक नींद गालिब आ जाती।

قالت فاطمة بنت عبدالملک بن مروان امرأة عمر بن عبدالعزيز رحمه الله يكون فى الناس من هو اكثر صوما وصلاة من عمر وما رأيت احداشد خوفا من ربه من عمر كان اذا صلى العشآء

Www.IslamicBooks.Website

قعد فی المسجد ثم رفع یدیه فلم یزل یبکی حتیٰ یغلبه النوم ثم ینتبه فلا یزال یدعو رافعا یدیه یبکی حتیٰ تغلبه عیناه (۲)

हज़रत फातिमा बिन्ते अब्दुल मलिक बिन मरवान रह० जो कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की बीवी थीं, फरमाती हैं कि लोगों में हज़रत उमर रह० से नमाज़, रोज़ा ज़्यादा करने वाले तो बहुत थे लेकिन अपने रब के डर से रोने वाला मैंने हज़रत उमर रह० से ज़्यदा किसी को नहीं देखा, जब इशा की नमाज़ से फारिग हो जाते तो (अल्लाह के हुज़ूर) हाथ बुलन्द कर लेते और लगातार रोते रहते यहां तक कि नीदं गालिब आ जाती, जगाया जाता तो फिर अपने हाथ बुलन्द करके रोना शुरू कर देते यहां तक कि आंखों में नींद गालिब आ जाती।'' (तज़किरातुल हुफ्फाज़-१/१२०)

Www.IslamicBooks.Website

دَعْوَةُ التَّفْكِيرِ

चिन्ता का विषय

मसला ३४०. आग में जलने वाला व्यक्ति अच्छा है या आग से महफ़ूज़ रहने वाला।

أَفَمَن يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَم مَّن يَأْتِي آمِناً يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ • (40:41)

"भला वह व्यक्ति अच्छा है जो आग में झोंका जाने वाला है या वह अच्छा है जो कयामत के दिन अम्न की हालत में हाज़िर होगा? (अब) जैसा अमल चाहो करो, बेशक जो कुछ तुम करोगे अल्लाह उसे देख रहा है।" (सूरह हा०मीम० सज्दा:४०)

मसला ३४१. जहन्नम की भड़कती हुई आग को देखकर अपनी मौत और हलाकत को पुकारने वाला व्यक्ति अच्छा है या वह व्यक्ति अच्छा है जो ऐसी जगह कयाम करेगा जहां उसकी हर इच्छा पूरी की जाएगी?

وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيراً • إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظاً وَزَفِيراً • وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَاناً ضَيِّقاً مُقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوراً • لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوراً وَاحِداً وَادْعُوا ثُبُوراً كَثِيراً • قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاء وَمَصِيراً • لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاؤُونَ خَالِدِينَ كَانَ عَلَى رَبِّكَ وَعْداً مَسْؤُولاً • (16,11:25)

"जो व्यक्ति कयामत को झुठलाए, उसके लिए हमने भड़कती हुई आग मुहय्या कर रखी है वह आग जब दूसर से उन झुठलाने वालों को

Www.IslamicBooks.Website

देखेगी तो ये (झुठलाने वाले) जहन्नम के क्रोध की आवज़ें सुन लेंगे और जब यह (ज़जीरों से) बंधे हुए एक तंग जगह ठुंसे जाएंगे तो अपनी मौत को पुकारने लगेंगे (उस वक्त उनसे कहा जाएगा) आज एक मौत को नहीं बहुत सी मौतों को पुकारो। उनसे पूछो यह अंजाम अच्छा है या वह हमेशा की जन्नत जिसका वायदा मुत्तकी लोगों से किया गया है जो कि उनकी जज़ा और उनके सफर की आखिरी मंज़िल होगी। जिसमें उनकी हर इच्छा पूरी होगी। जिसमें वे हमेशा हमेशा रहेंगे। उस वायदा को पूरा करना तेरे रब के जिम्मे वाजिब है।" (सूरह फुरकानः ११-१६)

मसला ३४२. जन्नत की नेमतों की दावत अच्छी है या थूहर के पेड़ का खाना और खौलते पानी का पीना अच्छा है?

إِنَّ هَـٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ • لِمِثْلِ هَـٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ • أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ • إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ • إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ • طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُؤُوسُ الشَّيَاطِينِ • فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِؤُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ • ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ • (67,67:37)

"बेशक (जन्नत की प्राप्ती) महान कामयाबी है और ऐसी ही कामयाबी को पाने के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए बताओ यह (जन्नत की) दावत अच्छी है या थूहर का पेड़? हमने इस पेड़ को ज़ालिमों के लिए फितना बना दिया है वह एक पेड़ है जो जहन्नम की तह से निकलता है उसके शगुफे ऐसे हैं जैसे शैतानों के सर। जहन्नमी उसे खाएंगे और उसी से अपना पेट भरेंगे फिर उस पर पीने के लिए उन्हें खौलता हुआ पानी मिलेगा।" (सूरह साफ्फातः ६०-६७)

मसला ३४३. दुनिया में मज़ाक उड़ाने वाले अच्छे हैं या आखिरत में?

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ • وَإِذَا مَرُّوا

Www.IslamicBooks.Website

بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ • وَإِذَا انقَلَبُوا إِلَى أَهْلِهِمُ انقَلَبُوا فَكِهِينَ • وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَؤُلَاءِ لَضَالُّونَ • وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ • فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ • عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ • هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ

"मुजरिम लोग दुनिया में ईमान लाने वालों का मज़ाक उड़ाते है। जब उनके पास से गुज़रते तो आंखें मार मार कर उनकी तरफ इशारा करते थे, अपने घर वालों की तरफ पलटते तो मज़े लेते हुए पलटते थे और जब उन्हें देखते तो कहते थे कि ये बहके हुए लोग है हांलाकि वे उन पर निगरा बनाकर नहीं भेजे गए थे। आज ईमान लाने वाले कुफ्फार का मज़ाक उड़ा रहे हैं, मसनदों पर बैठे हुए उनका हाल देख रहे हैं, काफिर जो कुछ दुनिया में करते थे उसका सवाब (बदला) उन्हें मिल ही गया।" (सूरह मुतफ्फिफीनः २९-३६)

Www.IslamicBooks.Website

اَلْاِسْتِعَاذَةُ مِنْ عَذَابِ النَّارِ

आग के अज़ाब से पनाह मांगने की दुआ

मसला ३४४. जो व्यक्ति तीन बार जहन्नम से अल्लाह तआला की पनाह तलब करे उसके लिए जहन्नम सिफारिश करती है।

عن انس بن مالك رضى الله عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم (من سئل الله الجنة ثلاث مرات قالت الجنة ((اللهم ادخله الجنة)) ومن استجار من النار ثلاث مرات قالت النار ((اللهم اجره من النار)) رواه ابن ماجه (١) (صحيح)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "जो व्यक्ति अल्लाह से तीन बार जन्त मांगे (उसके हक में) जन्नत कहती है या अल्लाह! इसे जन्नत में दाखिल फरमा और जो व्यक्ति तीन बार आग से पनाह मांगे (उसके हक में) आग कहती है "या अल्लाह! इसे आग से बचाले।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़ूहद, बाब सफतुल जन्नत-२/३५०२)

मसला ३४५. आग से पनाह मांगने की कुछ कुरआनी दुआएं।

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ •

(201:2)

१. ऐ हमारे परवरदिगार! हमें दुनिया में भलाई अता फरमा और आखिरत में भी भलाई से नवाज़ और हमें आग के अज़ाब से बचा ले। (सूरह बकराः २०१)

Www.IslamicBooks.Website

رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَاماً • إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرّاً وَمُقَاماً • (66,65:25)

२. ऐ हमारे परवरदिगार! हमसे जहन्नम का अज़ाब फेर दे क्योंकि इसका अज़ाब (जान से) चीमट जाने वाला है बेशक जहन्नम बहुत ही बुरा ठिकाना और बहुत ही बुरी जगह है।

(सूरह फुरकानः ६५-६६)

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذا بَاطِلاً سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ • رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ • رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلإِيْمَانِ أَنْ آمِنُواْ بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الأَبْرَارِ • رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلاَ تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لاَ تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ • (194,191:3)

३. ऐ हमारे परवरदिगार! तूने यह (ज़मीन व आसमान) बेकार में नहीं बनाए। तेरी ज़ात पाक है (इस बात से कि कोई व्यर्थ काम करे) अतः हमें आग के अज़ाब से बचाले। ऐ हमरे परवरदिगार! जिसे तूने आग में दाखिल किया उसे तूने रूसवा कर दिया और ज़ालिमों के लिए तो (उस दिन) कोई मददगार नहीं। ऐ हमारे परवरदिगार! हमने एक मुनादी को ईमान का ऐलान करते सुना कि (लोगो!) अपने रब पर ईमान लाओ! तो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे गुनाह बख्श दे हम से हमारी बुराईयां दूर करदे और हमें नेक लोगों के साथ मौत दे। ऐ हमारे परवरदिगार! अपने रसूलों के द्वारा जो कुछ तूने हमसे वायदा किया है हमें अता फरमा और कयामत के दिन हमें रूसवा न करना। तू यकीनन वायदा खिलाफी नहीं करता।

(सूरह आले इमरानः १९१-१९४)

मसला ३४६. अज़ाबे जहन्नम से पनाह मांगने की निम्नलिखित

Www.IslamicBooks.Website

दुआ रसूले अकरम सल्ल० सहाबा किराम रज़ि० को कुरआन मजीद की सूरह की तरह सिखाई।

عن عبدالله بن عباس رضی الله عنهما ان رسول الله صلی الله علیه وسلم کان یعلمهم هٰذا الدعا کما یعلم السورة من القرآن قولوا(اللهم انا نعوذبک من عذاب جهنم ونعوذبک من عذاب القبر ونعوذبک من فتنة المسیح الدجال ونعوذبک من فتنة المحیا والممات.) رواه النسائی(۱)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्ल० सहाबा किराम रज़ि० को निम्नलिखित दुआ कुरआन मजीद की किसी सूरह की तरह सिखाते थे। आप सल्ल० फरमाते कहो "ऐ अल्लाह! हम जहन्नम के अज़ाब से तेरी पनाह मांगते और कब्र के अज़ाब से तेरी पनाह तलब करते हैं और मसीह दज्जाल के फितने से और जिन्दगी व मौत के फितने से तेरी पनाह तलब करते हैं।" इसे नसाई ने रिवायत किया है। (अबवाबुन नोम)

मसला ३४७. जहन्नम की गर्मी से पनाह मांगने की दुआ।

عن عائشة رضی الله عنها قالت قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (اللهم رب جبرائیل ومیکائیل ورب اسرافیل اعوذ بک من حر النار ومن عذاب القبر.) رواه النسائی(۱) (صحیح)

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० यह दुआ मांगते रहते "ऐ अल्लाह! जिब्रील, मीकाइल और इस्राफील के रब! मैं आग की गर्मी और अज़ाबे कब्र से तेरी पनाह मांगता हूं।" इसे नसाई ने रिवायत किया है। (किताबुल इस्तिआज़ा मिन हरन्नार- ३/५०६२)

मसला ३४८. सोने से पहले अल्लाह के अज़ाब से पनाह मांगने की दो दुआएं।

عن حفصة رضی الله عنها ان رسول الله صلی الله علیه وسلم کان اذا اراد ان یرقد وضع یده الیمنٰی تحت خدهٖ ثم یقول (اللهم قنی

Www.IslamicBooks.Website

عذابک یوم تبعث عبادک .) رواہ ابوداؤد (۲) (صحیح)

१. हज़रत जाफर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब सोने का इरादा फरमाते तो दायां हाथ रूखसार के नीचे रखते और ये कलिमात पढ़ते "या अल्लाह! जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा उस दिन मुझे अपने अज़ाब से बचाए रखना।" इसे अबूदाऊद ने रिवायत किया है (अबवाबुन नोम-३/४२१८)

عن ابن عمر رضی الله عنهما ان رسول الله صلی الله علیه وسلم کان یقول اذا اخذ مضجعه (الحمد الله الذی کفانی و آوانی 'واطعمنی وسقانی' والذی من علی فافضل 'والذی اعطانی فاجزل' الحمد لله علیٰ کل حال اللهم رب کل شیء وملیکه واله کل شیء 'اعوذبک من النار) رواہ ابوداؤد (۳) (صحیح)

२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्ल० जब अपने बिस्तर पर तशरीफ ले जाते तो फरमाते "उस अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझे हर मूसिबत से बचाया, मुझे रहने के लिए जगह दी, मुझे खिलाया और पिलाया और उस ज़ात का शुक्र है जिसने मुझ पर एहसान किया तो खूब किया, मुझे अता फरमाया तो खूब अता फरमया, हर हाल में उसका शुक्र ही शुक्र है ऐ अल्लाह! हर चीज़ के पालनहार, हर चीज़ के मालिक हर चीज़ के इलाह, मैं आग से तेरी पनाह तलब करता हूं।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

(अबवाबुन नोम-३/४२२६)

मसला ३४६. नमाज़े तहज्जुद में अल्लाह के अज़ाब से पनाह मांगने की दुआ।

عن عائشة رضی الله عنها قالت فقدت رسول الله صلی الله علیه وسلم لیلة من الفراش فالتمسته فوقعت یدی علیٰ بطن قدمه وهو فی المسجد وهما منصوبتان وهو یقول (اللهم انی اعوذبک

Www.IslamicBooks.Website

برضاک من سخطک وبمعافاتک من عقوبتک واعوذبک منک لا احصی ثناء علیک انت کما اثنیت علٰی نفسک)

رواہ مسلم (۱)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि मैंने एक रात रसूलुल्लाह सल्ल० को बिस्तर से गायब पाया और ढुढने लगी। मेरा हाथ आप सल्ल० के (पांव के) तलवे पर पड़ा जो खड़े हालत में थे उस वक्त रसूलुल्लाह सल्ल० मस्जिद में थे (और सज्दे की हालत में) यह दुआ मांग रहे थे। "ऐ अल्लाह! मैं तेरी रज़ा के वसीले से तेरे गुस्से से पनाह मांगता हूं। तेरी बख्शिश के वसीले से तेरे अज़ाब से पनाह मांगता हूं। और मैं (हर मामले में) तुझ से ही पनाह मांगता हूं। मैं तेरी हम्द व सना करने की ताकत नहीं रखता। तेरी तारीफ वैसी ही है जैसे तूने खुद अपनी तारीफ की।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुस्सलात,बाब)

मसला ३५०. आग के अज़ाब से बचने की निम्नलिखित दुआ कसरत से मांगनी चाहिए।

عن انس رضی اللہ عنہ قال کان اکثر دعاء النبی صلی اللہ علیہ وسلم (اللھم اتنا فی الدنیا حسنۃ وفی الاٰخرۃ حسنۃ وقنا عذاب النار.) متفق علیہ (۲)

हज़रत अनस रज़ि० फरमाते हैं कि नबी अकरम सल्ल० की अकसर दुआ यह होती "या अल्लाह! हमें दुनिया में भलाई प्रदान कर और आखिरत में भी और हमें आग के अज़ाब से बचा ले।" इसे बुखारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़िक्र व दुआ)

मसला ३५१. एक वक्त में कम से कम तीन बार जहन्नम से अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिए।

व्याख्या- हदीस मसला ३४४ के तहत देखें।

Www.IslamicBooks.Website

مَسَائِلُ مُتَفَرِّقَةٌ
विभिन्न मसाइल

मसला ३५२. अल्लाह की रहमत और उसके फ़ज़्ल के बिना जहन्नम के अज़ाब से कोई नहीं बच सकता।

عن ابی هريرة رضی الله عنه ان النبی صلی الله علیه وسلم قال ما من احد (یدخله عمله الجنة) فقیل ولا انت یا رسول الله صلی الله علیه وسلم قال (ولا انا الا ان یتغمدنی ربی برحمته) رواه مسلم (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "कोई व्यक्ति अपने आमाल से जन्नत में नहीं जाएगा।" अर्ज़ किया गया "या रसूलुल्लाह सल्ल० ! क्या आप भी?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "हां मैं भी" या यह कि मेरा रब अपनी रहमत से मुझे ढांप ले।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है (किताब सफतुल मुनाफिकीन)

मसला ३५३. एकेश्वरवादी, मुत्तकी और भले लोगों की गवाही किसी के जन्नती या जहन्नमी होने की एक पहचान है।

عن ابی بکر بن ابی زهير الثقفی رضی الله عنه عن ابيه قال خطبنا رسول الله صلی الله علیه وسلم بالنباوة اوالبناوة (قال والبناو ة من الطائف) قال (يوشک ان تعرفوا اهل الجنة من اهل النار) قالو بم ذاک ؟یا رسول الله صلی الله علیه وسلم !قال (بالثنآء الحسن والثنآء السیء انتم شهدآء الله بعضکم علی بعض)

رواه ابن ماجه(۲) (حسن)

हज़रत अबू बकर बिन अबू जुहैर सकफी रज़ि० अपने बाप से

Www.IslamicBooks.Website

रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने हमें तायफ के करीब एक जगह नबावा (या बनावा) में खिताब फरमाया और इर्शाद फरमाया "बहुत जल्द ऐसा ज़माना आने वाला है कि तुम जन्नती या जहन्नमी पहचान लोगे।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल० वह कैसे?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "(लोगों की) अच्छी या बुरी तारीफ के ज़रीए तुम लोग एक दूसरे के लिए अल्लाह के गवाह हो।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

(किताबुज़्ज़ुहद, बाद सनाउल हसन- २/२४००)

عن ابن عباس رضی الله عنهما قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (اهل الجنة من ملاء الله اذنیه من ثناء الناس خیر وهو یسمع واهل النار من ملاء اذنیه من ثناء الناس شرا وهو یسمع) رواه ابن ماجه (۱) (صحیح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लह सल्ल० ने फरमाया "जन्नती वह है जिसके कान लोगों से अपनी तारीफ सनते सुनते भर जाएं और जहन्नमी वह है जिसके कान लोगों से अपनी बुराई सुनते सुनत भर जाएं।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।
(किताबुज़्ज़ुहद, बाद सनाउल हसन- २/३४०३)

मसला ३५४. सख्त गर्मी और सख्त सर्दी का मौसम जहन्नम के दो सांसों से पैदा होता है गर्म सांस जहन्नम के गर्म हिस्से से और सर्द सांस जहन्नम के सर्द हिस्से ज़महरीरा से।

व्याख्या- हदीस मसला ४६ के तहत देखें।

मसला २५५. मोमिन के लिए बुखार जहन्नम का हिस्सा है।

عن عائشة رضی الله عنها قالت قال رسول الله صلی الله علیه وسلم (الحمٰی حظ کل مؤمن من النار) رواه البزار (۲) (صحیح)

Www.IslamicBooks.Website

हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लह सल्ल० ने फरमाया "बुखार हर मोमिन का जहन्नम का हिस्सा है।" इसे बज़्ज़ार ने रिवायत किया है। (सही जामिउस्सगीर, लिल अलबानी, जुज़ सालिस, हदीस ३१८२)

मसला ३५६. कुछ कलिमा पढ़ने वाले मुसलमानों का सारा जिस्म आग जला डालेगी।

عن جابر رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم (یعذب ناس من اھل التوحید فی النار حتٰی یکونوا فیھا حمما ثم تدرکھم الرحمۃ فیخرجون ویطرحون علی ابواب الجنۃ قال فیرش علیھم اھل الجنۃ المآء فینبتون کما ینبت الغثآء فی حمالۃ السبیل' ثم یدخلون الجنۃ) رواہ الترمذی (۱) (صحیح)

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "अहले तौहीद में से (कुछ) लोग आग का अज़ाब दिए जाएंगे याहं तक कि वे आग में (जलकर) कोयला बन जाएंगे फिर उनहें रहमते इलाही का फैज़ हासिल होगा और वे जहन्नम से निकाले जाएंगे जन्नत के दरवाज़े पर लाकर बैठाए जाएंगे। अहले जन्नत उन पर पानी डालेंगे और वे (नये सिरे से) यूं उठ खड़े होंगे जैसे कोई दाना सैलाब (के पानी) से फौरन निकल आता है फिर वे जन्नत मे दाखिल किए जाएंगे।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (सफतुल अबवाब जहन्नम, बाब माजा-२/२०६४)

मसला ३५७. समुद्र ही जहन्नम की जगह है।

عن یعلٰی رضی اللہ عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم (ان البحر ھو جھنم) رواہ الحاکم (۲)

हज़रत याला रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया "बेशक समुद्र ही जहन्नम की जगह है।" इसे हाकिम ने रिवायत किया है। (किताबुल अहवाल, हदीस ८७)

Www.IslamicBooks.Website

व्याख्या- कुरआन मजीद में अल्लाह अताला का इर्शाद मुबारक है "और जब समुद्र आग से भड़का दिए जाएंगे" (सूरह तकवीरः ६) दूसरी जगह इर्शाद बारी तआला है "और जब समुद्र फाड़ दिए जाएंगे" (सूरह इंफितारः ३) दोनों आयतों से यह मालूम होता है कि कयामत के दिन तमाम समुद्र एक जगह इकट्ठा कर दिए जाएंगे और पानी अपने असल पदार्थ यानी दो हिस्सा हाइड्रोजन और एक हिस्सा ऑक्सीजन में बदल दिया जाएगा जिसकी वजह से आग भड़क उठेगी। याद रहे कि हाइड्रोजन स्वयं आग से भड़कने वाली गेस है जबकि ऑक्सीजन आग भड़काने में मदद देती है। जन्नत और जहन्नम इस वक्त दोनों मौजूद हैं अतः रसूले अकरम सल्ल० के इर्शाद का मतलब यह हो सकता है कि कयामत के दिन जहन्नम को भड़कते हुए समुद्र के ऊपर रख दिया जाएगा ताकि जहन्नम की आग मज़ीद भड़के और फिर वही समुद्र की जगह जहन्नम की मुस्तकिल जगह करार पाए।

Www.IslamicBooks.Website

हमारी दावत यह है कि !

१. रसूले अकरम सल्ल० ने उम्मत को जिस बात का हुक्म दिया है या जिसे स्वयं किया है या जिसे करने की इजाज़त दी है उसे ठीक उसी तरह कीजिए और जिस बात से आप सल्ल० ने मना फरमाया है उससे रूक जाइए इर्शाद बारी तआला है:

وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانتَهُوا • (7:59)

"जो कुछ रसूल तुम्हें दे वह ले लो और जिस चीज़ से मना करें उससे रूक जाओ।" (सूरह हश्रः ७)

२. रसूले अकरम सल्ल० ने दीन के मामले में जो काम पाक जीवन में नहीं किया वह काम अपनी मर्ज़ी से कर के अल्लाह के रसूल सल्ल० से आगे बढ़ने की हिम्मत न कीजिए। इर्शाद बारी तआला है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ • (1:49)

"ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो।" (सूरह हुजरातः १)

३. रसूले अकरम सल्ल० का आज्ञापालन और अनुसरण के मुकाबले में किसी दूसरे का आज्ञापालन और अनुसरण करके अपने कर्म बरबाद न कीजिए। इर्शाद बारी तआला है:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ • (33:47)

"ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो! अल्लाह की इताअत करो, रसूल की इताअत करो और (किसी दूसरे इताअत करके) अपने कर्म बरबाद न करो।" (सूरह मुहम्मदः ३३)

जो हज़रात हमारी इस दावत से सहमत हों
हम उनसे सहयोग की विनती करते हैं!

☆☆☆

Www.IslamicBooks.Website

मन्हज-ए- सलफ सालेहीन के फरोग़ के लिये कोशाँ

हमारी अन्य अहम खूबसूरत और मालूमाती पुस्तकें

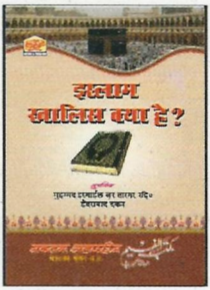

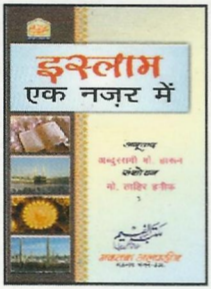

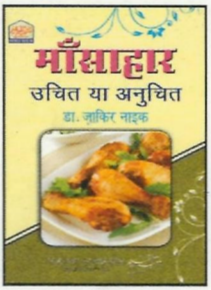

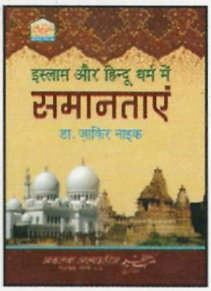

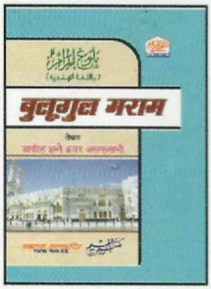

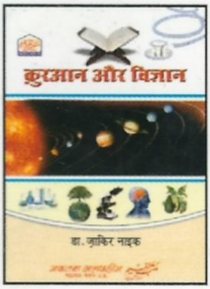

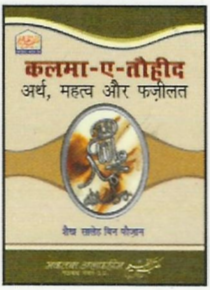

MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com
WWW.faheembooks.com

₹ 130/-

Www.IslamicBooks.Website